स्वर्गवासी साधुचरित श्रीमान् डालचन्दजी सिंघी



बाबू श्री बहादुर सिंहजी सिंघीके पुण्यश्लोक पिता

जन्म—वि सं. १९२१, मार्ग वदि ६ 卐 **स्वर्गवास**—वि सं. १९८४, पोष सुदि ६

दानशील - साहित्यरसिक - संस्कृतिप्रिय

स्व० बाबू श्री बहादुर सिंहजी सिंघी



अजीमगंज-कलकत्ता

जन्म ता. २८-६-१८८५] [मृत्यु ता. ७-७-१९४४

सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[ग्रन्थाङ्क ४८]

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा



4210

SINGHI JAIN SERIES

[NUMBER 48]

NAMMAYĀ SUNDARĪ KAHĀ

[A PRAKRIT WORK]

OF

MAHENDRA SŪRI

कलकत्तानिवासी

साधुचरित-श्रेष्ठिवर्य **श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी** पुण्यस्मृतिनिमित्त

प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथात्मक–इत्यादि विविधविषयगुम्फित प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, -राजस्थानी आदि नाना भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशिनी सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील-साहित्यरसिक-संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी



प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिनविजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररि डायरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

प्रकाशक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

जयन्तकृष्ण ह. दवे, ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, चौपाटी रोड, बम्बई, नं. ७, द्वारा प्रकाशित

तथा – लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी, निर्णयसागर प्रेस, २६–२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई, नं. २, द्वारा मुद्रित

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा

[देवचन्द्रसूरिकृत संक्षिप्त प्राकृत कथा, जिनप्रभसूरिकृत अपभ्रंशभाषामय नमयासुन्दरी सन्धि, तथा मेरुसुन्दरकृत गूर्जरभाषागद्यमय बालावबोधसमन्वित]



संपादनकर्त्री

कुमारी प्रतिभा त्रिवेदी, एम्. ए.

प्राध्यापिका भा. वि. भवन कोलेज, बम्बई



प्रकाशनकर्ता

सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई



विक्रमाब्द २०१६] प्रथमावृत्ति – पंचशतप्रति [१९६० खिस्ताब्द

ग्रन्थांक ४८] [मूल्य रु. ४/४०

किंचित् प्रास्ताविक

महेन्द्रसूरि रचित 'नम्मयासुन्दरी कहा' (सं० नर्मदासुन्दरी कथा)नी मूळ प्रति, मने सन् १९४२-४३ मां जैसलमेरना ज्ञानभंडारोनुं अवलोकन अने संशोधन करती वखते दृष्टिगोचर थई हती। कागळ पर लखेली ए प्रति कोई ५०० वर्ष जेटली प्राचीन जणाती हती। में ते वखते तेना परथी प्रतिलिपि करावी लीधी। सिंघी जैन ग्रन्थमालामां विशिष्ट रचनावाळी प्राकृत कृतिओ प्रकट करवानो जे उपक्रम में कर्यो हतो, तेमां आ कथाने पण प्रकट करी देवानो मारो विचार थयो अने तदनुसार प्रेस माटे कोपी तैयार करवा मांडी।

ए दरम्यान, विदुषी कुमारी प्रतिभा त्रिवेदी एम्. ए. ए, मारा मार्गदर्शन नीचे, बम्बई युनिवर्सिटीमां पीएच्. डी. माटे पोतानु रजीस्ट्रेशन नोंधाव्यु अने भारतीय विद्याभवनमां प्रविष्ट थई अध्ययन करवानी इच्छा व्यक्त करी। में ए बहेनने पोताना थिसीझ माटे प्रस्तुत कथानुं विशिष्ट परीक्षणात्मक संपादन करवानुं कार्य सूचव्युं, जे एमणे बहु उत्साहथी स्वीकार्युं अने मारा मार्गदर्शन प्रमाणे, एमणे बहु ज खंतथी पोतानुं अध्ययन चालु कर्युं।

जूना हस्तलिखित ग्रन्थोनी लिपि वांचवा-उकेलवामां अने शास्त्रीय संपादननी दृष्टिए प्राचीन ग्रन्थोना पाठो विगेरेनी अशुद्धि-शुद्धि आदि माटे केवी दृष्टिए काम लेवुं विगरे विषयमां, ए बहेने सारो श्रम उठाव्यो अने तेमां योग्य प्रावीण्य मेळव्युं।

प्रस्तुत कथानी मूळ वाचना बराबर तैयार थई गया पछी में एने प्रेसमां छापवा आपी दीधी अने धीरे धीरे एनुं मुद्रण कार्य थतु रह्युं। बीजी बाजू कुमारी त्रिवेदीए, एना अंगेना परीक्षणात्मक विवेचननी संकलना करवानुं काम चालु राख्युं।

केटलोक समय व्यतीत थतां एमनी शारीरिक स्थिति जरा अस्वस्थताजनक रहेवा लागी अने तेथी एमनुं अध्ययनात्मक कार्य अटकी पड्युं। ए दरम्यान मारो पण बम्बईनो निवास अस्थिर बन्यो अने हुं राजस्थानननी नूतन 'राजधानी जयपुरमां, मारा निर्देशन नीचे' स्थापवामां आवेल 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर'नी रचना अने व्यवस्था माटे वारंवार त्यां जवा-आववामां व्यस्त रहेवा लाग्यो। वच्चे वच्चे, ज्यारे ज्यारे, बम्बई आववानो प्रसंग आवतो त्यारे ए बहेनने पोताना थिसीझनुं काम पूर्ण करवा सूचना करतो रहेतो।

परंतु समयनुं व्यवधान थई जवाथी तेम ज ते पछी भारतीय विद्याभवनमां संस्कृत भाषाना अध्यापननुं कार्य पण स्वीकारी लेवाथी, एमने पोताना थिसीझनुं कार्य हाल तरत पूर्ण करवा जेटलो अवकाश अने उत्साह बंने न जणावाने लीधे, में आ कथाने अत्यारे आम मूळ रूपे ज प्रकट करी देवानुं उचित धार्युं छे।

जो ए बहेन नजीकना भविष्यमां पोतानुं थीसीझ पूर्ण करशे तो ते, एना परिशिष्ट रूपे बीजा भागमां प्रकट करवानी व्यवस्था थशे.

आ पुस्तकमां, सर्वप्रथम महेन्द्रसूरिरचित प्राकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा' मुद्रित करवामां आवी छे। एनी कुल ११६७ गाथा छे। वच्चे वच्चे केटलोक गद्यभाग पण छे। तेथी एकंदर एनो ग्रन्थाग्र परिमाण १७५० श्लोकप्रमाण छे—एम एनी मूळ प्रतिना अन्ते ज लखेलुं मळे छे। एनी रचना महेन्द्रसूरि नामना आचार्ये विक्रम संवत् ११८७ मां करेली छे। महेन्द्रसूरिए करेला उल्लेख प्रमाणे मूळ ए कथा एमणे शान्तिसूरि नामना आचार्यना मुखथी सांभळी हती।

महेन्द्रसूरिनी आ रचना बहु ज सरल, प्रासादिक अने सुबोधात्मक छे। कथानी घटना आबाल जनने हृदयंगम थाय तेवी सरस रीते कहेवामां आवी छे। वच्चे वच्चे लोकोक्तिओ अने सुभाषितात्मक वचनोनी पण छटा आपवामां आवी छे। प्राकृत भाषाना अभ्यासिओ माटे आ एक सुन्दर अध्ययनने योग्य रचना छे।

ए मुख्य कथाना परिशिष्ट रूपे, एना पछी श्रीदेवचन्द्र सूरिनी रचेली पण एक कथा आपवामां आवी छे। देवचन्द्र सूरि ते सुप्रसिद्ध कलिकालसर्वज्ञ गणाता आचार्य हेमचन्द्रना गुरु छे। तेमणे पोताना पूर्वगुरु, आचार्य प्रद्युम्नसूरिरचित 'मूलशुद्धि-प्रकरण' नामना प्राकृत ग्रन्थ उपर विस्तृत टीकानी रचना करी छे। ए टीकामां उदाहरण रूपे, अनेक प्राचीन कथाओनी संकलना करी छे, तेमां प्रस्तुत 'नम्मयासुन्दरी' अर्थात् नर्मदासुन्दरीनी कथा पण, प्रसंगवश, संक्षेपमां आलेखी छे। देवचन्द्र सूरिनी आ रचना लगभग २५० जेटली गाथामां ज पूरी थाय छे। पण कथागत मूळ वस्तुनुं परिज्ञान मेळववा माटे आ रचना पण बहु उपयोगी छे। खरी रीते महेन्द्रसूरि वाळी कथानो मूला-धार आ देवचन्द्र सूरिनी ज रचना होवानो संभव छे। देवचन्द्र सूरिना अन्तिम उल्लेख प्रमाणे नर्मदासुन्दरीनी मूळ कथा वसुदेवहिंडी नामना प्राचीन कथाग्रन्थमां गूंथेली छे अने तेना ज आधारे देवचन्द्र सूरिए पोतानी रचना करेली छे।

देवचन्द्र सूरिनी कृति पछी जिनप्रभ सूरिए अपभ्रंश भाषामां रचेली 'नमयासुन्दरि-सन्धि' नामनी कृति मुद्रित करवामा आवी छे। आ कृति अपभ्रंश भाषाना अभ्यासनी दृष्टिए तेम ज नर्मदासुन्दरीकथागत वस्तुनुं तुलनात्मक अध्ययन करवानी दृष्टिए उपयोगी थाय तेम छे।

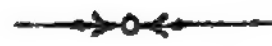
ए ज रीते, ते पछी मेरुसुन्दर गणिए प्राचीन गुजराती गद्यमां लखेली 'नर्मदासुन्दरी कथा' पण मुद्रित करवामां आवी छे। मेरुसुन्दर गणिए 'शीलोपदेशमाला' नामना प्राचीन प्राकृत ग्रन्थ उपर, प्राचीन गुजराती भाषामां बहु ज विस्तृत बालावबोध नामनुं विवरण लख्युं छे, जेमां आवी अनेकानेक प्राचीन कथाओ आलेखित करवामा आवी छे। प्राकृत मूल कथाना अध्ययन अने विवेचनमा उपयोगी होवाथी आ रचना पण अहीं संकलित करवामां आवी छे।

एम, २ प्राकृत रचना, १ अपभ्रंश भाषारचना, अने १ प्राचीन गुजराती गद्य रचना—मळीने ४ कृतिओनो आ सुन्दर संग्रह 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला'ना ४८ मा मणिना

रूपमां अभ्यासिओना करकमलमां उपस्थित करवामां आवे छे। आशा छे के ग्रन्थमालाना अन्यान्य ग्रन्थरत्नोनी माफक आ संग्रह पण आदरणीय थशे ज।

अन्तमां विदुषी कुमारी प्रतिभा त्रिवेदिए प्रस्तुत संग्रहना संपादन माटे जे परिश्रम उठाव्यो छे ते माटे एमने मारा हार्दिक अभिनन्दन आपुं छुं अने साथे शुभाशीर्वाद पण आपुं छुं के ए पोतानुं थिसीस पूर्ण करी तेने प्रकट करवा जेटलुं स्वास्थ्य अने समुत्साह प्राप्त करे।

भारतीय विद्याभवन बम्बई
—[ता. ५·३·६०]— —मुनि जिनविजय



विषयानुक्रम

१. महिंदसूरिरइया नम्मयासुन्दरी कहा



महेन्द्रसूरीकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा की प्राचीन प्रतिका अन्तिम पत्र

सिरिमहिंदसूरिकहिया

नम्मयासुंदरीकहा

[पत्थावणा]

†जयइ भुवणप्पईवो[1] सवन्नू जस्स नाणजुन्हाए ।
लक्खिज्जइ भवभवणे कालत्तयसंभवं वत्थुं[2] ॥ १
अविरयनमंतसुरवरमणिरयणकिरीडकोडिकोडीहिं ।
मसिणीकयपयवीढा जयंति तित्थेसरा सव्वे ॥ २
उवसग्गपरीसहसत्तुवाहिणी वाहिणी तिहुअणस्स ।
एगेण जेण विजिया[3] सो जयउ जिणो महावीरो ॥ ३
निम्महियमयणकरिणो कुमयकुरंगप्पयारनिट्ठवणा ।
सव्वे मुणिवरसीहा हुंति सहाया सया मज्झ ॥ ४
काउं सरस्सईए सरणं हरणं समत्थविग्घाणं ।
वोच्छामि नम्मयासुंदरीएँ चरियं मणभिरामं ॥ ५
भणियं चिय फुडमेयं विसुद्धबुद्धीएँ पुव्वपुरिसेहिं ।
तह वि य गुणाणुराया ममावि भणणुज्जमो जाओ ॥ ६
बहुसो वि भन्नमाणं सुणिज्जमाणं पि धम्मियजणस्स ।
कन्नरसायणमेयं एगंतसुहावहं होइ ॥ ७
गुणवन्नणेण उत्तमजणस्स झिज्झंति असुहकम्माइं ।
उवसमइ दाहमंगे लग्गंतो चंदकिरणोहो ॥ ८
सुयपुव्वं पि सुणिज्जउ सुहयरमेयं महासईचरियं ।
होइ च्चिय विसहरणो मंतो कन्नेसु पविसंतो ॥ ९
उत्तमकुलप्पसूया निम्मलसम्मत्तनिच्चलसुसीला ।
अणुचिण्ण[4]समणधम्मा न वन्नणिज्जा कह णु एसा ॥ १०
ता होऊण पसन्ना सभावमज्झत्थमाणसा सुयणा ।
निसुणेह पावहरणं चरियमिणं मे भणिज्जंतं ॥ ११
जह जाया उव्वूढा चत्ता य समुद्दमज्झदीवम्मि ।
चुल्लपिउणो य मिलिया पुणो वि चुक्का जहा तत्तो ॥ १२

† The Ms. begins with ॥ ६० ॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

Wherever the text is corrected the original readings of the Ms. are noted in the foot-note:— १ °पईवो. २ वत्थं. ३ विजया. ४ अणुचिन्न°.

अकलंकियधम्मगुणा बब्बरदीवम्मि जह चिरं वुत्था ।
मोयाविया य पिउणो मित्तेण गया य कुलगेहं ॥ १३
सोऊण भवं पुरिमं सुहत्थिसूरिस्स पायमूलम्मि ।
निक्खंता संपत्ता कमेण तह देवलोगम्मि ॥ १४
सयलं कहंगमेयं वत्तव्वं इत्थ पत्थुयपबंधे ।
संखेव-वित्थरेणं पडुक्खरं तं निसामेह ॥ १५

*

[महेसरदत्तमाया-रिसिदत्ताजम्मवण्णणा]

अत्थि सरिसेलकाणणगामागरनगरनिवहरमणीओ ।
नामेण मज्झदेसो महिमंडलमं [प. १A] डणो देसो ॥ १६

जत्थ –

गामा नगरायंते नगराणि यं देवलोगभूयाणि ।
दट्ठूण व संतोसा लच्छी सयमेव अवयरिया ॥ १७
आवासिएहिँ निच्चं पए पए सत्थवाहसत्थेहिँ ।
एयं विसममरन्नं एयं ति न नज्जइ विसेसो ॥ १८
तत्थऽत्थि पुरं पयडं धणधन्नसमिद्धलोयसंपुन्नं ।
नामेण वड्ढमाणं पवड्ढमाणं जणधणेहिँ ॥ १९
जिणमंदिरेसु जम्मी अणवरयपयट्टगीयनट्टेसु ।
पत्तो पिच्छइ लोओ तणं व भावेइ सुरलोयं ॥ २०
सालो जत्थ विसालो सुयणो व समुन्नओ परागम्मो ।
दीसंतो दूराओ भयंकरो वेरिवग्गस्स ॥ २१
निसिपडिबिंबियतारा नीलायणवज्जियं च दिवसम्मि ।
गयणंगणं[1] व रेहइ समंतओ खाइया जस्स ॥ २२
कयधम्म[2]जणपसाया[3] पासाया गयणमणु[4]गया जत्थ ।
रेहंति सुरघरा इव अच्छरसारिच्छपुत्तलिया ॥ २३
सुयणो सरलसहावो परोवयारी कयत्थओ[5] धीरो ।
निवसइ जत्थ सुसीलो सज्जणलोओ सया मुइओ[6] ॥ २४
ससिनिम्मलसीलाओ लज्जाविन्नाणविणयकलियाओ ।
जत्थ वरअंगणाओ[7] घरंगणाइँ[8] वि न पासंति[9] ॥ २५

१ ग. २ °माणं माणं पव्वट्ठजण°. ३ गयणगणं. ४ °धम्मा°. ५ °प्पसाया.
६ °गमुणु°. ७ °यत्थुओ. ८ सुहओ. ९ वरंगणाओ. १० घरगणाइं. ११ पसंति.

तं नत्थि जं न दीसइ तम्मि पुरे वत्थु सुंदरसहावं।
संपुन्नवन्नओ तो कह कीरइ तस्स विउसेहिं॥ २६

अवि य—

दट्ठूण अ[न]न्नसमं नियसिरिं हरिसमज्झमत्तं व।
नच्चइ व निच्चं पवणुद्धुयधयवडकरेहिं॥ २७

तं पुण पालेइ तया असोगसिरिनसुओ कुणालसुओ।
मोरियवंसपसूओ विक्खाओ संपई राया॥ २८

पडिवन्नो जिणधम्मो जेण सुहत्थिस्स पायमूलम्मि।
संबोहिओ य पायं भरहद्धे[1]ऽणारियजणो वि॥ २९

काराविया य पुहवी अणेगजिणभवणमंडिया जेण।
जिणमयबहुमाणाओ अकरभरा सावया य कया॥ ३०

तत्थेव पुरे निवसइ सिट्ठी नामेण उसभदत्तु त्ति।
जीवाइतत्तवेई निच्चलचित्तो जिणमयम्मि॥ ३१

जिणधम्मे धीरमई वीरमई नाम गेहिणी तस्स।
कुंदेंदु[2]जलसीला पिया हिया बंधुवग्गस्स॥ ३२

तेसिं पि दुवे पुत्ता[3] कमेण जाया गुणेहिं संजुत्ता।
कुलन[प. १ B]हयलससि-रविणो सहदेवो वीरदासो य॥ ३३

एगा य वरा कन्ना पहसियरइलच्छिरूवलावन्ना।
गुणसयभूसियगत्ता जाया नामेण रिसिदत्ता[4]॥ ३४

उत्तमकुलुब्भवाणं कन्नाणं रूवकंतिकलियाणं।
सहदेव-वीरदासा पिउणा गिन्हाविया पाणी॥ ३५

एवं[5] च तेसिं सव्वेसिं कुलकमागयजिणधम्माणुपालणरयाणं इह-परलोयविरुद्धकिरियाविरयाणं जिणमुणिपूयासक्कारकरणुज्जयाणं परमयपयंडपासंडिवाइदुज्जयाणं विसुद्धववहारोवज्जियपहाणपसिद्धीणं पुव्वभवोवज्जियपुन्नाणुभावपवड्डमाणधण[6]समिद्धीणं सुहेण वच्चंति दीहा। इत्थंतरे रिसिदत्ता संपत्ता तरुणजणमणमयकोवणं जोव्वणं—जायाइं तसियकुरंगिलोअणसरिच्छाइं चंचलाइं लोयणाइं, पाउब्भूओ पओहरुग्गमो, खामीभूओ मज्झभागो पसाहिओ य तीहिं वलयरेहाहिं, समुट्ठिया य नाभिपउमस्स नालायमाणा रोमराई,

१ भरहद्धे°. २ कुंदेदु°. ३ पत्ता. ४ सिरिदत्ता. ५ एवं. ६ °माणधण°.

पवित्थरियं नियंबफलयं[1], अलंकियाओ जंघाओ हंसगमणलीलाए। किं बहुणा? उक्कंठियाए व सव्वंगमालिंगिया एसा जोव्वणलच्छीए।

तओ—

जत्तो जत्तो वच्चइ दंसणतण्हालुया नयरतरुणी[3]।
तत्तो घोलिरमालइलयं व फुल्लंधुया जंति॥ ३६
विहवमयाओ केई रूवमयाओ बहुत्तंगवाओ[4]।
जायंति तं अणेगे कयविणया उसभदत्तस्स॥ ३७
पडिभणइ उसभदत्तो—'तुब्भे सव्वे वि सुंदरा चेव।
किंतु[5] मम एस नियमो समाणधम्मस्स दायव्वा॥ ३८
जं विसरिसधम्माणं न होइ परिणामसुंदरो नेहो।
नेहं विणा विवाहो आजम्मं कुणइ परिदाहं॥' ३९
जो जो वणेइ[6] कन्नं तं तं इब्भो निवारए एवं।
नँ[7] य कोइ नियं धम्मं कन्नाकज्जे परिच्चयइ॥ ४०

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्तोवरि रागाणुभावो]

अन्नया समागओ तत्थ कूवचंद्राभिहाण[नयर]वासी महेसरधम्माणुरत्तचित्तो महग्घभंडभरियजाणवाहणेहिं रुद्ददत्तो सत्थवाहपुत्तो। आवासिओ समाणगुणधम्मस्स कुबेरदत्तस्स मित्तस्स भंडागारसालासु। तया य [प २A] तम्मि नयरे लोइओ कोइ महामहो वट्टइ। तत्थ य सविसेसुज्जलभूसणनेवत्थो सव्वलोओ समंतओ संचरइ। कोऊहललोयणलोलयाए रुद्ददत्त-कुबेरदत्ता एगत्थ[8] हट्टे निविट्ठा नायरजणचिट्ठियाइं निहालिउं पवत्ता।

अवि य—

कत्थइ नच्चंति नडा कत्थइ कुद्दंति रासयं तरुणा।
गायंति चच्चरीओ खिल्लावियविविहकरणेहिं[9]॥ ४१
तह वट्टंते रंगे पिक्खणवक्खित्तमाणसा[10] लोया।
अन्नोन्नपेल्लणेणं इओ तओ तत्थ वियरंति॥ ४२

एत्थंतरे मणिरयणकिरणुज्जोइयभूरिभूसणाडंबरा सुचंगदेवंगवसणसुसन्नेवच्छा समाणवयवेसाहिं[12] महियाहिं किंकरीहिं य परिवुडा[13] समागया तमुद्देसं रिसिदत्ता। सा य तम्मि जणसंवाहे पलोयणोगासमलहमाणी समारूढा

---

१ नियंनियवफलयं. २ अकलं°. ३ °तरुणो. ४ बहूत्त°. ५ कुंतु. ६ धणेइ. ७ नि. ८ एगहत्थ. ९ °ह्लाविय°. १० °वक्खेत्त°. ११ सुयंग°. १२ समाणं°. १३ परिवुडा.

पचासन्नहट्टोवरिं, निच्चलनयणा पेच्छणाइ पलोइउं पवत्ता । तं दट्ठूण विम्हिय-हियएण भणियं रुद्ददत्तेण – 'अहो छणपेच्छणयाणं वयंस! रम्मया, जेण गयणंगणागयाउ अच्छराओ नियच्छंति ।' तओ हसिऊण भणियं कुबेरद-त्तेण – 'किं दिट्ठाओ तए कहिंचि अच्छराओ जेण पच्चभियाणसि ।' इयरो भणइ – 'न दिट्ठाओ, किंतु अत्थि जणप्पवाओ जहा "ता[ओ] अणमिसनयणाओ हवंति" । अणमिसनयणाओ एयाओ समासन्नहट्टोवरिं चिट्ठंति, तेण भणामि अच्छराओ । न एरिसं रूवं माणुसीए संभवइ ।' पुणो पवुत्तं कुबेरदत्तेण –

'गामिल्लओ कलिज्जसि अदिट्ठकल्लाणओ य तं मित्त! ।
जो माणुसि[1]-देवीणं रूवविसेसं न लक्खेसि[2] ॥ ४३
एसा इब्भस्स सुया नयरपहाणस्स उसभदत्तस्स ।
जा देवीसंकप्पं संपायइ माणसे तुज्झ ॥ ४४
एसा य विसालच्छी लच्छी व सुदुल्लहा अहन्नाणं ।
जम्हा न चेव लब्भइ कुलेण रूवेण विहवेण ॥ ४५
जो जिणसासणभत्तो रंजइ चित्तं इमीइ जणयस्स ।
सो सधणो अधणो वा लहइ इमं नन्नहा कहवि ॥ ४६
वत्थेहिं भूसणेहि य कीरइ न गुणो इमीएँ देहस्स ।
भुवणं उज्जोयंती छाइज्जइ केवलं कंती ॥' ४७
एयं निसामयंतो तं चेव पुणो पुणो पलोयंतो ।
सहस त्ति रुद्ददत्तो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥ ४८
परिभाविउं पवत्तो 'को णु उवाओ इमीएँ ला[प २B]भम्मि? ।
न हु धारेउं तीरइ जीयं विरहम्मि[3] एयाए ॥ ४९
घेत्तुं बला[4] न तीरइ एसा भडचडयरेण महया वि ।
सावगजणस्स भत्ते संपइरायम्मि जीवंते ॥ ५०
जइ मग्गिऊण पुव्वं अलहंतो सावयत्तणं काहं ।
तो डंभिउ त्ति काउं नियमा इच्छं न[5] साहिस्सं[6] ॥' ५१

[रुद्ददत्तस्स कवडसावगधम्मांगीकरणं]

एवमणेगहा परिचिंतिऊण नत्थि उवायांतरमन्नं[7] ति कयनिच्छओ गओ धम्मदेवसूरिसमीवं । कयप्पणामेण पुच्छिओ धम्मं । साहिओ तेहिं साहुधम्मो । पसंसिओ तेण, भणियं च – 'अहो दुक्करकारया भगवंतो जेहिं एवंविहो कायर-

---

1 माणुस°. 2 लक्खंसि. 3 विहरंमि. 4 मुक्का. 5 त. 6 साहिस्स. 7 उवायंतर°.

जणहिययउकंपकारओ दुरणुचरो[1] अंगीकओ समणधम्मो। कया पुण होही सो अवसरो जया अम्हे वि एरिसं धम्ममणुचरिस्सामो? संपयं पुण करेह मे गिहत्थोचियधम्मोवएसेणाणुग्गहो' त्ति । साहूहिं भणियं –

'जिणपूया मुणिभत्ती जीवाइपयत्थ[2]सद्दहाणं च ।
पालणमणुव्वयाणं वाया(सावय ?) गहिधम्मतत्तमिणं ॥' ५२

सोउं सवित्थरमिणं दंसियसंवेगसाहसो – 'भंते ! ।
लद्धं जं लहियव्वं पत्तं मे अज्ज जम्मफलं ॥ ५३

माया[3] पिया य तुब्भे बाढं परमोवयारिणो मज्झ ।
जेहिं इमो अइदुलहो[4] मोक्खपहो दंसिओ मज्झ ॥' ५४

तमेवं जाणिऊण संविग्गं, सिक्खावियं साहूहिं देवगुरुवंदणविहाणं, पच्चक्खाणपुव्वं सयलं सावयसमायारं । तओ सो सविसेसदंसियसंवेगो[5] विसिट्ठयरदेवपूयाइकिच्चं तहा काउमारद्धो जहा सव्वेसिं सावयाणं पहाणबहुमाणभायणं[6] संवुत्तो ।

अवि य –

'धन्नो महाणुभावो नूणं आसन्नसिद्धिगामि त्ति ।
जस्सेरिसो दुरप्पो (उदग्गो ?) समुज्जमो धम्मकिरियासु ॥' ५५

जणमणजणियच्छेरा उदारया सुट्ठु दाणधम्मम्मि ।
जिणसंघपूयणा[7]इसु धणं तणाओऽवमं गणइ ॥ ५६

एवं पत्तपसंसो सगोरवं सावएहि दीसंतो ।
सो रुद्ददत्तसड्ढो जाओ सुवियक्खणो धम्मे ॥ ५७

पव्वेसु सयलसंघं पूयइ वत्थाइएहिं वत्थूहिं ।
पडिलाभेइ सुविहिए दिणे दिणे पत्तभरणेण ॥ ५८

जिणसाहुसावयाणं चरियाइं विम्हिओ निसामेइ ।
सिंगारकहा[8]सु पुणो न देइ कन्नं खणद्धं पि ॥ ५९

अवि पाविज्जइ खलियं सुसंजयाणं सुसावयाणं पि ।
निउणेहिं पंडिएहिं[9] वि न तस्स मायापहाणस्स ॥ ६०

एवमाराहियइब्भपमुहसावयहिययस्स रुद्ददत्तस्स वोलिया गिम्ह [प. ३ A] पाउसा । समागओ निप्पन्नसयलसस्सासासियासेसकासयजणो वियसियकमलसंडमंडियमहिमंडलो पफुल्लमल्लियामालईपमुहपसत्थकुसुमुज्जलुज्जाणमणोहरो सर-

---

१ दुरणुचारो. २ °पइत्थ°. ३ मायो. ४ °दुलहो. ५ सविसेसविसेसदं°. ६ °भावणं. ७ °पूइणा°. ८ °कहास. ९ पंडिएहिं.

यसमओ । तमालोइऊण पुच्छिओ रुद्ददत्तेण उसभदत्तो– 'समागओ मम जणयाएसो । तुम्हाणुन्नाए गच्छामि संपयं सट्ठाणं ।' इब्भेण भणियं– 'जणयसमीवं[3] पट्ठियस्स को विग्घं करेइ ? तहा वि अम्ह धम्मे चेत्ता-ऽऽसोएसु चेइयभवणेसु समब्भुयभूयाओ[4] अट्ठाहियामहिमाओ कीरंति । ताओ[5] ताव पेच्छाहि, तओ जहिच्छमणुचेट्ठेज्जासि ।' तेण भणियं– 'जमाइसह । एअमाइसंतेहिं[6] भवंतेहिं कओ महंतो ममाणुग्गहो । कहमन्नहा अम्हारिसाणमेरिसमहूसवदंसणं ति ।

धन्नो धन्नयरो हं साहम्मियसीह ! अज्ज मह तुमए ।
जं भवणनाहमहिमा निवेइया धम्मतिसियस्स ॥ ६१
जइ कहवि न साहिंतो गमणाभिप्पायमप्पणो[7] तुज्झ ।
मन्ने कल्लाणाणं अहो अहं वंचिओ होंतो ॥ ६२
सा सा पभवइ बुद्धी हुंति सहाया वि तारिसा नूणं ।
जारिसया संपत्ती उवट्ठिया होइ पुरिसस्स ॥' ६३

इच्चाइणा[8] कन्नसुहावहेण वयणविन्नासेणोसभदत्तस्स हिययमाणंदिऊण अच्छिउं पवत्तो[9] रुद्ददत्तो जाव अट्ठाहियामहिमा संपत्ता ।

तत्थ य ता पढमं चिय उक्कंठियमाणसेहिँ सव्वेहिं ।
पउणीकयं समग्गं जिणिंद[10]भवणं तुरंतेहिँ ॥ ६४
पढमं जिणबिंबाइं विहिणा विमलीकयाइँ सयलाइं ।
पवरेहिँ भूसणेहिँ पसाहियाइं[11] जहाजोगं[12] ॥ ६५
ससहरपंडरकोड्डं बहुवन्नविचित्तचित्तरमणिज्जं ।
मणितारियाभिरामं पडिलंबिरमोत्तिओऊलं ॥ ६६
नाणाविहवत्थेहिँ पट्टंसुयदेवदूसपमुहेहिँ ।
कयउल्लोयं लोयं विम्हाविंतं समंतेण ॥ ६७
एयारिसमइरम्मं अमरविमाणं व कयजणपमोअं ।
इय विहियं जिणभवणं सहावरम्मं पि अइरम्मं ॥ ६८
तो रइया वरपूया जिणाण कुसुमेहिँ[13] पंचवन्नेहिँ ।
बहुविह[14]भत्तिसारा महुयरझंकार[15]सोहिल्ला ॥ ६९
तत्तो कुसुम[16]कुडीओ पडिमाण कयाउ परिमलड्ढाओ ।
कप्पूरागरुसाराउ धूवघडियाउ ठवियाओ ॥ ७०

---

१ तामा°. २ जाणया°. ३ °समीय. ४ समभूय°. ५ तीओ. ६ एमाइसंतेहिं. ७ °मप्पमाणो. ८ इवाणा. ९ पवत्तो. १० जिणिंद°. ११ पसाहियाइं. १२ जया°. १३ कुसमेहिं. १४ °विहवु°. १५ °मंकार. १६ कुसम°.

सव्वत्थ विरइयाइं[1] फुल्लघराइं विचित्तरूवाइं ।
उब्भीकयपेच्छयजणमुहाइँ[2] भमरोलिमुहलाइं ॥ ७१
बहुवण्णएहिं बहुभत्तिएहिं बहुसत्थि [प. ३ B]एहिं कयचोज्जं ।
रइयं जिणाण पुरओ सुट्ठु पहाणं बलिविहाणं ॥ ७२
खज्जगमोयगपमुहेहिँ[3] विविहभक्खेहिँ रइयसिहराइं ।
थालाइँ विसालाइं पुरओ णेगाइँ दिन्नाइं ॥ ७३
तह नालिकेरखज्जूरमुद्दियाअंबजंबपमुहाइं ।
विविहाइँ वणफलाइं पुरओ दिन्नाइँ धन्नेहिं ॥ ७४
इय निम्माणे[4] रम्मे पूयाबलि[5]वित्थरे महत्थम्मि ।
हरिसुद्धुसियसरीरो मिलिओ लोओ तओ बहुओ ॥ ७५
गुमु[6]गुमिंतगहिरमद्दलं, वासंतकुसुमवद्दलं;
कीरंतकरडरडरडं, पयट्टपडुपडहपट्ट(ड ?)प्पडं;
वज्जंतसंखकाहलं, समुच्छलंतकंसालकोलाहलं;
भवियजणपावरयपमज्जणं, पारद्धं[7] भुवणनाहस्स मज्जणं;
चित्तेहिं विचित्तेहिं, उद्दामधुत्तेहिं[8];
संजायतोसेहिं, गंभीरघोसेहिं;
पच्छा वियड्ढेहिं, त[......]सड्ढेहिं;
पम्हुट्ठसोएहिं, साहम्मियलोएहिं ।
जणजणियमहातोसो पए पए नच्चमाणवरगेज्जो ।
मज्जणमहो पयट्टो तिलोयनाहस्स वीरस्स ॥ ७६
कत्थइ विविहभूसणभासिणीओ नच्चंति विलासिणीओ;
कत्थइ गायंति[9] मंगलगीयाइं सोवासिणीओ;
कत्थइ लीलाए दिंति तालियाओ कुदंति रासयं कुलबालियाओ[10];
कत्थइ मंदमंदप्पणचिरीओ सुहवाओ दिंति चच्चरीओ ।
एवं वड्ढियकुड्डो बहुविच्छड्डो जणस्स सुहजणओ ।
विहिविहियसयलकिच्चो जिणनाह[11]महूसवो वत्तो ॥ ७७
कयसयलदिवसकिच्चो काऊण य जागरं महापूयं ।
पढमट्ठाहियकारी परितुट्ठो वासरे बीए ॥ ७८
साहम्मियाण पूयं करेइ तोसेइ[12] गायणाईए ।
समण-समणीण विहिणा विहेइ पडिलाहणं हिट्ठो ॥ ७९

---

१ विरइयाउ. २ °सुहाइ. ३ °पमुहेहि. ४ निम्माण. ५ °बलि°. ६ गुमु°. ७ पारद्दं. ८ °धुत्तेहिं. ९ गाइंति. १० °बालिओ. ११ जिणनाण°. १२ तोसेय.

एवं सत्त तिहीओ विहियाओ अट्ठमे दिणे इब्भं ।
विन्नवइ रुद्ददत्तो भालयलनिहियकरमउलो ॥ ८०
'तुब्भे धन्नसउन्ना महाफलं जम्मजीवियं तुम्ह ।
जे वीयरायमहिमं करेह एवं महासत्ता ॥ ८१
ता मह कुणसु पसायं अट्ठममहिमं करेमि जहसत्ती ।
तुम्हाण पसाएणं करेमि नियजीवियं सहलं ॥' ८२
परिवड्ढियपरितोसो इब्भो पडिभणइ – 'होउ एवं ति ।
गोरवठाणं अम्हं तुमाउ नऽन्नो मणे होइ ॥ ८३

किंतु –

अट्ठसयं दअ[······]लग्गं मोल्लेण पढमपूयाए ।
तत्तो सयसयवुड्ढी जाया सव्वासु[2] पूयासु ॥ ८४
तं कुणसु जहासत्तिं सेसं अम्हाण वच्छ ! साहेज्ज ।
तं चिय सफलं वित्तं जं वच्चइ तुम्हं[3] साहेज्जे ॥' [प. ४ A] ८५
इय वुत्तो सो[4] धुत्तो ईसि हसंतो भणेइ तं इब्भं ।
'तं होसु सुप्पसन्नो तो सव्वं सुंदरं होही ॥' ८६
इय भणिय गए तम्मी 'तओ वि अन्नो सुसावगो कत्तो ?' ।
इब्भस्स मणे फुरियं 'दिज्जउ एयस्स रिसिदत्ता[5] ॥' ८७
इय चिंतिऊण तुरियं पुच्छइ सूरिं परेण विणएण ।
'भयवं ! अहिणवसड्ढो पडिहासइ केरिसो तुम्ह ? ॥' ८८
इय पुट्ठो भणइ गुरू – 'छउमत्था किं वयं वियाणामो ।
जत्तियमेत्तं तुब्भे जाणामो तत्तियं अम्हे ॥ ८९
दीसइ अणन्नसरिसो सव्वो एयस्स धम्मववहारो ।
परमत्थं पुण सावय ! मुणंति सव्वन्नुणो चेव ॥' ९०
अह अट्ठमम्मि दिवसे पूया सव्वायरेण तेण कया ।
तीयचउविहा[6] जाओ सत्तसु पूयासु जावइओ ॥ ९१
दीणारकयसिहाइं थालाइं सत्थिएसु ठवियाइं ।
जाइं दट्ठूण पुणो सव्वो वि हु विम्हयं पत्तो ॥ ९२

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्ताए सह परिणयणं]

अइविम्हिएण तत्तो इब्भेण सुसावया समाहूया ।
भणिया य – 'एस तुम्हं नवसड्ढो केरिसो भाइ ? ॥' ९३

२ सव्वीसु. ३ तम्ह. ४ सा. ५ रिसिदत्तो. ६ °चउविह.

एगेण तत्थ भणियं – 'अम्हे पुव्वं पमाइणो आसि।
एयस्स सन्निहाणा संपइ सुस्सावया[1] जाया ॥' ९४
अन्नेण पुणो भन्नइ – 'धणवइ! सब्भावसावओ एसो।
किं जंपि[ए]ण बहुणा न हु दुद्धे[2] पूअरा[3] हुंति ॥ ९५
कवडेण किं कयाई इत्तियदव्वस्स कीरए चाओ?।
पज्जालिऊण भुवणं को किर उज्जालयं कुणइ? ॥' ९६
इच्चाइ जंपियाइं निसुणंतो सावयाण सव्वेसिं।
जाओ कन्नादाणे निच्छियचित्तो इमो इब्भो ॥ ९७
निप्पाइया य तत्तो चरिमा अट्ठाहिया[4] महामहिमा।
इब्भेण तो तयंते निमंतिया सावया सव्वे ॥ ९८
सम्माणिऊण बहुहा सपुत्तसयणेण उसभदत्तेण।
सो रुद्ददत्तसड्ढो एवं भणिओ सबहुमाणं ॥ ९९
'उत्तमकुलप्पसूओ कलाकलावम्मि सुट्ठु कुसलो त्ति।
जिणसासणभत्तीए अम्हं साहम्मिओ[5] जाओ ॥ १००
जा जा कीरइ पूया उत्तमसाहम्मियस्स तुह अम्हे।
सा सव्वा वि हु तुच्छा पडिहायइ अम्ह चित्तम्मि ॥ १०१
ता परिगिन्हसु इन्हिं कन्नारयणं इमं अणग्घेयं।
जीवियसव्वस्स इमं अम्हाणं तह य सयणाणं ॥' १०२
पडिभणइ रुद्दत्तो – 'को वयणं[6] तुम्ह अन्नहा कुणइ?।
किं पुण मायावित्ते पुच्छिय जुत्तं[7] इमं काउं ॥' १०३
इब्भेण पुणो भणियं – 'मा गिण्हालंबणं इमं अलियं।
जणएण लाभकज्जे जम्हा इह पेसिओ तेसिं ॥ १०४
एसो परमो लाभो एयं दट्ठुं न रूसिही[8] जणओ।
घरमायंती लच्छी सुहावहा कस्स नो होइ? ॥' [प. ४B] १०५
'एवं' ति तेण वुत्ते[9] कारियमिब्भेण हट्ठतुट्ठेण।
लग्गे गणयविदिन्ने विवाहकिच्चं निरवसेसं ॥ १०६
आणंदियसयलजणो विचे वीवाहमंगले तुट्ठो।
हिययम्मि रुद्दत्तो संपुन्नमणोरहो[10] जाओ ॥ १०७
ठाऊण केइ दियहे सबुद्धिकोसल्लरंजिओ धणियं।
तं रिसिदत्तालाभं मन्नंतो रज्जलाभं व ॥ १०८

---

१ सुसावया. २ दुद्ध. ३ पुंअरा. ४ अट्ठाहिया. ५ साहम्मिम्मिओ. ६ वणयणं.
७ जुत्तं. ८ रूसिही. ९ वुत्तो. १० °मणोहरो.

तत्तो पसत्थदिवसे संभासियसयणपरियणं सयलं ।
ससुरकुलाणुभाओ संचल्लो नियपुराभिमुहो[1] ॥ १०९
संभासिया य पिउणा रिसिदत्ता नेहनिब्भरमणेण ।
'सयलसुहमूलभूए सम्मत्ते निच्छिया होज्ज ॥ ११०
चियवंदणसज्झाए पच्चक्खाणम्मि उज्जुया होज्ज ।
सुट्ठुं सुसीलविणीया दयालुया सव्वजीवेसु ॥ १११
जह सायरमज्झगओ पोयं मोत्तूण मंदबुद्धिल्लो ।
जलहिम्मि दिन्नझंपो होइ नरो दुहसयाभागी ॥ ११२
तह भवसायरमज्झे जिणमयपोयं सुदुल्लहं मुद्धे ! ।
मा मुंचसु जेण न होसि भायणं दुक्खलक्खाणं ॥' ११३
एवं बहुप्पयारमणुसासिऊण [………………] ।
भडवंचिया(?) सपरियणेणोसभदत्तेण रिसिदत्ता ॥ ११४
जामाउगो वि भणिओ – 'चिंतामणिकप्पसालसारिच्छं ।
जिणधम्मं मा मुंचसु कल्लाणपरंपराहेऊ ॥ ११५
साहम्मिणि तुह एसा धम्मसहाओ इमीइ तं होज्ज ।
मुद्धजणोहसणाओ मा मुंचसु धम्मबोहित्थं ॥' ११६
इयरेण सो पवुत्तो – 'भरियं उयरं गुरूवएसेणं[3] ।
दिट्ठं निसुणेसु पुणो अहयं काहं जमेत्ताहे ॥ ११७
मा कुण इमीएँ चिंतं नासीभूया[4] इमा ममेयाणिं ।
तह काहामि जहेसा न सरइ करिणी[5] व विंझस्स ॥' ११८
एवं कयसंभासो सहायसहिओ इमो[6] समुच्चलिओ ।
उचियसमएण तत्तो संपत्तो कूवचंद्रम्मि[7] ॥ ११९

[रिसिदत्ताए सस्सुरगिहे गमणं, सधम्मा परिब्भंसो य]

चिरकालाओ मिलिओ उक्कंठियमाणसाण सयणाण ।
लज्जाएँ नेय गेण्हइ नामं पि जिणिंदधम्मस्स ॥ १२०
रिसिदत्ता वि हसिज्जइ कुणमाणी पूयवंदणाईयं ।
जणएण विदिन्नाणं मणिकंचणघडियपडिमाणं ॥ १२१
साहूयं पिव भणिया सासु-नणंदाहिँ सा वि पुणरुत्तं ।
'जइ चिट्ठसि अम्ह गिहे ता मुंचसु अप्पणो धम्मं ॥ १२२

१ °राभिसहो. २ सुमु. ३ °एसण. ४ नासइ°. ५ करणी. ६ इमी. ७ °चंद्रम्मि.

भत्तारदेवयाओ नारीओ होंति जीवलोगम्मि।
जं किं पि कुणइ भत्ता ताओ वि कुणंति तं धम्मं॥ १२३
अम्हाण वि धूयाओ णेगाओ संति सावयकुलेसु।
ताओ सावयधम्मं कुणंति अम्हे न रूसामो॥' १२४
एसो पुण वुत्तंतो रिसिदत्ताए वि भत्तुणो सिट्ठो।
तेणावि तओ भणियं दंसियनेहं इमं वयणं॥ १२५

'इट्ठा सि मज्झ सुंदरि! जीवियभूया सि सुणसु म[इ] वयणं।
सयणाणं लज्जाए न हु तीरइ पालिउं धम्मो॥ [प. ५ A] १२६
तुह कज्जे मइँ धम्मो परिच्चत्तो ताव तित्तियं कालं।
मम कज्जेण पुणो तं न चयसि किं दिट्ठचेट्ठा[2] वि॥ १२७
एयं घरसव्वस्सं सव्वं पि समप्पियं मए तुज्झ।
को जाणेइ किसोअरि! को धम्मो सुंदरो नो वा[3]॥' १२८

तओ सा किंचि तस्स[4] नेहाओ, किंचि सासुय-नणंदा[ण] भयाओ, किंचि उवहासलज्जाए, किंचि अप्पसत्तयाए पम्हुसिऊण जणयवयणं परिच्चत्तजिणसासणकिंचा[5] तेसिं चेव अणुट्ठाणं काउमारद्धा।

अवि य—

किच्छेण [ए]स जीवो ठाविज्जइ उत्तमे गुणट्ठाणे।
लीलाए च्चिय निवडइ किच्छे मिच्छत्तपंकम्मि॥ १२९
जिणधम्ममम्मयभूयं काउं को रमइ तुच्छमिच्छत्ते।
जइ ता पुव्वकयाइं न होंति कम्माइँ गरुयाइं॥ १३०
पुव्वज्जियपाववसा अमयं वमिऊण तेहिँ दोहिँ पि।
हालाहलं महाविसमापीयं मूढचित्तेहिँ॥ १३१

[पीइगिहाओ रिसिदत्ताए संबंधविच्छेओ, पुत्तजम्मं च]

मग्गंतेण पउत्तिं विन्नायं सव्वमेवमिन्भेण।
सिट्ठं च बंधवाणं—'मुट्ठा भो! तेण धुत्तेण॥ १३२
कन्नालाभनिमित्तं सुसावगत्तं पयासियं तेणं।
पेच्छ कह सयलसंघो वि मोहिओ गूढहियएण॥ १३३
धम्मच्छलेण छलिया अम्हे निउणा वि तेण पावेण।
ता सच्चमिणं[6] जायं धुत्ताण वि होंति पडिधुत्ता॥ १३४

1 मइए. 2 दिट्ठचेहा. 3 मेव. 4 तस्स. 5 °किंचा. 6 सच्चमि°.

निद्धम्मकुलप्पसुओ[1] पावो सो ताव तारिसो होउ।
बालत्तगहियधम्मा चुक्का[2] कह पिच्छ रिसिदत्ता ॥ १३५
सव्वमिणं[3] सा वरई[4] दिन्ना अम्हेहिं तस्स पावस्स।
तहवि कुलागयधम्मो तीए न हु आसि मोत्तव्वो ॥ १३६
ता इत्थ इमं जुत्तं तीए तत्ती[5] न काइ कायव्वा।
सा पुव्वं पि न जाया मया य सव्वेहिं दट्ठव्वा ॥ १३७
जो पुण तीसे तत्तिं[6] काही अम्हाण सो वि तप्पुत्तो[7]।
इय साहियम्मि तत्ते मा अम्हं को वि कुप्पिज्जा ॥' १३८

किं बहुणा?–

तह सा चत्ता तेहिं जह किर नगराणमंतरं तेसिं।
जोयणदुगमेत्तं पि हु संजायं जोअणसयं च ॥ १३९

तओ 'जो पुव्विं गहियपाहुडे पइदियहं मम पउत्तिनिमित्तं पुरिसे पेसंतो सो संपइ मासाओ वासाओ वि न पेसइ' त्ति मुणियजणयकोवाइसया किंकायव्वमूढा कालं गमेउमारद्धा रिसिदत्ता, जाया य कालेण आवन्नसत्ता। तओ दूय[8]पेसणेण भणिओ तीए ताओ–'कीसाहं तुब्भेहिं परिचत्ता?। तुब्भेहिं चेव अहमत्थ मिच्छत्तपंके पक्खित्ता। ता खमसु मम एगमवराहं। नेहि ताव गिहं। तत्थ-ट्ठिया आएसकारिणी चिट्ठिस्सामि। अन्नं च सव्वाओ विलयाओ पढमं पिइगि-हेसु पसवंति, ता कह लोयाववायाओ न बीहेसि?।' इच्चाइ बहुहा भणिए-[प. ५ B]ण पडिभणियमिब्भेण–

'जप्पभिइ च्चिय तुमए धम्मो चत्तो जिणिंदपन्नत्तो।
तप्पभिइ च्चिय अम्हं मया तुमं किमिह बहुएण ॥' १४०
सोऊण जणयवयणं सुइरं परिझूरिऊण हिययम्मि।
जाया मणे निरासा संठवइ पुणो वि अप्पाणं ॥ १४१
जाओ कमेण पुत्तो[9] बहुलक्खणसंगओ कणयगोरो।
नियकुलजणियाणंदो तुट्ठा दट्ठूण तं माया ॥ १४२
सोऊण सुयं जायं कयाइ तूसेज्ज[10] मज्झ[11] जइ जणओ।
इय पेसेइ तुरंती वद्धावयमाणवं पिउणो ॥ १४३
इब्भेण सो पवुत्तो–'ऽवरस्स वद्धावओ तुमं होसु।
अम्हाण नत्थि धूया रिसिदत्तानामिया कावि ॥' १४४

---

१ °प्पसूओ. २ चुक्का. ३ सव्वमि°. ४ विरई. ५ तत्ती. ६ पयट्टि°. ७ °काइव्व°. ८ दूया°. ९ पत्तो. १० तसेज्ज. ११ मम.

एवं च नामकरणे वुड्ढावण-मुंडणाइपव्वेसु ।
आहूओ वि न पत्तो कुलगेहाओ मणूसो वि ॥ १४५
तं चेव बालयं तो हियए आलंबणं दढं काउं ।
परिवालिउं पवत्ता एसा एगग्गचित्तेण ॥ १४६

[नम्मयासुंदरीजम्मवण्णणा]

अह वड्ढमाणनयरे जिट्ठाए उसभदत्तसुण्हाए ।
नामेण गुणेहिँ य सुंदरीएँ सह[1]देवभज्जाए ॥ १४७
उववन्नो कयपुन्नो को वि जिओ सुंदरो [······] गब्भे[2] ।
धणियं धम्मज्झाणे य[3] उज्जमा(या?) जेण संजाया ॥ १४८
परिवड्ढियलायन्ना इट्ठा पइणो सपरियणस्सावि ।
ससुरस्स सासुयाए सा जाया तो विसेसेण ॥ १४९
नवरं पंचममासे संजाओ तीएँ दोहलो एसो ।
नम्मयँ[4]महानईए गंतूण करेमि मज्जणयं ॥ १५०
सा पुण पगिट्ठदेसे गंतुं तीरइ सुहेण नो तत्थ ।
कज्जममज्झं नाउं द[इ]यस्स वि सा न साहेइ ॥ १५१
झिज्झइ[5] अपुज्जमाणे डोहलएँ सयलमंगमेईए ।
तत्तो तं महदेवो दट्ठूणं पुच्छए एवं ॥ १५२

'किं सुयणु! तुह मणिट्ठं संपज्जइ नऽम्ह मंदिरे किंचि ।
किं केणइ परिभूआ बाहइ किं कोइ तुह रोगो? ॥ १५३
जेणेवं छउयंगी दरिद्दघरिणि व्व नज्जसि सचिंता ।
साहेहि फुडं मुद्धे! जेण पणासेमि ते दुक्खं ॥' १५४
तीए भणियं – 'पिययम! असज्झमेयं न साहिमो तेण ।
वरमेगा हं झीणा[6] किं तुह उव्वेयकरणेण? ॥' १५५
सहदेवेण पवुत्तं – 'नासज्झं मज्झ विज्जइ जयम्मि ।
ता कहसु फुडं अग्घं को जाणइ थवि(गि?)यरयणाई(णं?)'॥१५६
इय वुत्ताए ताए सब्भावो साहिओ तओ तेण ।
भणियं – 'कित्तिय[7]मेत्तं निव्वुयहियया दढं होसु ॥' १५७
आपुच्छिऊण जणयं भणिया सव्वे वयंसया[8] तेण ।
'तुरियं करेह कडयं गच्छामो नम्मयं दट्ठुं ॥' १५८

१ °ए वि सह°. २ गब्भो. ३ °णे जाय उ°. ४ नम्मइ°. ५ सिज्झइ. ६ पीणा. ७ किरेय°. ८ वियंसया.

भणियाणंतरमेव य पमोयभरनिब्भरेहिं तेहिं पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, गहियाइं अणेगाइं कयाणगाइं, सहाईकओ नाणाविहपहरणविहत्थो सुहडसत्थो। चालियाओ बहुविहाओ [प. ६ A] पयईओ। समुच्छाहिया गंधव्वनट्टकारया चारणगणा। पयट्टा कोउगावलोयणलालसा सयमेव पभूया लोया। तओ पसत्थवासरे कयकोउयमंगला परिवारपरिवारिया पवड्ढंतपमोयउद्धुरेहिं[1] बंधवेहिं सपुत्तकलत्तेहिं मेत्तेहिं सहिया चलिया दो वि सहदेव-वीरदासा[2]। कहं ?

गंभीरतूरघोसपडिसद्दपूरियनहंगणा, बहलधूलीपडलधूसरियपेच्छयजणा;
वज्जंतसंखकाहला, वणे वणे पलायमाणपुलिंदनाहला;
गामे गामे पलोएज्जमाणा गामिएहिं, गोरविज्जमाणा गामसामिएहिं;

कुणमाणा महब्भुयभूयाओ पूयाओ जिणिंदाणं गामनगरेसु, अट्टया(?)-विलंबिएहिं पयाणएहिं सुत्थीकयसमत्थसत्थिया सुहंसुहेण संपत्थिया। पत्ता कमेण नाणावणराइरमणीयं रेवासन्न[3]भूमिभागं। परितुट्ठा[4] य सुंदरी दट्ठूण बहलतरंगरंगंतकुंचकारंडव[5]हंससारसाइविहंगसंगसंपत्तरम्मयं महा[नइं ?] नम्मयं।

आवासिओ य सव्वो कडयजणो हरिसनिब्भरो तत्थ।
सहदेवसमाएसा भूभाए सग्ग[6]रमणीए॥ १५९

बीयदिणम्मि सदारा कयसिंगारा मणोहरायारा।
मज्जणकीलाहेउं रेवातीरं गया सव्वे॥ १६०

पेच्छंति तयं सरियं महल्लकल्लोलभीसणायारं।
कत्थइ अन्नत्थ तरंगभंगुरं सुप्पसन्नं च॥ १६१

कत्थइ गहिरावत्तं कत्थइ कीलंततारुयनरोहं।
कत्थइ मज्जंतमहागयंदमयसुरहिजलवाहं॥ १६२

विंझगिरिपायपायवपगलियघणकुसुमगोच्छचिंचइयं।
अवियण्हलोयणाओ थिरोदयं तं दहं दट्ठुं॥ १६३

हरिसेण तं पविट्ठा उब्बुडनिब्बुड्डणेण कयहासा।
विलसंति ते सहेलं सम्मं महिलाहिँ परितुट्ठा॥ १६४

सिंगियजलेण केई[7] पहणंति परोप्परं पहासिल्ला।
अन्ने हरियंदणपंडियाहिँ हम्मंति महिलाणं॥ १६५

परिकीलिऊण सुइरं संपत्तपरिस्समा समुत्तिन्ना।
तत्तो महद्दहाओ कारिंति जिणबिंबपूयाइं॥ १६६

---

१ °उद्धरेहिं. २ °दसो. ३ °सवन्न°. ४ पविठ्ठुट्ठा. ५ छइक°. ६ °कारंजसव°. ७ मग्गा°. ८ कीइ.

अइसयपमोयपडिहत्थमाणसा सुंदरी विसेसेण ।
कुणइ पडिमाण पूयं पडिपुन्नमणोरहा जाया ॥ १६७
एवं दियहे दियहे कीलंताणं अतित्तचित्ताणं ।
पोसदिवसो व्व सहसा मासो समइच्छिओ तेसिं ॥ १६८

[नम्मयानईतीरे नम्मयपुरनिवेसो]

नाणादेसाहिंतो कडयं आवासियं निएऊण ।
विविहकयाणगकलिया पत्ता णेगे तहिं वणिया ॥ १६९
कयविक्कओ[1] पवत्तो दिणे दिणे सयलकडयलोयस्स ।
कयपरिओसो लाभो मणोरहागोयरो जाओ ॥ १७०
संलवियं च जणेहिं – 'कयउन्नो को वि सुंदरीगब्भे ।
जस्स कएणऽम्हाणं[2] पवड्ढिया[3] संपया एसा ॥' १७१
अन्ने भणंति – 'बलियं[4] वत्थू एयस्स भूमिभाग[प. ६ B]स्स ।
नयरनिवेसं काउं चिट्ठह भो किं न एत्थेव ? ॥ १७२
किं तत्थ वड्ढमाणे[6] मुंडा(?) अम्हाण रोविया वाडा ।
चिट्ठंति जेण गम्मइ सुरलोयसमं इमं मोत्तुं ॥' १७३
उवलद्धजणाकूओ सहदेवो सुंदरिं[8] तओ भणइ ।
'चिट्ठामो किं भद्दे ! रम्मम्मि इहेव ठाणम्मि ॥' १७४
तीए भन्नइ – 'पिययम ! रेहंतमहंतलोलकल्लोलं ।
पिच्छंतीए एयं ममावि मणनिव्वुई जाया ॥ १७५
ता जइ रोचइ तुम्हे कुणह निवेसं इहेव ठाणम्मि ।
किर सव्वो लोओ जुत्ताजुत्तं फुडं मुणइ ॥' १७६

तओ सहदेवेण वीरदासेण सद्धिं[9] समच्छिऊण पसत्थवासरे पारद्धो नयरनिवेसो – ठावियाइं वत्थुविज्जावियक्खणेहिं सुत्तहारेहिं तियचउक्कचच्चराइं, संठावियाओ जहाजोगं पासायभवणपंतीओ, आहूओ सव्वेहिं पि नियनियकुडुंबपरिगरो, कारियं च सुरिंदमंदिरसुंदरं जिणमंदिरं, दिन्नं च नामं नयरस्स नम्मयपुरं ति । किं बहुणा ? –

विक्खायसयलवत्तो संजुत्तो सयलसयणवग्गेणं[10] ।
सेट्ठी वि उसभदत्तो तुरियं तत्थेव संपत्तो ॥ १७७

---

१ °विक्कए. २ म्हाण. ३ पवड्डिया. ४ मलियं. ५ किम. ६ वड्ढमाणा. ७ गम्मई. ८ सुंदरी. ९ सिद्धि. १० °वग्गेण.

करगरविवज्जियाणं[1] अपीडियाणं परेण केणावि।
वच्चइ सुहेण कालो जणाण सग्गे सुराणं व ॥ १७८
अह वट्टंते चंदे गहबलजुत्तम्मि सुंदरे लग्गे।
सा सुंदरी पसूया धूयारयणं कमलनयणं ॥ १७९
पढमो अवच्चलाभो पुत्तऽब्भहिया य बालिया एसा।
इय पुत्तजम्मणम्मिव वद्धावणयं कयं पिउणा[2] ॥ १८०
सयलो वि नगरलोगो जंपइ आणंदपुलइयसरीरो।
'धन्नाण इमा बाला लच्छि व [घ]रे समोइन्ना ॥' १८१
छट्ठीजागरणाई किच्चं सयलं पमोयकलिएहिँ।
जणएहिँ तीएँ विहियं पढमम्मिव पुत्तजम्मम्मि ॥ १८२
वत्तम्मि बारसाहे सयणसमक्खं [च?] सुहमहुत्तम्मि।
गेज्जंतगीयमंगलमविरयवज्जंतवरतूरं ॥ १८३
जं नम्मयसरियामज्जणम्मि जणणीएँ डोहलो जाओ।
तं होउ नम्मयासुंदरि त्ति नामं वरमिमीएँ[3] ॥ १८४
अइसुंदरनाममिमं पसंसइ सव्वो वि पुरजणो मुइओ।
पुन्नऽब्भहिओ जीवो किर कस्स न वल्लहो होइ ॥ १८५
हत्थाहत्थं घिप्पइ जणेण अन्नोन्नपेल्लणपरेण।
वड्ढइ वड्ढिय[4]कंती सियपक्खे चंदलेह व ॥ १८६
बोल्लाविज्जइ पिउणा पंचनमोक्कारभणणकुड्डेण।
देवगुरूण पणामं सिक्खाविज्जइ हसिरवयणा ॥ १८७
सव्वस्स चेव इट्ठा विसेसओ वीरदासलहुपिउणो।
चीवंदणाइकिच्चं पढमं सिक्खाविया तेण ॥ १८८
नारीजणोचियाइं विन्नाणाइं तओ वि चउसट्ठी।
तओ [य] समप्पिया साहुणीण सम्मत्त[5][प. ७ A]नाणड्ढा ॥ १८९
जीवाइनवपयत्था नाया तीए विसुद्धपन्नाए।
पढियाइँ पगरणाइं वेरग्गकराइँ णेगाइं ॥ १९०
सरमंडलाभिहाणं तीए कुड्डेण पगरणं पढियं।
नर-नारीण सरूवं गुणागुणे जेण नज्जंति ॥ १९१
गिण्हइ सुहेण जं जं सुणेइ पाएण एगसंघात्तं।
पम्हुसइ नेव गहियं तहावि पढणुज्जमो तीसे ॥ १९२

---

१ °भरतिविवज्जियाणं. २ पिउणो. ३ वरममीए. ४ वड्डिय°. ५ समत्त°.

सो वि महेसरदत्तो रिसिदत्तानंदणो नियपिउणा ।
बावत्तरीकलाओ पढाविओ लोगपयडाओ ॥ १९३

[नम्मयासुंदरीरूववण्णणा]

अह नम्मयापुराओ केई वणिया कयाणगमपुवं ।
घेत्तूण लाहहेउं संपत्ता कूवचंद्रम्मि ॥ १९४
रिसिदत्ताए पुट्ठा – 'नम्मयपुरवासिणो फुडं तुब्भे ।
तो उसभदासमिब्भं परियाणह निच्छयं नो वा ? ॥ १९५
सहदेव-वीरदासा तस्स सुया विस्सुया पुहइवीढे ।
ते परियाणह तुब्भे तह तेसिं पुत्तभंडाइं ? ॥' १९६
हसिऊण तेहिं भणियं – 'चंदं गुरुसुक्कसंगयगयाणं ।
को न वियाणइ सुंदरि ! जं भणियवं तयं भणसु ॥' १९७

तीए भणियं –

'नम्मयसुंदरिनामा सुवइ सहदेववल्लहा धूया ।
वयरूवाइं तीसे जइ जाणह तो फुडं कहह ॥' १९८

वणिएहिं वुत्तं[1] –

'तारुन्नयकयसोहं तीसे रूवं न वन्निउं सक्का ।
वन्नंताणं नियमा अलियपलावत्तणं होइ ॥ १९९
जइ सुंदरि ! भासेमो[2] छत्तं पिव मेहडंबरं सीसं ।
ता सीमंतयसोहा तीसे वि निवारिया होइ ॥ २००
छणचंदसमं वयणं तीसे जइ साहिमो सुय[णु ?] तुज्झ ।
तो तक्कलंकपंको तम्मि समारोविओ होइ ॥ २०१
संबुक्क[3]समं गीवं रेहातिगसंजुयं[4] त्ति जइ भणिमो[5] ।
वंकत्तणेणं[6] सा दूसिय त्ति मन्नइ जणो सवो ॥ २०२
करिकुंभविब्भमं जइं[7] तीसे वच्छत्थलं च जंपामो ।
तो चम्मथोरयाफासफरुसया ठाविया होइ ॥ २०३
बिल्लहलकमलनालोवमाउ बाहाउ तीएँ जो कहइ ।
सो तिक्खकंटयाहिट्ठियत्तदोसं पयासेइ ॥ २०४
किंकिल्लिपल्लवेहिं तुल्लो[8] करपल्लवि त्ति बितेहिं[9] ।
नियमा निम्मलनहमणिमंडणयं होइ अंतरियं ॥ २०५

---

1 नम्मइ°. 2 °व्वुत्तं. 3 मासेसो. 4 संवुक°. 5 °हगमंजुय. 6 पंकत्तणेण, 7 जइ, 8 तुल्ल. 9 बितेहिं.

जइ मासिज्जइ तीसे रंभाथंभोवमाउ जंघाओ।
ता किर तासिमवस्सं असारया होइ कज्जरिया॥ २०६
कीरंते चलणाणं कुम्मुवमाणम्मि बुहजणो[1] भणिही।
निम्मंसकक्खडाणं नणु तेसिं केरिसी सोहा?॥ २०७
जं जं तीसे अंगं वन्नेमो तस्स तस्स भुवणम्मि।
नत्थि समं उवमाणं कह तीए वण्णिमो रूवं॥ २०८
सग्गम्मि अच्छरा जइ तीए तुल्ला इमं न वत्तव्वं।
जं सा विलोलनयणा इयरीओ[2] थद्धदिट्ठीओ[3]॥' २०९

[रिसिदत्ताए सपुत्तकये नम्मयासुंदरीमग्गणा]

[ए]वं वण्णिएहिं वण्णिज्जमाणं नम्मयाए निरुवमरूवसंपयं[4] निसामयं[प. ७B]ती चिंतिउं पवत्ता रिसिदत्ता 'कह नाम तं कन्नारयणं महेसरदत्तस्स करे विलग्गिही[5]? न ताव ताओ असाहम्मियस्स दाही। पडिवन्नसावगधम्मस्सावि दिट्ठजणयचरिया ते न पत्तियंति। एगवारमेव कडुमयथालीए रज्झइ। को दिट्ठतकरेहिं अप्पा मोसेइ? न चाहं[6] तत्थ गया दंसणमवि लहिस्सं। ताव पेसेमि पडिवत्तिवयणकुसलं कं पि दूयं ति। मा कया[इ] समागयकारुन्नभावा[7] ते पसीयंति' एवं संपहारिऊण पेसिओ तीए पडिवत्तिवयणकुसलो विसिट्ठ-पुरिसो। संपत्तउचियसम्माणेण य भणिओ तेण इब्भो–'ताय! अबलाओ अबलाओ चेव हुंति, विसेसओ ससुरकुलगयाओ। जओ–

एगत्तो रुडइ पई एगत्तो सासुया य परिसवइ।
दूमंति नणंदाओ रूसइ सेसो वि कुललोगो॥ २१०
परऽहीणाणं ताणं नियधम्मो तह य कह णु निवहइ।
को किर रिसिदत्ताए दोसो सम्मं विभावेह॥ २११
अणुतावग्गिपलित्ता अवराहं अप्पणो खमावेइ।
मग्गइ धम्मसहायं सा नम्मयसुंदरीकन्नं॥ २१२
काही जिणवरधम्मं तीए संगेण नत्थि संदेहो।
एस महेसरदत्तो कुणइ इमं पत्थणं तीए॥' २१३
इब्भेण तओ भणइ–'पत्तिज्जामो न तस्स धुत्तस्स।
जेण तया डंभाओ सवजणो[9] विम्हयं नीओ॥ २१४
जारिसओ सो जणओ तणएण वि तारिसेणं[10] होयव्वं।
न कयावि अंबगुलिया निवडइ पासम्मि निंबस्स॥ २१५

---

१ बुहजणो. २ इइयरीओ. ३ थद्धदि°. ४ °रूवसं°. ५ विलग्गही. ६ चाहं. ७ °भावा. ८ ख. ९ °जणं. १० भारिसेण.

एवं ता रिसिदत्ता अणवरयं दहइ माणसं अम्ह ।
ता जाणंता बीयं न पक्खिवामो तहिं अम्हे ॥' २१६
एवं बहुप्पयारं भणिओ रुट्ठेण सत्थवाहेण ।
दूओ[1] विलक्खहियओ गओ निरासो नियं ठाणं ॥ २१७
सोउं दूयमुहाओ सयणुल्लावं सिणेहनिरविक्खं ।
'हा सव्वहा वि चत्तो नियपिउणा पावकम्मा हं ॥' २१८
इय सा विमुक्ककंठं रिसिदत्ता रोविउं तह पवत्ता ।
कारुन्नपुन्नहियओ अन्नो वि जणो जह परुन्नो ॥ २१९
आसासिऊण बहुसो भणिया सा नंदणेण—'किं अम्मो ! ।
किं रुअसि अणाहा इव कहेहि दुहकारणं मज्झ ॥' २२०
तीए भणियं—'पुत्तय ! तुह पिउणा[3] डंभिएण होऊण ।
परिणित्तु इहाणीया चयाविया तह य जिणधम्मं ॥ २२१
उज्झियजिणधम्माए चत्ता वत्ता वि मज्झ सयणेहिं ।
आसानडियाएँ ममावि वोलिओ एत्तिओ कालो ॥ २२२
अत्थी उत्तमरूवा दुहिया तुह माउलस्स मे णिसुयं ।
सा दूयपेसणेणं तुह कज्जे जाइ[या] वच्छ ! ॥ २२३
सा ताव न लद्ध च्चिय मह पिउणा निट्ठुरं तहा भणिओ ।
पुत्तऽसहिएण दूओ जहा निरासा अहं जाया ॥ २२४
अणुरूवा तुह पुत्तय ! जइ सा हत्थे न लग्ग[प. ८ A]ई बाला ।
किं जीविएण ता मह इय दुक्खाओ मए रुन्नं ॥' २२५
तेण पवुत्तं—'अम्मो ! कयावराहाण किमिह रुन्नेण ।
कुवियसयणेहिं[4] विहिओ[2] सहियव्वो परिभवो[5] सव्वो ॥ २२६

अन्नं च—

कारणवसेण कुविया वि सज्जणा मंगुलं न चिंतंति ।
विहडंति[6] नेव वसणे जो उ परो सो परो च्चेव ॥ २२७
जइ तुज्झ इमं दुक्खं ता हं गंतूण तं विवाहेमि ।
अवराहविरहिओ हं न कोवहेऊ जओ तेसिं ॥ २२८
कुविओ वि दढं ताओ विणीयवयणस्स तूसिही मज्झ ।
पज्जलइ नेव जलणो सिच्चंतो वारिधाराहि ॥' २२९

१ दूओ. २ विसा. ३ पिउणो. ४ वहिओ. ५ परिभावो. ६ विहडुंति.

तीए वुत्तं – 'पुत्तय ! माइण्हियमोहिओ जणो पायं ।
परिहरइ दूरउ च्चिय महासरं नीरपडिपुण्णं ॥ २३०

विणएण य चाएण य तुह पिउणा रंजिओ जणो तइया ।
सब्भावविणीयस्स वि पत्तियइ कहं तओ ताओ ? ॥' २३१

भणियमियरेण – 'अम्मो ! पेच्छाहि ममावि ताव कोसल्लं ।
आइससु जेण तुरियं पूरेमि मणोरहा तुज्झ ॥' २३२

पडिभणइ तो हसंती रिसिदत्ता – 'पुत्त ! होउ तुह सिद्धी ।
समणुन्नाओ सि मए होउ सिवं मंगलं तुज्झ ॥' २३३

[महेसरदत्तस्स मायामहगिहगमणं]

आपुच्छिऊण जणयं महया सत्थेण सो तओ चलिओ ।
पत्तो कमेण तत्तो अइरम्मं नम्मयानयरं ॥ २३४

तओ नयररम्मयाविम्हियमणेण बहिरुज्जाणे संठिएणेव पेसिओ जाणावणत्थं मायामहस्स समीवं पुरिसो । तेणावि सपुत्तपरियणो सुहनिसन्नो पणमिऊण भणिओ सत्थवाहो – 'एस तुम्ह नंदणीनंदणो मायामहस्स दंसणुक्कंठिओ विविहभंडभरियजाणवाहणो समागओ महेसरदत्तो, विन्नवेइ य – "दंसेह कं पि भंडनिक्खेवणट्ठाणं ति" । तमायन्निऊण तिवलीतरंगभंगभालवट्ठेण सकोवं भणिओ सत्थवाहेण – 'न किंचि अम्ह तेण पओयणं । चिट्ठउ जत्थ अन्ने वि देसंतरवणिया चिट्ठंति ।' तओ कयकरंजलिमउलिणा विन्नत्तं सहदेवेण – 'ताय ! मा एवमाणवेह । सो बालो अदिट्ठदोसो तुम्ह दंसणुक्कंठिओ समागओ । अन्नस्स वि घरमागयस्स उचियउवयारो कीरइ । जेण भणियं –

जेण न किंचि वि कज्जं तस्स वि घरमागयस्स जे सुयणा ।
नूणं पहट्ठवयणा नियसीसं आसणं दिंति ॥ २३५

ता सव्वहा तस्सावमाणकरणं न जुत्तं । सम्माणिओ समुप्पन्नसिणेहो मा कयाइ जिणधम्मं पडिवज्जेज्जा ।' 'एवं होउ त्ति ।'

तओ भणिओ पगंतु [········] सहदेव-वीरदासेहिं ।
दंसियगरुयसणेहो पवेसिओ नयरमज्झम्मि ॥ २३६

उत्तारियं च भंडं भंडागारेसु निरुवसग्गेसु ।
तओ [य] विणयमहग्घं पणओ माया[प. ८ B]महो तेण ॥ २३७

---

१ हब्भावविणीयस्स. २ संठिपणव. ३ °निसन्ना. ४ भिन्नवई. ५ तमाइन्निऊण. ६ तिवल्ली°. ७ तो. ८ °दोसा. ९ °मज्झम्मि.

आलिंगिऊण गाढं मायामहिगाइ चुंबिओ सीसे ।
दिन्ना पवराऽऽसीसा – ‘अक्खयअजरामरो होसु ॥’ २३८
तो मायामहघरणीओ उ(ताओ ?) सबायरेण पणमेइ ।
लद्धासीसो तत्तो पणमइ सवं सयणवग्गं ॥ २३९
वच्चइ चेइयभवणं तेहिँ समं नमइ मुणिवरे विहिणा ।
जिणबिंबदंसणाओ वहइ पमोयं हिययमज्झे ॥ २४०
सुविणीओ सुहचरियो[1] पियंवओ वल्लहो गुरुजणस्स ।
जं पुण मिच्छद्दिट्ठी [त्ति] मणागमरुइकरं एयं ॥ २४१
भणिही सवो लोगो पारद्धं जणयचेट्ठियमणेण ।
तेण न सिक्खइ धम्मं मामयभणिओ वि पुणरुत्तं ॥ २४२

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीए सह परिचओ]

पेच्छंतो रूवं सुंदरीएँ चिंतेइ माणसे घणियं ।
‘कह नाम समुल्लावो होही एयाएँ सह मज्झ ॥’ २४३
अन्नदिणे वच्चंती दिट्ठा अज्जाउवस्सए तेण ।
तो सो वि तयणुमग्गं गओ तहिं दंसणसुहत्थी ॥ २४४
[ल]ज्जोणयाएँ तीए ईसिं हसिऊण सो इमं भणिओ ।
‘पाहुणय ! किं न वंदसि अज्जा अम्हाण गुरुणीओ ? ॥’ २४५
‘जइ तुम्हं गुरुणीओ तुम्हे वंदेह अम्ह किं इत्थ ? ।’
‘होही तुहावि धम्मो गुरुभत्तीए नमंतस्स ॥’ २४६
काऊण पणामं अज्जियाण इयरेण सा इमं भणिया ।
‘तुह वयणाओ सुंदरि ! पणमामि न धम्मबुद्धीए ॥ २४७
कुलधम्मं मोत्तूणं सुंदरि ! अन्नोन्नधम्मनिरयाणं ।
नासंति दो वि धम्मा को गच्छइ दोहिँ मग्गेहिँ ? ॥’ २४८
दाऊण आसणं तो भणिओ – ‘निवसाहि एत्थ ख[ण]मेक्कं ।
मज्झत्थचित्तयाए धम्मसरूवं वियारेमो ॥’ २४९
उवविट्ठस्स य भणियं – ‘विक्कंति कयाणगाइँ[3] हट्टेसु ।
मंगुलमणोरमाइं नियनियविभवाणुसारेण ॥ २५०
निच्छंति विकणंता मंगुलवयणं[4] ति मंगुलं वोत्तुं ।
कइएण उ घेत्तवं सुंदर ! सुपरिक्खियं[5] काउं ॥ २५१

१ °चरियं २ °वेइय°. ३ कयाणगाइं. ४ °वयणं. ५ °क्खिउं.

धम्मकयाणगमेवं परलोगसुहत्थिणा वि घेत्तव्वं ।
जो तत्थ वंचिओ किर सो चुक्कइ सव्वसोक्खाणं ॥ २५१
अम्हाणं[1] ताव धम्मे अट्ठारसदोसवज्जिओ देवो ।
ते पुण बुहेहिं[2] सुंदर ! दोसा एवं पढिज्जंति ॥ २५२
अन्नाणकोहमयमाणलोहमाया रई य अरई य ।
निद्दासोयअलियवयणचोरिया मच्छरभया य ॥ २५४
पाणिवहपेमकीडापसंगहासा य जस्सऽमी दोसा ।
अट्ठारस य पणट्ठा नमामि देवाधिदेवं[3] तं ॥ २५५
जीवदय सच्चवयणं परधणपरिवज्जणं च बंभं च ।
पंचिंदियनिग्गहणं आरंभपरिग्गहच्चाओ ॥ २५६
[ए]स विसिट्ठो धम्मो उवइट्ठोऽणुट्ठिओ सयं जेण ।
सो अम्ह वीयराओ देवो देविंदकयपूओ ॥ [प. ९ A] २५७
एसो न चेव तूसइ न य रूसइ दुट्ठचिट्ठियस्सावि ।
सावाणुग्गहरहिओ तारेइ भवण्णवं नियमा ॥ २५८

तहा –

अवगयधम्मसरूवो सुधम्मकरणुज्जुओ य जो निच्चं ।
धम्मोवएसदाया निरीहचित्तो गुरू अम्ह ॥ २५९
एयारिसगुणहीणो देवो गुरुणो वि नऽम्ह रोयंति ।
जइ अत्थि पहाणयरा अन्ने साहेहि तो अम्ह ॥' २६०
इय देवाइसरूवे सवित्थरं[4] नम्मयाएँ परिकहिए ।
कम्माण खओवसमा महेसरो मणसि पडिबुद्धो ॥ २६१
तह वि परिहाससारं पुणो वि सो नम्मयं[5] इमं भणइ ।
'अम्हाण वि देवाणं सुणसु सरूवं तुमं भद्दे ! ॥ २६२

सुयणु ! अम्ह संतिया देवा अप्पडिमल्ला इच्छाए हसंति, इच्छाए कीलंति गायंति नच्चंति । जइ रूसंति सावे य पयच्छंति, जइ तूसंति वरे [य]वियरंति । तेण जुत्ता तेसिं पूयाविहाणेणाराहणा । तुम्ह संतिओ वीयरागदेवो न रुट्ठो निग्गहसमत्थो, न तुट्ठो कस्स वि पसिज्जई[6] । ता किं तस्साराहणेण ?' तो नम्मयासुंदरीए भणियं – 'एए हाससोससावाणुग्गहपयाणभावा सव्वजणसामन्ना, ता देवाण जणस्स य को विसेसो ? जं च भणसि "सावाणुग्गहपयाणविगलस्स किमाराहणेण ?" तत्थ सुण । मणिमंताइणो अचेयणा वि विहिसेवगस्स समी-

१ अम्हाणं. २ पुहेहिं. ३ °विदेवं. ४ सवित्थुरं. ५ नम्मय. ६ पसज्जइ.

हियफलदाइणो भवंति, अविहिसेवगस्स अवयारकारिणो भवंति। एवं वीयरागा वि विहिअविहिसेवगाण कल्लाणाकल्लाणकारणं संपज्जंति।' पुणो भणियं महेसरदत्तेण–'जइ न रूससि ता अन्नं पि किं पि पुच्छामि।' तीए भणियं–'पुच्छाहि को धम्मवियारे[1] रूसणस्सावगासो?' इयरेण भणियं–'जइ तुम्ह देवो वीयरागो ता कीस न्हाइ कीस गंधपुप्फाइनट्टगीयाइं वा पडिच्छइ।' तओ ईसि हसिऊण भणियं नम्मयाए–'अहो निउणबुद्धीओ तुमं अओ चेव अरिहो सि धम्मवियारस्स, ता निसामेह परमत्थं। अरहंता भगवंतो मुत्तिपयं संपत्ता। न तेसिं भोगुवभोगेहिं पओयणं। जं पुण तप्पडिमाणं ण्हाणाइ कीरइ एस सव्वो वि ववहारो सुहभावनिमित्तं धम्मियजणेण कीरइ, तओ चेव सुहसंपत्ती भवइ' त्ति। तओ महेसरदत्तो भणइ–'सुलहाइं इत्थियाणं पडिउत्तराइं। जओ पढिज्जइ विउसेहिं–

दो चेव असिक्खियपंडियाइँ दीसंति जीवलोगम्मि।
कुक्कुडयाण य जुद्धं तत्थुप्पवं(?) च महिलाण॥ २६३

सुंदरि! विजिओ वाए अहं तुमए।' सुंदरीए भणियं–'मा एवं भणह। न मए वायबुद्धीए किं पि भणियं। किंतु तायाईण [प ९ B] अईवल्लहो तुमं, तेण इहागयस्स मए पाणेहिंतो वि पियं घरसारभूयमेयं नियधम्मपाहुडं तुहोवणीयं।' इयरेण भणियं–'ममावि मामय[3]धूया तुमं ति गोरवट्ठाणं वट्टसि,[4] ता पडिच्छियं मए तुह संतियं पाहुडं' ति भणंतो उट्ठिओ महेसरदत्तो।

तप्पभिइमेव धम्मं नाउं काउं च सो समारद्धो।
मूढजणोहसणाणं कन्नमदेंतो सुथिरचित्तो॥ २६४

[महेसरदत्तस्स मायामहसमीवे नम्मयासुंदरीअत्थे पत्थणा]

गहिओ सावगधम्मो भणइ य मायामहं अह कयाइ।
'कीरउ एक्क पसाओ दिज्जउ मम नम्मयं ताय!॥' २६५

सो याऽऽह–'को न इच्छइ संजोगं नागवल्लिपूगाणं।
नवरं तुह परिणामं अम्हे सम्मं न याणामो॥ २६६

अम्ह कुले एस कमो घेत्तुं जो चयइ वीरजिणधम्मं।
जाईकुलपंतीणं बज्झो सोऽवस्स कायव्वो॥ २६७

एत्तो चिय तुह माया चत्ताऽम्हेहिं न कोवदोसेण।
को सक्को[5] नियदुहियं विसुद्धसीलं जए मोत्तुं?॥ २६८

१ °वयारे. २ गइ°. ३ ममाय°. ४ वट्टइत्ति. ५ सक्का.

पुत्त! पिओ सयणाणं गेहं गंतूण चयसि जइ धम्मं।
दिक्खा वि इमा कन्ना तुमं च ता दूरओ होसि॥' २६९
भणइ महेसरदत्तो—'न मए कवडेण एस पडिवन्नो।
जिणपन्नत्तो धम्मो ता मा एवं विगप्पेह॥' २७०
'परिभाविऊण सम्मं जं जुत्तं वच्छ! तं करिस्सामो।
मा होसु उच्छुगो[1] तं पुच्छामो मामए तुज्झ॥' २७१
'एवं'ति तेण वुत्ते सिट्ठं गंतूण तेण एगंते।
इब्भेण सपुत्ताणं भणियं—'तो किमिह जुत्तं'ति॥ २७२
आह तओ सहदेवो—'धुत्ताणं ताय! को णु पत्तियइ।
किंतु निसुणेह एगं मह वयणं एगचित्तेण॥ २७३
बहुजणरंजणकज्जे उब्भडवेसाउ होंति वेसाओ।
न तहा कुलंगणाओ नियसणपरिओसरसियाओ॥ २७४
धम्मरया वि हु पुरिसा कित्तिमसाभाविया कलिज्जंति।
अब्भुब्भडसाहावियकिरियाकरणेहिँ निउणेहिँ॥ २७५
जह चेव जणसमक्खं तहेव एगागिणो जइ कुणंति।
ता नज्जइ सुस्समणो सुसावओ वा सुबुद्धीहिँ॥ २७६
एस महेसरदत्तो[2] जणरंजण[3]कारि उब्भडं किं पि।
न कुणइ न चेव जंपइ कुणइ विसुद्धं अणुट्ठाणं॥ २७७
सच्चविओ सो य मए एगागी चेइयाइँ वंदंतो।
रोमंचंचियगत्तो संपुन्नविहिं[4] [5]अणुट्ठिंतो[5]॥ २७८
सब्भावसावगो खलु तम्हा एसो न इत्थ संदेहो।
एसा वि अम्ह धूया निच्चलचित्ता जिणमयम्मि॥ २७९
ता कीरउ संजोगो एयाण न किं चि अणुचियं मुणिमो।
अहवा जं पडिहासइ तायस्स तमेव अम्हाणं॥ २८०
सुंदर! अमोहबुद्धी सुदीहदंसी तमाउ को अन्नो।
ता की[र]उ एवमिणं' इय भणिए उसभदत्ते[प. १० A.]ण॥ २८१
जे नयरम्मि[6] पहाणा गणया सव्वे वि ते समाहूया।
संपूइऊण भणिया 'विवाहलग्गं गणह सारं[7]॥' २८२
नाउं रविगुरुसुद्धिं सुमीलियं[8] तह[9] य जम्म[10]रिक्खाणं।
तिहिनक्खत्तपवित्ते ससिबलजुत्तम्मि दिवसम्मि॥ २८३

1 उच्छगो. 2 °वेलाउ. 3 °रंसण°. 4 °विही. 5 अणुट्ठंतो. 6 नयरम्मि. 7 गणसहारं. 8 सुसीलियं. 9 वह. 10 जस्स°.

संपुन्नगहबलं सवसुंदरं सोहियं तहा लग्गं ।
सयलसुहसिद्धिजणयं एगग्गमणेहिँ गणएहिँ ॥ २८४

[नम्मयासुंदरीविवाहोसवो]

तमायन्निऊण नम्मयासुंदरीए विवाहो त्ति हरिसिओ नयरलोगो । उब्भियाइं[1] घरे घरे तोरणाइं, ठाणे ठाणे पिणद्धाओ[2] वंदणमालाओ, मंदिरे मंदिरे पवज्जियाइं मंगलतूराइं, पणच्चियाओ स्रुहवनारीओ, जाओ परमाणंदसमुद्दनिबुड्डो[3] इव सुहियओ पुरिसवग्गो । सहदेवेणावि तिय-चउक्कचच्चराईसु पवत्तियाइं अवारियसत्ताइं, निमंतिओ सयलनायरलोगो, सम्माणिओ वत्थतंबोलाइएहिं । किं बहुणा ? –

वज्जंततूरमणहरं, नच्चंतलोयसुहयरं;
पढंतभट्टचट्टयं, पए पए पयट्टयं;
पमोइयासेसमग्गणं, जणसंवाहविसट्टहारखंडमंडियघरंगणं;
कीरंतको[उ]यमंगलसोहणं, सयलपेच्छयजणमणमोहणं;
पिईमाइचित्तभारनिम्महणं[5], संजायं नम्मयासुंदरी-महेस[र]दत्ताणं पाणिग्गहणं ।

अवि य –

दाणेण य माणेण य पिउणा तह तोसिओ जणो सवो ।
आसीवायसयाइं अबत्थगओ वि जह देइ ॥ २८५
भणइ जणो – 'भो सुंदर ! केहि तुमं आगओ सि सउणेहिँ ।
जं एसा संपत्ता घरणी लच्छि व पच्चक्खा ॥' २८६
अन्नाओ वुड्ढाओ अक्खयमुट्ठिं[7] सिरम्मि मोत्तूण ।
जंपंति – 'नंद मिहुणय ! णहंगणे जाव ससि-सूरा ॥' २८७
'अणुरूवो संजोगो विहिणा घडिओ' भणंति अन्नाओ ।
'कोमुई-गहनाहाण य मा विरहो होज्ज कइया वि ॥' २८८
इय नयरजणासीसे[9] पडिच्छमाणो[10] गुरूण कयतोसो ।
उप्पाइयनेहो नम्मयाएँ सो[11] संठिओ तत्थ ॥ २८९
आपुच्छिय सुहिसयणो महेसरो पत्थिओ नियं नयरं ।
जणएण दिन्नसिक्खा विसज्जिया नम्मया चलिया ॥ २९०
केहि वि दिणेहिँ पत्तो भडेहिँ वद्धाविया य रिसिदत्ता ।
कयमंगलोवयारा पच्चोणिं निग्गया सयणा ॥ २९१

---

१ उब्भियाइं. २ पिणद्धाओ. ३ °निबुड्डो. ४ पीइ°. ५ °चित्ताभारनिम्महणं.
६ °सुंदरीए महे°. ७ °मुट्ठि. ८ कोइमुइ°. ९ °सीसो. १० °माणा. ११ से.

तओ पढमाणेहिं मंगलपाढगेहिं अग्घिज्जमाणो पायमूले[1], पलोइज्जमाणो नयरलोएहिं, रोलंतवंदणमालं दुवारोभयपासपइट्ठियकणयकलसं पविट्ठो समं बहूए[2] महेसरदत्तो नियमंदिरं ति। निवडिओ चलणेसु जणयस्स जणणीए सेसगुरुजणस्स य। नम्मयासुंदरी वि चलणेसु निवडमा[प. १० B]णी चिरकालुकंठियाए रिसिदत्ताए समालिंगिऊण दिन्नासीसा पवेसिया निहेलम्मि।

परितोसियसुहिसयणं वद्धावणयं सवित्थरं काउं।
रिसिदत्ता परितुट्ठा कालं गमिउं समारद्धा॥ २९२
चियवंदणसज्झायं कुणमाणिं[3] नम्मयं सुणंतीओ।
गोयरिमिव हरिणीओ सासुरयाओ न तिप्पंति॥ २९३
उवसंतं सयलकुलं [ती]य समीवे सुणेइ जिणधम्मं।
परियाणियपरमत्थं जायं धम्मुज्जुयं[4] सव्वं॥ २९४
अह अन्नया[5] कयाई [·········]यणो।
भणइ महेसरदत्तो जणयं महुराएँ वाणीए॥ २९५
'ताय! इमो जिणधम्मो चिंतारयणं व दुल्लहो सुट्ठु।
लद्धूण कीस तुमए बालेण व उज्झिओ ज्झ त्ति॥ २९६
जइ कीरइ जीवदया अलियं चोरिकया य मुच्चंति।
पालिज्जइ बंभवयं कीरइ न परिग्गहारंभो॥ २९७
किं इत्थ ता न जुत्तं भणियमिणं सासणेसु सव्वेसु।
पागयनरा वि एए पंच वि बाढं[6] विबुज्झंति[7]॥ २९८
एए जो परिवज्जइ सो देवो सो गुरु त्ति किमजुत्तं।
समदोसाणं दोण्हं तारेइ तरेइ को भणसु॥ २९९
विन्नायमिणं सव्वं तुमए तइया गुरुप्पसाएण।
न य धरियं नियहियए चोज्जमिणं अम्ह पडिहाइ॥ ३००
आसाइयअमयरसो पिचुमंदरसस्स को नरो सरइ।
पत्तम्मि पुहइरज्जे हलियत्ते को मई कुणइ? ॥' ३०१
इय महुरगिरा भणिओ[8] लग्गो[9] मग्गम्मि जिणवरुद्दिट्ठे।
पच्छायावपरद्धो संविग्गो रुद्ददत्तो वि॥ ३०२
इय मुणियधम्मतत्तं सासुरयं सव्वमेव संपत्तं।
संगेण नम्मयासुंदरीएँ गुणरयणखाणीए॥ ३०३

१ °मूलेहिं. २ बिहूए. ३ कुणमाणी. ४ धम्मुज्जुयं. ५ अजया. ६ पाढं. ७ विपुस्संति. ८ भरणिओ. ९ लग्गो.

[मुणिपदत्तसावप्पसंगो]

अन्नदिणे भुत्तुत्तरकालं एगागिणी गवक्खम्मि ।
तंबोलपुन्नवयणा चिट्ठइ नयरं नियच्छंति ॥ ३०४
मुक्कोऽणाभोगाओ तंबोलावीलबहलगंडूसो[1] ।
सहस त्ति पमायाओ हेट्ठाहुत्तं[2] अपेहित्ता ॥ ३०५
सो खल्लिवल्लिनाया इरियाउत्तस्स[3] खवगसाहुस्स ।
सहस त्ति सिरे पडिओ तुरियं पि हु वच्चमाणस्स ॥ ३०६
आलिंगियं च अंगं सहसा साहुस्स सोणबिंदूहिं ।
अवलोइओ न कोई नियच्छमाणेणुवरिहुत्तं ॥ ३०७

जाहे न कोइ उवलद्धो ताहे कोवानलपरद्धमाणसेण भणियमुवसइं—'जेण केणावि पक्खित्तमेसो इहेव जम्मे घोरवसणमणुभविस्सइ ।' ताहे को एसो त्ति संभंताए पलोयमाणीए सच्चविओ[4] महारिसी । तयणु 'हद्धि कयं मए महापावं' ति संभंती ओतिन्ना पासायाओ, गहियफासुयसलिला गया मुणिसमीवं तुरियं । पक्खालि[प. ११ A.]ऊण मुणिअंगाइं लूहिऊण य चोक्खवत्थेहिं कयपंचंगपणामा रोयमाणी भणिउं पवत्ता—'भयवं महापावा हं जीए तुह सयलसत्तवच्छलस्स देवासुरमणुयपूयणेज्जस्स एयारिसं समायरियं ति । पमायमहागहमोहियाए न[5] निज्झाइओ भूमिभागो, ता खमाहि मे महंतमेगमवराहं ति । तुब्भे चेव खमिउं जाणह, तुब्भे चेव खमासीला, तुब्भे चेव सव्वजीवहियाणुपेहिणो[6] ।' एवं पुणो पुणो पलवमाणिं[7] पेच्छमाणस्स य रिसिणो विज्झाओ हिययकुंडे कोवग्गी । सोमदिट्ठीए पलोयमाणस्स नमयासुंदरी एस[8] त्ति जायं पच्चभिन्नाणं । तओ साणुत्तावं[9] भणिया एसा—'महाणुभावे ! नमयासुंदरि ! न मए वियाणिया तुमं कोवानलपलित्तचित्तेण । संपयं पुण अदुट्ठभावा तुमं ति निच्छियं मए, ता नत्थि तुहोवरि रोसलेसो वि । ता धम्मसीले ! मा रुयाहि । कुणसु वीसत्था धम्माणुट्ठाणपालणं ति ।' तीए भणियं—'भयवं ! जहा आणवेह तुब्भे । किंतु बीहेमि दढं घोरवसणसावाओ, ता देहि मे अभयं' ति । साहुणा भणियं—'भद्दे ! ठिई[10] एसा सावो अन्नहा काउं न तीरइ त्ति, ता होसु तुमं देवच्चणदाणसीलतवाणुट्ठाणपरायणा । तओ सव्वं सुंदरं भविस्सइ' त्ति दिन्नपडिवयणो गओ सट्ठाणं रिसी । इयरी वि सावसल्लियमाणसा विसेसओ पवत्ता धम्मकज्जेसु ।

१ °गंडूसो. २ हट्ठा°. ३ °उः तस्स. ४ सच्चविओ. ५ नि. ६ सव्वे जीवहिया°. ७ पलवमाणी. ८ एञ्स. ९ °णुत्तावं. १० ठिई.

[महेसरदत्तनम्मयासुंदरीण जवणदीवं पइ पयाणं]

अन्नया महेसरदत्तो उज्जाणे कीलंतो भणिओ सिणिद्धमित्तेहिं[1]– 'किमम्हं[2] कूवदद्दुरेणेवादिट्ठदेसंतराण जीविएण? किं वा जणणिसमाए जणयविढत्ताए लच्छीए परिभुाएण कीरमाणेहिं चाय[3]भोगाइविलासेहिं? अवि य–

नियभुयविढत्तदव्वो मणोरहे मग्गणाण पूरिंतो।
विलसइ जो न जहिच्छं चलंतथाणू[4] न सो पुरिसो॥ ३०८
जे च्चिय भमंति भमरा ति च्चिय पावंति बहलमयरंदं।
मंदपरिसक्किराणं होइ रई निंबकुसुमेसु॥ ३०९
अइपंडिओ वि पुरिसो अदिट्ठदेसंतरो हवइ अबुहो।
देसंतरनीईओ भासाओ वा अयाणंतो॥ ३१०
पुन्नापुन्नपरिच्छा कीरइ दढमप्पणो मणुस्सेहिं।
हिंडंतेहिँ धणज्जणकज्जे नाणाविहे देसे॥ ३११

किं बहुणा?–

होसु तुमं अम्हाणं [सव्वाणं] अग्गणी जवणदीवं।
वच्चामो नाणाविहमणिमोत्तियरयणपडिहत्था॥' ३१२
एवं बहुप्पयारं[5] वयंसयाणं सुणेत्तु विन्नत्तिं।
आह महेसरदत्तो– 'किमजुत्तं होउ एवं ति॥' ३१३

तओ आपुच्छिऊण नियनियजणए पारद्धा संजत्ती– गहियाइं तद्दीवपाउग्गाइं भंडाइं, पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, सज्जिया निज्जामया, निरूवियं[6] पत्थाणदिवसं। एत्थंतरे पुच्छिया भत्तुणा नम्मयासुंदरी– 'पिए! वच्चामो वयं जवणदीवं।' नम्मयाए भन्नइ– 'हो[प. ११ B]उ एवं, ममावि सायरदंसणसुइं संपु[रि]ज्जं[7]' त्ति। इयरेण भणियं– 'तुमं ताव अंब-तायपायसुस्सूसणपरा इहेव चिट्ठाहि जाव वयमागच्छामो।'

पडिभणइ सुंदरी तं– 'मा एरिसमाणवेसि कइया वि।
न तरामि तुह विओए पाणा धरिउं मुहुत्तं पि॥ ३१४
अवि जीवइ कुंथुरिया नीरविउत्ता वि कित्तियं कालं।
तुह विरहे पुण नियमा सहसा पाणेहिँ मोच्चामो॥ ३१५
एक्कपए च्चिय पिययम! किं एवं निट्ठुरो तुमं जाओ।
किं नु[8] सुया चेव तए लोगपसिद्धा इमा गाहा॥ ३१६
भत्ता महिलाण गई भत्ता सरणं च जीवियं भत्ता।
भत्तारविरहियाओ वसणसहस्साइँ पावंति॥' ३१७

---

१ °मेत्तेहिं. २ किमिम्ह. ३ चाइ°. ४ °थाणु. ५ °वयारं. ६ निरवयं. ७ संपुज्जंति. ८ तु.

भणइ महेसरदत्तो– 'सुंदरि'! अच्चंतभीसणो जलही।
तेण तुमए समाणं गमणं न हु [जु]ज्जए काउं॥ ३१८
मा कुण बालग्गाहं मह भणियं सुयणु! सव्वहा कुणसु।
आणाकारि कलत्तं सलहिज्जइ लोयमज्झम्मि॥' ३१९
निच्छयनिवारणत्तं आयन्नियं नम्मया तह परुन्ना।
जह निट्ठुरो वि भत्ता जाओ करुणापरो घणियं॥ ३२०
भणइ य पुणो वि– 'सुंदरि! रोयसि तं कीस तुह दुहभएणं।
अहमाइसामि एवं मा मन्नसु कारणं अन्नं॥' ३२१
सा साहुभावभीया विरहं दइएण सह अणिच्छंती।
भणइ– 'सुहं दुक्खं वा तुमए सहिया सहिस्सामि॥ ३२२
अहवा चिट्ठ गिहे चियं अहवा मं नेहि अप्पणा सद्धिं।
जइ ता जीवंतीए पुणो वि मिलियाइ तुह कज्जं॥' ३२३
विन्नायनिच्छयं तो अणुणेत्ता नम्मयं महुरवयणं।
भणइ महेसरदत्तो– 'तं काइं जंपियं तुज्झ॥' ३२४
सो नम्मयाइ सहिओ सहिओ मेत्तेहिं एगचित्तेहिं।
भडचडयरेण गुरुणा पत्तो मरिनम्मयाकूलं॥ ३२५

तत्थ य पत्तेहिं संजत्तियाइं पव[ह]णाइं आयामेण वित्थरेणावि पावंचासहत्थंपमाणाइं, मुणिकुलाइं व परिहरियलोहाइं पहाणगुणसंजमपगिट्ठकट्ठाहिट्ठियाइं च, चित्तकम्माइं पिव सुनिम्मायविचित्तभूमिभागाइं बहुवन्नरूवयसंगयाइं च। कओ तेसु बहुकालजोग्गजलधणधन्नाइसंगहो, निबद्धा चउसुं पि दिसासु नंगरा, पवेसियाइं च पसत्थवासरे गंभीरनीरे पोयपवेसठाणे। आरूढा नियनियजाणवत्तेसु संजत्तिया। महेसरदत्तो वि समारूढो सह पिययमाए विसेसरमणिज्जे उवरिमभूमिविरइए वासमंदिरे। तो कुसलनिज्जामगकन्नधारेहिं पाविय‌ऽणुकूलपवणप्पयारेहिं विमज्जियाइं पवेसियाइं च महासमुद्दं जाणवत्ताइं। कत्थइ गिरिसिहरायमाणमहल्लकल्लोलेहिं गयणाभिमुहं निज्जमाणाइं, अन्नत्थ विलीयमाणेहिं तेहिं चेव पायालं पिव पवेसिज्ज[प. १८ A]माणाइं, खलिज्जमाणाइं महामच्छेहिं, पेल्लिज्जमाणाइं जलहत्थिमत्थएहिं, आहम्ममाणाइं मगरनक्कपुच्छच्छडाहिं, विलग्गंमाणाइं विदुमवणगहणेसु, उप्पयमाणाइं पिव पवणुद्धुयसेयवडेहिं गयाइं अणेगाइं जोयणसयाइं। तओ नम्मयासुंदरी[ए] भणियं– 'सामि! अच्चंतभीसणो एस समुद्दो तेण जिणसासणे संसारउवमाणं

१ सुदरि. २ सलहेज्जइ. ३ आइन्निय. ४ दुट्ठभाएण. ५ विय. ६ गुरुणो.
७ °वाहसत्थ°. ८ °रमणेज्ज. ९ °महल्लि°. १० विलिग्ग°. ११ विहुम°.

कीरइ । अन्नं च कत्थ गया नगरकाणणामया मेइणी, रविससिगहाइणो वि ? एए किं जलयरा जेण जले उग्गमंति जले चेव अत्थमंति?' इयरेण भणियं – 'सुंदरि ! मा भाहि पभूयमन्नं वि अपुव्वं दट्ठव्वं ।' तीए भणियं – 'तए सन्निहिए कयंताओ वि न बीहेमि ।' इच्चाइ समुल्लावपवत्ताणं वोलिया णेगे दियहा ।

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीचरियम्मि कुसंका]

अन्नया मज्झरत्तसमए[1] कोइ पुरिसो सुइसुहयं किंपि गाइउं पवत्तो । तस्स सरं सुणमाणीए नम्मयासुंदरीए मरियं मरमंडलं पगरणं[2] विन्नायं च तस्स सरूवं । तओ अइपरिओसाओ भणिओ भत्ता – 'जो एस पुरिसो गायइ तस्स[3]रूवमहमिहट्ठिया चेव जाणामि ।' 'केरिसं ?' ति वुत्ते साहिउं पवत्ता – 'पिययम ! एस ताव[4] वन्नेण सामो पंसुलो पंसुलजुवइवल्लहो य । अन्नं च एयस्स गुज्झदेसे पवालसमवन्नो मसो अत्थि ।' तं सोऊण विम्हिएण भणियं भत्तुणा – 'कहं पुण तुममिहट्ठिया जाणासि[5] ?' तीए भणियं – 'सवन्नुवयणाओ ।' तओ 'सच्चमेयं न व ?' त्ति गंतूण बीयदिवसे एगंते पुच्छिओ सो तेणावि 'एवमेयं' ति भणिए समुप्पन्नविलीओ समालिंगिओ ईसापिसाईए असंभावणिज्जा[6] इमं भाविउं पयत्तो । अवि य –

ईसावसेण पुरिसा हवंति धुत्तूरिय व्व विवरीया ।
न नियंति गुणं संतं दोसमसंतं पि पेच्छंति ॥ ३२६
चिंतेइ कहं जाणइ गुज्झपएसट्ठियं[7] मसं[8] एसा ।
जइ ताव न परिमिलिओ पंसुलपुरिसो इमो बहुहा[9] ॥ ३२७
नूण निरंतरमेसो एयाए हिययमंदिरे वसइ ।
अन्नह किह देइ मणो एसा[10] एयस्स गीयम्मि ॥ ३२८
एसो वि महा[11] धुत्तो गायइ उच्चं निसीहसमयम्मि ।
जेण निसामेइ इमा संकेओ वा इमो दुन्हं ॥ ३२९
मोत्तूण चंदणं मच्छियाउ[12] लग्गंति असुइदव्वेसु ।
पयई इह महिलाणं विलीणपुरिसेसु रज्जंति ॥ ३३०

भणियं च –

अइरूवयाण लज्जं कुणंति बीहंति पंडियजणस्स ।
महिलाण एस पयई काणय[13]कुंटेसु रच्चंति ॥ ३३१

---

१ °मज्झ. २ पयगरणं. ३ यस्स°. ४ ताव. ५ जाणामि. ६ असंभावणेज्जा. ७ °पएसं ठियं. ८ मस. ९ बहुहण. १० एसो. ११ सुहा°. १२ मिच्छियाउ. १३ काणइ°.

अन्नं चिंतिंति[1] मणे पेसलवयणाइँ दिंति अन्नस्स ।
[अन्नस्स] निद्धदिट्ठिं खिवंति रामंति पुण अन्नं ॥ ३३२
तह दंसिओ सिणेहो तहा तहा रंजियं मणं मज्झ ।
एया एरिसचरिया[2] अहो महेलाण निउणत्तं ॥ [प. १२ B] ३३३
एयस्स विरहमीया[3] नूणं एसा ठिया न गेहम्मि ।
बहुकूडकवडभरिया नज्जइ पुण उज्जुया एसा ॥ ३३४
का होज्ज एत्थ दूई किं नामं केयठाणमेएसिं ।
कह नाम वंचिओ हं एयाए गूढचरियाए ॥ ३३५
मिज्जइ जलहिस्स जलं तोलिज्जइ मंदरो य धीरेहिं ।
कूडकवडाण भरियं दुन्नेयं महिलियाचरियं ॥ ३३६
कुवियप्पसप्पग[सि]ओ पणट्ठसन्नो इमो दढं जाओ ।
पम्हट्ठधम्मकम्मो परलोयभएण वि विमुक्को ॥ ३३७

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीपरिच्चाओ]

विम्हारिऊण सव्वं गुरूवएसे पयत्तपत्ते वि ।
तम्मारणेक्कचित्तो चिंतइ कोहाउलो एवं ॥ ३३८
को होज्ज मे पयारो जेण इमा दिट्ठिगोयरे मज्झ ।
चिट्ठइ न खणं पि खला मलिणियनिम्मलकुला पावा[4] ॥ ३३९
जइ ता घाएमि सयं[5] अवन्नवाओ तओ दढं होइ ।
जम्हा जणो न याणइ दुच्चरियं को वि पावाए ॥' ३४०
छणमग्गणत्थमच्छइ[6] गोवियकोवो विसेसियपन्नाओ ।
जइ कह वि निसातिमिरे छुभेज्ज एयं[7] समुद्दम्मि ॥ ३४१
सम[इ]क्कंते दियहे वट्टंते रयणिपढमजामम्मि ।
निज्जामएण कणइ घुट्ठं उद्दामसद्देण ॥ ३४२
'भो अत्थि जलहिमज्झे दीवं निम्माणुसं अइपमाणं[8] ।
नामेण भूयरमणं तम्मि पहायम्मिं[9] गंतव्वं ॥ ३४३
तत्थऽत्थि महाहरओ गंभीरो महुरनीरपडिपुन्नो ।
घेत्तव्वं तत्थ जलं सुणंतु संजत्तिया सव्वे ॥' ३४४
सोऊण घोसणं तं महेसरो पमुइओ विचिंतेइ ।
'होही सुंदरमेयं छड्डिस्सं तत्थ दीवम्मि ॥' ३४५

---

१ चिंतिंति. २ एरिसं चरियं. ३ °भीहा. ४ पाया. ५ सयं. ६ मत्थइ.
७ यं. ८ °मपाणं. ९ पहाइम्मि.

तत्तो पहायसमए पोयं धरिऊण दीवनियडम्मि।
जलगहणत्थं चलिओ पवहणलोगो तहिं बहुओ॥ ३४६
भणइ महेसरदत्तो – 'पेच्छामो ता वयं इमं दीवं।
जइ रोयइ तुह सुंदरि!' तीए भणियं – 'हवउ एवं॥' ३४७
चलियाइँ तओ दुन्नि वि सलिलं पाऊण तम्मि हरयम्मि।
'अइरमणिओ दीवो पेच्छामो ताव एयं पि॥' ३४८
इय एवं जंपंतो हियए दुट्ठो मुहम्मि पियवाई।
परिसक्किउं पवत्तो दंसिंतो तीएँ वणराई॥ ३४९
कत्थइ असोगतरुणो निरंतरं मेहवंदसारिच्छा।
कोइलकलरवमुहला कत्थइ सहयारतरुनिवहा॥ ३५०
फलरससित्तधराओ निरंतराओ कहिंचि सिंदीओ।
नालीरीओ कत्थइ अविरललुंबंतलुंबीओ॥ ३५१
कत्थइ दाडिमरुक्खा कत्थइ जंबीरगहिरगुम्माइं।
कत्थइ दक्खामंडवछायापरिसुत्तसारंगे॥ ३५२
दाइंतो दइयाए सुंदरवणराइराइयं दीवं।
पत्तो हरयासन्नं पेच्छइ व[प. १३ A]णगहणमइगुविलं॥ ३५३
मालइजाईकलियं साहावियकयलिगेहकयसोहं।
दट्ठूण भणइ – 'सुंदरि! संता परिसक्कणेण तुमं॥ ३५४
ता माणेमो[3] एयं कयलीहरयं मणोहरच्छायं।
तरुपल्लवेहिँ सेज्जं काऊण खणं पि वज्जामो॥' ३५५
तीए 'तह' त्ति भणिए रइयाए सुहयरीएँ सिज्जाए।
सुत्ता पसन्नचित्ता सुविसत्था नम्मया तहियं॥ ३५६
चेत्तस्स सच्छयाए परिस्समाओ सुसीयपवणाओ।
भयसंभमरहियमणा वसीकया झ[4] त्ति निद्दाए॥ ३५७
इयरो वि कूरचित्तो दट्ठुं निद्दापरवसं एयं।
सणियं ऊसरिऊणं पहाविओ वहणजणसमुहो॥ ३५८
दोहिँ वि करेहिँ सीसं निविडं[5] वच्छ[त्थ]लं च ताडिंतो।
लल्लक्कमुक्कपुक्को 'हा हा! मुट्ठो' त्ति पलविंतो॥ ३५९
सहस त्ति तओ भणिओ रोवंतो वारिऊण मित्तेहिं।
'सत्थवइ! केण मुट्ठो कहिं च[6] सा वल्लहा तुज्झ?॥' ३६०

१ मेहवंद°. २ °सुहला. ३ ल माणेमो. ४ च्च. ५ निविडं. ६ चि.

सो आह – 'इत्थ गहणे अत्थि महारक्खसो अइप्पमाणो ।
पेच्छंतस्स य दइया खणेण कवलीकया तेण ॥ ३६१
अहमवि देवनिओआ पलायमाणो इहं समायाओ ।
संचलह ताव तुरियं खज्जामो तेण मा सवे ॥' ३६२
इय भेसिएहिँ[1] तेहिं सहसा परिपिल्लियाइँ वहणाइं ।
संठाविओ य एसो रुयमाणो कह वि किच्छेण ॥ ३६३
तो सो वि सुट्ठु तुट्ठो चिंतइ 'सिद्धं[2] समीहियं मज्झ ।
निच्छूढा सा पावा निवारिओऽवन्नवाओ वि ॥' ३६४

[नम्मयासुंदरीए सुन्नदीवम्मि पलावो]

नमयासुंदरी वि सुइरमच्छिऊण निद्दावगमे विउद्धा, उट्ठावणबुद्धीए भत्ताराभिमुहं भुयं पसारेइ । तत्थापेच्छंती तं दइयपासं निरूवेइ 'नूणं सरीरचिंताइकज्जे कत्थइ गओ । मा निद्दाविग्घं ति नाहं विबोहिया, तुरियमेवेहेहि[3]' त्ति ठिया मुहुत्तं । जाव नागच्छइ ता 'मम धीरियं परिच्छइ' त्ति भाविंती भणइ– 'पाणवल्लह ! कओ अबलाणं धीरिमा ? तुरियमेहि बीहेमि एगागिणी । किं वा लिह(निलु ?)क्कणखेड्डयमारद्धं ? दिट्ठो सि मालइडालंतरिओ, कयलीवणे चिट्ठसि । हसिओ चेव परिहासो सुंदरो होइ, एहि तुरियं, वाहराहि[4] वा जेणाहमागच्छामि ।' बहुं पि भणिए न कोइ जंपइ 'नूणं सत्थाभिमुहो गओ भविस्सइ त्ति । सत्थरोलो[5] वि [न ?] सुव्वइ [त्ति ?]' संभवा संठविओवरिल्लकडिल्ला पहाविया, पत्ता वासट्ठाणं । तं पोयट्ठाणं पि सुन्नं दट्ठूण दढमाउलीहूया चिंतइ 'सव्वमेयँमसंभावणिज्जं, नूणं सुमिणय[प. १३ B]महं पेच्छामि । भूयपेयाइणा वा केणावि विमोहिय म्हि' त्ति भीयहियया रोयमाणी विलविउं पवत्ता । कहं ? – 'हा कंत ! नाथ ! दइय ! नाहं पेच्छामि मोहिय म्हि केणावि, देहि देहि दंसणं निग्घिणो सि[6]' एवं कहि जाओ ।

वीसरिया कीस अहं बहुजणवावारमाउलमणस्स ।
अहवा न घडइ एयं कहेहि ता कारणं अन्नं ॥ ३६५
काऊण मज्झ रूवं वेलविओ किमसि [भूय]रूवेण ।
भूयरमणु त्ति नामं सुव्वइ एयस्स दीवस्स ॥' ३६६
मुच्छिज्जइ खणमेक्कं खणमेक्कं लद्धचेयणा रुयइ ।
कुणइ पलावे विविहे खणं खणं किं पि झाएइ ॥ ३६७

१ भेमेसिएहिं. २ सिद्धं. ३ °वेहेहे. ४ वाहिराहि. ५ सत्थारावो. ६ °मेयम°. ७ सि.

एमेव सुन्नपु(सु)न्ना वणंतराइं खणं निहालेइ।
'एएहि दइय! दइयय!' वाहरइ पुणो पुणो मूढा॥ ३६८

सोऊण य पडिसद्दं तत्तोहुत्तं पहावए तुरियं।
पुणरवि अपेच्छमाणी कुणइ पलावे बहुपयारे॥ ३६९

भणइ वणदेवयाओ – 'तुब्भे जाणह फुडं कहह मज्झ।
मोत्तूण मं पसुत्तं कत्थ पलाणो पिओ सो मे[1]?॥' ३७०

सोऊण सउणविरवं एसो मं कोकई[2] त्ति पहसंती।
धावइ तत्तोहुत्तं अपिच्छमाणी पुणो रुयइ॥ ३७१

एवं जाव दिणंते[3] रुयमाणिं[4] तं तहा करुणसद्दं।
दट्ठुमचाइंतो इव सूरो बुड्डो जलहि[मज्झे]॥ ३७२

दट्ठूण पजंपइ – 'किं नं नियसि अंधारियं [तुमं?] भुवणं?।
"एगागिणी वराई कह होही सा पिया मज्झ॥" ३७३

भुज्जो वि करुणसद्दं तह रुन्नं तत्थ भीयहियियाए।
जह दीवदेवयाओ समं परुन्नाउ णेगाओ॥ ३७४

अलहंती निद्दसुहं ताडंती नियउरं पुणो भणइ।
'किं हियय! वज्जघडिय न फुट्टसि जं एरिसे वसणे॥' ३७५

उदहिरवं अइभीमं निसुणंती विविहसावयसरे य।
कंपंतसयलगत्ता कह [वि] गमेई तयं रयणिं[5]॥ ३७६

ताव [य] उइओ सूरो विहुणेत्ता रयणितिमिरपब्भारं।
किं जियइ सा वराई किं वा वि मय त्ति नाउं वा॥ ३७७

उच्चत्थलमारूढा[7] निज्झायंती दिसाउ सव्वाओ।
भणइ – 'कहिं[8] नाह! गओ इक्कसि मे देहि पडिवयणं॥ ३७८

वच्चामि कत्थ संपइ कं सरणमुवेमि कस्स साहेमि?।
पिययम! सुन्नारन्ने कत्तो ठाणं लहिस्सामि?॥ ३७९

कम्मे जणे[ण] केणइ मन्ने तं नाह! मज्झ रूसविओ[9]।
तह वि[10] पडिवन्नवच्छल! काउं न हु एरिसं जुत्तं॥ ३८०

किर जीवदयासारो उवइट्ठो मुणिवरेहिँ तुह धम्मो।
सो वीसरिओ किं मं सुन्नारन्ने चयंतस्स॥ ३८१

---

१ मो. २ कोकइ. ३ दिणंतं ४ रुयमाणी. ५ किञ. ६ रयणी. ७ तो उच्चत्थ°. ८ कहि. ९ रूसविओ. १० वि न पडि°.

जह परिच्चत्ता अहयं[1] दुज्जणवयणेहिँ मोहियमणेण ।
तह मा जिणवरधम्मं एगंतसुहावहं चयसु ॥ ३८२
मं मोत्तुमणो[2] जइ ता आसि तुमं कीस जणणिजणयाणं ।
पासे नाहं मुक्का जम्मंतरवेरिओ किं मे[3] ? ॥' ३८३

[नम्मयासुंदरीए धम्मज्झाणेण कालगमणं]

करुणं रुयमाणीए तीए उव्वेविएण भू(भू ?)एण ।
नहयलगएण दिन्ना फुडक्खरं एरिसा वाया ॥ ३८४
'नट्ठो सो पावपई मुद्धे ! किं रुयसि कारणे तस्स ? ।
किं पलविएण सुंदरि ! सुन्नारन्नम्मि एयम्मि ? ॥' ३८५

तं सोऊण नम्मयाए चिंतियं–

'आगासगया वाया एसा सुरजाइयस्स कस्सा[प. १४ A]वि ।
नूणं न होइ अलियं गओ पिओ मं पमोत्तूण ॥ ३८६
न कयं किं पि अजुत्तं आणा वि न खंडिया मए तस्स ।
तह दंसिऊण नेहं परिचत्ता कीस सुन्नम्मि ? ॥ ३८७
सुयणा सरलसहावा असमिक्खियकारिणो न खलु हुंति ।
एमेव अहं चत्ता अहयं कह तेण विउसेण ॥ ३८८
मुणिसावाओ भीया पडिया कह इत्थ दारुणे वसणे ।
कूयमिवाओ(?) तत्था खित्ता रुद्दे समुद्दम्मि ॥ ३८९
धी धी अहो ! अकज्जं कयं अणज्जेण विगयलज्जेण ।
संचालिऊण गेहा एत्थाहं पाडिया दुक्खे ॥ ३९०
अहवा न तस्स दोसो पुव्वकयं दारुणं समोइन्नं ।
तह सुट्ठिएण मुणिणा दिन्नो कहमन्नहा सावो ? ॥ ३९१
मु[णि]णो वि नत्थि दोसो महावराहेण चोइयमणस्स ।
उच्छलइ जेण अग्गी चंदणकट्ठे वि अइमहिए ॥ ३९२
किं झूरिएण[5] संपइ आयहियं सव्वहा विचिंतेमि ।
धीरेहिँ कायरेहिँ वि सोढव्वं जेण सुहदुक्खं ॥ ३९३
होऊण कायरा जइ करेमि मरणं न दुक्करं तं तु ।
किं तु अविहाणमरणं निवारियं वीरनाहेण ॥ ३९४
मन्ने ता धन्नाओ कुमारसवणीओ जीव[6]लोयम्मि ।
पियविप्पओगदुक्खं जाओ सुमिणे वि न मुणंति ॥ ३९५

१ अहई. २ °मणं. ३ मो. ४ खेत्ता. ५ झुरिएण. ६ जण°.

अहयं पि बालभावे जइ ता गेण्हेज जिणमए दिक्खं।
एयारिसदुक्खाणं नामं पि न ताव जाणंती॥ ३९६
अज वि जइ जीवंती जंबुद्दीवं कहं पि पाविज्जा।
गेण्हेस्सं[1] पवज्जं सुहत्थिसूरिस्स पामूले॥ ३९७
एत्तो इहेव नियमो पारिस्सं छट्ठभत्तपज्जंते।
नियमेण एगवारं फासुयफलपत्तपुप्फेहिं॥' ३९८
संठाविऊण हिययं घेत्तूण अभिग्गहं[2] इमं घोरं।
निहणइ[3] उदयस्स तडे संकेयपटं[4] चिरपसिद्धं॥ ३९९
'जिणधम्मो बोहित्थं साहू संजत्तिया सहाया मे।
निज्जामओ जिणिंदो भवजलही दुत्तरो कह णु॥ ४००
चत्तारि मंगलं मे अरहंता तह य सवसिद्धा य।
सवो वि साहुवग्गो धम्मो सवन्नुपन्नत्तो॥ ४०१
धन्ना हं जीय मए सामग्गी एरिसा समणुपत्ता।
भवसयसहस्सदुलहं निबंधणं सग्गमोक्खाणं॥ ४०२
ता संपइ मम देवो वीरजिणो विगयरागमयमोहो।
सयलसुरासुरमहिओ सहिओ अइसयसमूहेण॥ ४०३
संसारभउविग्गा एगग्गा गुरुवएसु जा लग्गा।
सेवंति सुद्धचरणं ते गुरुणो साहुणो मज्झ॥ ४०४
जीवाइए पयत्थे जिणभणिए सद्दहामि सवे वि।
न रमइ एकं पि खणं कुतित्थसत्थे मणं[5] मज्झ॥ ४०५
इय दढसम्मत्ताए पत्ताए दारुणम्मि वसणम्मि।
सा होज्ज मज्झ चिंता जीवामि मरामि वा इं[6] त्ति॥ ४०६
कित्तियमेयं वसणं महाणुभावेहिँ धीरचित्तेहिं।
सहियाइँ[7] मुणिवरेहिं सुवंति जिणागमे जाइं॥ ४०७
निप्फोडियाणि दोन्नि वि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि।
न[8] य संजमाउ[9] चलिओ मेयज्जो मं[प. १४ B]दरगिरि व॥ ४०८
कस्स न करेइ चोज्जं असमोपसमो चिलाइपुत्तस्स।
दुक्करकरणं पि तहा अवंतिसुकुमाल[10]महरिसिणो॥ ४०९
धन्नो गयसुकुमालो[11] मत्थयजलिएण जस्स जलणेण।
दड्ढं[12] असेसं सहसा कम्मवणं[13] चिरपरूढं[14] पि॥ ४१०

---

१ गेण्हिस्सा. २ अभिग्गहं ३ निसिहणइ. ४ संकेयवयं ५ खणं. ६ अह. ७ सहियाई. ८ वि. ९ संजमाओ. १० °सुकमाल°. ११ °सुकमालो. १२ दड्ढम°. १३ कम्मावणं. १४ °परूढं.

धन्नो मुणिवइसाहू धम्मज्झाणम्मि निच्चलो भणियं ।
दड्ढो[1] ससीसपाओ जलिएण वणे हुयासेण ॥ ४११
रिसिदत्ता-सीयाहिं अन्नाहि वि अंजणापमुक्खाहिं ।
सुव्वइ महासईहिं दुस्सहदुक्खाइँ[2] सोढाइं ॥ ४१२
ता जीव ! मा किलम्मसु उव्वेयं नियमणम्मि मा कुणसु ।
साहससहायसहिया कल्लाणसयाइँ पावंति ॥' ४१३
इय बहुविहमप्पाणं अणुसासिंती गमेइ सा कालं ।
वच्चइ य पोयठाणं दिणे दिणे उभयकालं पि ॥ ४१४
'जइ ता लहामि कत्थइ जंबुद्दीवाणुगामियं सत्थं ।
मिलिऊण सज्जणाणं करेमि ता उत्तमं चरणं ॥' ४१५
एवं चिट्ठंतीए वोलीणं माससत्तगं तत्थ ।
अमुयंतीए सत्तं सद्धिं सम्मत्तरयणेण ॥ ४१६
सक्काराभावाओ सीयायवपवणसोसियसरीरा[3] ।
तीए तणुयंगीएँ[4] संजाया केरिसी छाया ? ॥ ४१७

अवि य–

उत्तत्तकणयवन्नो देहो जो आसि पुव्वकालम्मि ।
सो लक्खिज्जइ इण्हिं पडियं नवमेहखंडं व[5] ॥ ४१८
कोहंडस्स व बिंटं कंठो तणुयत्तणेण संवुत्तो ।
तावससिरं व[6] सीसं केसेहिं जडत्तपत्तेहिं ॥ ४१९
परिसुसियनीलपंकयनालिं पिव सहइ बाहियाँ[7]जुयलं ।
पक्का मा[स]फली इव हत्थंगुलियाउ सुक्काओ ॥ ४२०
चुच्चुगमेत्तुवलक्खियपओहरं पयडपंसुलं वच्छं[8] ।
[illegible]यरतुल्लं उदरं खामत्तमुव्वहइ ॥ ४२१
कट्ठमयं पिव घडियं नियंबफलयं अमंसलं जायं ।
अइथूलगुंफियाओ[9] जंघाओ कागजंघ व्व ॥ ४२२
तं तारिसयं तीसे अंगं दट्ठूण नूणमुव्विग्गो ।
आसालग्गो जीवो न मुयइ वोढुं असत्तो वि ॥ ४२३

[नम्मयासुंदरीए चुल्लपिउणा सह मिलणं बब्बरकूलगमणं च]

एत्थंतरे नमयासुंदरीए पुन्नोदयरज्जुसंदाणिओ व्व बब्बरकूलं[10] उद्दिस्स चलिओ नम्मयापुराओ वीरदासो । कहाणयविसेसेण संपत्तो भूयरमणदीवासन्नं । दट्ठूणं

1 दड्ढा. 2 °दुक्खाइं. 3 °सरीरो. 4 °यगीए. 5 च. 6 च. 7 बाहिया°. 8 वत्थं.
9 अइथूलगुफियं जायं अइथूलगुंफियाओ जंघाओ. 10 बब्बर.°

नम्मयासुंदरीसमुब्भियं चिंधं भणिउमाढत्तो–'भो भो ! अत्थि इह दीवे कोइ भिक्खाहणिओ[1]। समओ एस पोयवणियाणं, एयं मोत्तूण न गंतवं। ता ठवेह एयस्स समीवे पवहणाइं।' ठवियाइं च तेहिं। तओ समुत्तिओ[2] समागओ हरयतीरे। दिट्ठाइं च मसिणधूलीए अचिरागयाए नमयासुंदरीए पयाइं। ताइं च सपुवाइं पिव मन्नंतो सविसेसं[3] पलोइऊण भणिउमाढत्तो–'भो भो वाणियगा! एह एह, दंसेमि किं पि कोउगं।' समागयाणं च दंसियाइं, भणियं च वीरदासे[प. १५A]ण–'न ताव एयाइं पुरिसपयाइं, जओ एएसिं पच्छिमभागो भारिओ इव लक्खिज्जइ। किं बहुणा? एयाइं नम्मयासुंदरीए संतियाइं पयाइं।' तेहिं भणियं–'अहो अच्छेरयं! कत्थ नम्मयासुंदरी?' वीरदासेण भणियं–'जइ अहमन्नो भवामि ता एयाइं पि अन्नाइं भवंति। एगागिणी य एसा, जओ पुरिसपयाइं नत्थि। चिरआगया यं[4] नज्जइ जओ पहओ[5] दंडओ एस। ता एह ताव सम्मं निरिक्खिमो' त्ति भणंतो चलिओ दंडएण। नाइदूरगएण निसुओ[6] जिणगुणपडिबद्धाइं[7] थुइथोत्ताइं पढंतीए सद्दो। पच्चभिन्नाया, 'मा संखोहं गच्छिही' [त्ति?] महया सद्देण भणियं–'निसीही'। सा वि कहिं इत्थ चुल्लबप्पो[8] त्ति विम्हिया अप्पाणं संठविउं सम्मुही समुट्ठिया[9]। तओ दट्ठूण वीरदासं पम्हुट्ठं[10] पि दुक्खं सयणजणदंसणे पुणन्नवं[11] होइ त्ति दुक्खभरभारिया चलणेसु निवडिऊण विमुक्ककंठं रोविउं पवत्ता। तओ–

खणमेक्कं रुयमाणी पडिसिद्धा [सा न] वीरदासेण।
उग्गिलियहिययदुक्खा जेण सुहं कहइ नियवुत्तं॥ ४२४
दोहि वि करेहिँ सीसं गहिऊणुद्धीकया खणद्धेण।
आलिंगिऊण गाढं निवेसिया नियय‌अंकम्मि॥ ४२५
भणिया–'पुत्ति! कहिज्जउ काऽवत्था एरिसी इमा तुज्झ।
साहिज्जउ वुत्तंतो असंभवो तुह कहं जाओ?॥' ४२६
आखमरिसिसावाओ[12] सिट्ठो तीए असेसवुत्तंतो।
'इह ठाणम्मि पसुत्तं मोत्तूण गओ पिओ जाव॥ ४२७
अहमवि [चि]रस्स बुद्धा सुन्नमणा एत्थ घणवणे दीवे।
अमुणियतण्हुण्हछुहा अवियाणियजामिणीदियहा॥ ४२८
गहगहिया इव भमिया "हा पिययम! हा पिय!" त्ति पलवंती।
भीमम्मि एत्थ दीवे केइ दिणे तं न याणामि॥ ४२९

---

1 °वाहणीओ. 2 समुत्तिले. 3 मविसेसं. 4 इ. 5 पहत. 6 मिसुओ. 7. °बद्धाइं. 8 °बप्पो. 9 सामुट्ठिया. 10 पम्हुट्ठ. 11 पुणुन्नवं. 12 °सावाउ.

कइवयँ[1]दिणपेरंते आगासगएण केणइ सुरेण।
भणियं "न एत्थ भत्ता कस्स कए रुयसि तं मुद्धे!॥" ४३०
मुणियं च मए सव्वं नूणं अवउज्झिया अहं तेण।
कत्तो अवराहाओ एयं पुण नेव जाणामि॥ ४३१
परिमुक्कजीवियासा भाविय संसारविलसियं विसमं।
जिणवरभणियं धम्मं करेमि ता ताय! एगग्गा॥ ४३२
अणवरयमेव सुव्वइ[2] अइघोरो एस जलहिनिग्घोसो।
सावयजणा अणेगे भमंति पासेसु भयजणगा॥ ४३३
कोकंति[3] कोल्हुयँगणा[4] निसासु फेक्कंति भसुयसंघाया।
घूरुग्घुरंति[5] वग्घा उप्पज्जइ नो भयं मज्झ॥ ४३४
ताव च्चिय होइ भयं निवसइ हिययम्मि जाव जीवासा।
सा वि मए परिचत्ता तत्तो कत्तो भउप्पत्ती॥ ४३५
झायंती[6] वीरजिणं भाविंती विविहभावणाजालं।
दूरियअट्टदुहट्टा तायाहं[7] एत्थ चिट्ठामि॥ ४३६
ताय! ममावि कहिज्जउ कहं [प. १५ B] तए जाणिया अहं इत्थ।
अच्चब्भुयं महंतं ताय! इमं भासए मज्झ॥' ४३७
तो[8] भणइ चुल्लबप्पो[9]–'पुत्ति! तुहावट्टिई[10] इह पएसे।
तह सुहियाए जाया किं न हु अच्चब्भुयं एयं॥ ४३८
सा संपज्जइ बुद्धी हुंति सहाया वि तारिसा चेव।
जारिसया जियलोए नरस्स भवियव्वया होइ॥ ४३९
न कयाइ मज्झ सुंदरि! मणोरहो आसि पोयवाणिज्जे।
अत्थि घरे च्चिय विहवो सुहाइँ संतोससाराइं॥ ४४०
तुह पुन्नचोइयस्स व जाया एयारिसी मई कह वि।
गंतुं बब्बरकूलं करेमि अत्थज्जणं इण्हि॥ ४४१
चलिओ मित्तेहिँ समं संपत्तो जाव इह पएसम्मि।
दिट्ठा सायरतीरे ताव पडाया पवणविहुया॥ ४४२
तं दट्ठुं[11] ओइन्नो सुंदरि! एयम्मि भूयरमणम्मि।
दिट्ठाइँ तुह पयाइं नायाइं परिचयगुणेणं[12]॥ ४४३
तेसिं अणुँ[13]सारेणं संपत्तो सुयणु! तुह समीवम्मि।
दिट्ठा सि तुमं संपइ निहि व दारिद्दतविएण॥ ४४४

---

१ कयवय°. २ मुज्झइ. ३ कोकति. ४ कोल्हय°. ५ घुरुघुरंति. ६ झायंति. ७ नायाहं. ८ नो. ९ °वप्पो. १० तुहावट्टिइ. ११ दट्ठं. १२ °गुणाण. १३ आणु°.

चिंतेमि तओ हद्धी सा तारिसरूपकंतिगुणकलिया ।
कह इमा मह धूया उवणीया एरिसमवत्थं ॥ ४४५
हा हा! खलो अणज्जो निल्लज्जो निग्घिणो[1] महापावो ।
को नाम हुज्ज पुरिसो जेण इमा पाडिया दुक्खे ॥ ४४६
नूणं न अत्थि ठाणं नरयं मोत्तूण तस्स पावस्स ।
जेण जणवल्लहगुणा एसा दुहसंकडे छूढा ॥ ४४७
कह से चलिया चलणा कह वा हिययं अइव[2] त्ति न हु फुट्टं[3] ।
कह सो जीवइ लोए जेण कयं एरिसं पावं? ॥ ४४८
हा बाले! हा वच्छे! सुलक्खणे! सरलसुंदरसहावे! ।
संपत्तं कह णु तए सुंदरि! एवंविहं दुक्खं? ॥ ४४९
अज्जेव तुमं जाया जाओ परमूसवो इमो अम्ह ।
दिट्ठा सि तुमं वच्छे! जीवंती कह वि तं अज्ज ॥' ४५०
भणियं च सुंदरीए—'सीईभूयाइँ मज्झ अंगाइं ।
जाया य जीवियासा तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥ ४५१
वसइ मम जीवलोओ विमलीभूयाइँ दिसिवहुमुहाइं ।
अमएण व सित्ता हं तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥' ४५२

तओ महुरवयणोदएणं निव्वावियदुक्खानलो[4] नीया वीरदासेण महइहासभलयाभवणे। अब्भंगिया कल्लाणतिल्लेण, उवट्टिया सुरहिसोमालेहिं उवट्टणेहिं, मज्जाविया तिहिं उदएहिं, अलंकिया पहाणवत्थाइएहिं, भोइया विविहोसहसणाहं सरीरसुहकारिणीमहापेज्जं। किं बहुणा[5]? महाविज्जेणेव विसिट्ठपत्थाइएहिं तहा तहा पडियरिया जहा थेवेहिं चेव वासरेहिं जाया साहावियसरीरा। तओ भणिया तेण सहायमणुस्सा—'भो! संपत्तो अम्ह मणोरहाइरित्तो महालाभो नम्मयासुंदरिलंभेण, ता देह पच्छाहुत्तं पयाणयं।' तेहिं भणियं—'मा एवं भणाहि। जओ आगया बहूणि जोयणसयाणि पच्चासन्नं बब्बरकूलं वट्टइ। अन्नं च एस नम्मयालाभो उत्तमो [प १६ A] सउणो। अओ चेव तत्थ गयाणं विसिट्ठो लाभो भविस्सइ त्ति। अओ सव्वहा जुत्ता बब्बरकूलजत्ता।' एवं भणिओ दक्खिन्नसारयाए तहाविहभवियव्वयानिओगओ पयट्टो वीरदासो।

थेवदिवसेहिं पत्तो पेल्लिज्जंतोऽणुकूलपवणेण[6] ।
पत्तो बब्बरकूले[7] पोयट्ठाणं मणभिरामं ॥ ४५३

---

१ निघिणो. २ अइव. ३ फुट्टमा. ४ बहु°. ५ °दुक्खानल. ६ हुवणा. ७ बब्बर°.

उत्तारिऊण भंडं संजत्तिय[1]वाडयस्स मज्झम्मि।
निम्माविया य सहसा गुणलयणी भियगपुरिसेहिं॥ ४५४
तीसे मज्झे सिज्जा निम्मविया नम्मयाइ पाओग्गा।
चिट्ठइ य सुहासीणा[2] सुत्ता वा नम्मया तत्थ॥ ४५५
अह अत्थि तत्थ दीवे नयरं नामेण बब्बरं रम्मं।
मणिकणगरयणपुण्णं बब्बरलोयस्स कयतोसं॥ ४५६
तत्थऽत्थि हरिणलंछणलंछणकिरणुं[3]जलो जसपयासो।
नामेण इंदसेणो सुपयासो पुहइवीढम्मि॥ ४५७
सो पुण हिओ पयाणं जणओ इव निययमंडलगयाणं।
दीवंतरागयाणं विसेसओ पोयवणियाणं॥ ४५८
पोयट्ठाणपुराणं अंतो दोन्हं[4] पि नाइदूरम्मि।
बहुजणकयपरिओसं वेसाण निवेसणं अत्थि॥ ४५९
विज्जइ य तत्थ गणिया हरिणीनामेण नयरसुपसिद्धा।
नरवइकयसामित्ता गणियाण सयाण सत्तण्हं॥ ४६०
गिन्हइ सा वि विढत्तं तासिं सव्वासिमेव दासीणं।
सा वि पयच्छइ रन्नो भागं तइयं चउत्थं[5] वा॥ ४६१
अत्थि यं[6] रायपसाओ तीए सव्वेहिं पोयनाहेहिं।
अट्ठसयं दम्माणं दायव्वं रायभाडीए॥ ४६२
नरवइकयप्पसाओ गव्वं सव्वो जणो वहइ पायं।
पयईं[7]तुच्छसहावो किं पुण पञ्जंगणावग्गो॥ ४६३
सोहग्गरूवगव्वं समुव्वहंती[8] तओ विसेसेण।
उम्मत्ता इव हिंडइ हीलंति[9] न[य]रजणं सव्वं॥ ४६४

[वीरदासस्स हरिणीवेसागिहे गमणं]

निसुयं च तओ तीए जंबुद्दीवाउ आगयं वहणं।
सामी उ वीरदासो तस्स त्ति जणप्पवायाओ॥ ४६५
गोससमयम्मि ताहे महग्घवत्थाण जुवलयं घेत्तुं।
पहियं चेडीजुयलं निमंतयं पोयसामिस्स॥ ४६६
भणिओ य सप्पणामं कोसल्लियमप्पिऊण सो तेण।
'विन्नवइ अज्ज! हरिणी अम्हाणं सामिणी एवं॥ ४६७

१ सजत्ति°. २ सुहा°. ३ °करिणु°. ४ दोण्हं. ५ चउत्थं. ६ ये. ७ पयइ°. ८ °ज्झहंता. ९ हीलंती.

होयव्वमओ सामिय ! अम्हाणं पाहुणेहिँ तुम्मेहिं ।
अम्हं रायाएसो कायव्वं तुम्ह पाहुणं ॥' ४६८
ता भणइ वीरदासो–'कहियव्वं सामिणीय तुह वयणं ।
मचि(दी?)यमेयं सव्वं कयं च तुम्भेहिँ दट्ठव्वं ॥ ४६९
अम्ह वि रायाएसो पडिवज्जेयव्व[1] इमं तुमं भद्दे ! ।'
भणिऊण तासिमप्पइ अट्ठसयं रूढ(ब?)दम्माणं ॥ ४७०
गंतूण चेडियाहिं[3] कहियं हरिणीऍ वीरसंलवियं ।
उवणीयं अट्ठसयं दम्माणं पाहुडं ताहिं ॥ ४७१
जाणियहिययाकूया[4] कुविया हरिणी विचिंतई 'नूणं ।
आगंतु[5] सो नेच्छइ करेइ मम माणपरिहाणिं[6] ॥ ४७२
दोहग्गिणि त्ति लोए मज्झ पसिद्धी अणागए होही ।
ता पेसिऊण दव्वं कोकेमि[7] तमेव गेहम्मि ॥' ४७३
पेसेइ तओ चेडिं[8]–'भणिज्ज धणमप्पिऊण तं वणियं ।
न हि मह धणेण कज्जं तुमम्मि गेहे [पृ. १६ B] आणिंतम्मि ॥ ४७४
नो खलु रायाएसो "मुहाइ गेण्हेज्ज तं तओ वित्तं ।
किंतु विणएण भामिणि ! आराहित्ता मणं तस्स ॥" ४७५
पडिभणइ वीरदासो–'आराहियमेव मह मणं तुमए ।
सब्भावसारमेयं निमंतणं कारयंतीए ॥ ४७६

भणियं च–

वाया[9] सहस्समइया सिणेहनिज्झाइयं सयसहस्सं ।
सब्भावो सज्जणमाणुसस्स[10] कोडिं विसेसेइ ॥ ४७७
ता मा काहिसि भद्दे[11] ! अम्होवरि अन्नहा मणं किंपि ।'
इय भणिऊण सदव्वा विसज्जिया सा गया तुरियं ॥ ४७८
किं पुण सो नागच्छइ ताओ[12] अन्नाउ वयणकुसलाओ ।
अन्नो वि पेसियाओ णेगाओ छेयं[13]चेडीओ ॥ ४७९
तम्मि समयम्मि दिट्ठा आसन्ना नम्मया जणयवयणं ।
मुहु मुहु निज्झायंती सिणिद्धलोलेहिँ नयणेहिं ॥ ४८०
तीए सरीरसोहं दट्ठूण सविम्हियाउ सव्वाओ ।
अन्नोन्नं वयणाइं पलोइउं[14] त्ति लग्गाओ ॥ ४८१

---

१ °मज्झ. २ °वज्जेयव्वं. ३ चोडियाहिंइं. ४ °याकूवा. ५ आगंतु. ६ °हाणी. ७ कोकेमि. ८ चेडी. ९ वाया. १० °माणुमस्स. ११ भिद्दे. १२ नाओ. १३ छेय°. १४ अ.

भणंति य –

'ता रूववई नारी आसन्नं जा न होइ एयाए ।
सहइ गहनाहजुण्हा सूरपहा जा न अल्लियइ ॥' ४८२
पुणरवि सविणयमेवं भणिओ पोयस्स नायगो ताहिं ।
'अज्ज ! पसीयसु हरिणि' हरिणीवयणं कुणसु कन्ने ॥ ४८३
नयणेहिँ को न दीसइ केण समाणं न हुंति उल्लावा ।
हिययाणंदं जं पुणु जणेइ तं माणुसं विरलं ॥ ४८४
दिट्ठो सि न तं सुंदर ! निसामिया तुह गुणा अणन्नसमा ।
तुह दंसणूसुयमणा तेणाहं सुट्ठु संजाया ॥ ४८५
न घणेण मज्झ कज्जं किं पुण नासेइ मज्झ गुणमाणो ।
जइ न कुणसि नियचलणुप्पलेहिँ गेहं मम पवित्तं ॥ ४८६
नासइ तुज्झ वि नियमा गरुयत्तं मह गिहं अणिंतस्स ।
जं संलविही लोगो विहुणो(?) तिहुावरो एस ॥' ४८७
एवं बहुप्पयारं भणियं सोऊण तासि दासीणं ।
'जणरंजणत्थगमणे धणवइ ! को नाम दोसो त्ति ॥' ४८८
इय मित्तवयणसवणा काममकामो वि पुरिसदुगसहिओ ।
सहस त्ति वीरदासो पत्तो गेहम्मि हरिणीए ॥ ४८९
अब्भुट्ठिऊण तीए पारद्धा आसणाइपडिवत्ती ।
एत्थंतरम्मि निहुयं पढियं एगाए चेडीए ॥ ४९०
'अब्भस्स बंधभोइणि ! नवपव्वइंसेल्ल[क]यवइल्लस्स ।
आयारमेत्तवसिओ न कज्जकरणक्खमो एस ॥' ४९१
अमुणियतब्भावाए हरिणीए पुच्छिया रहे चेडी ।
'साहेहि फुडं भद्दे ! भावत्थमिमस्स पढियस्स ॥' ४९२

तीए भणियं –

'एय समीवे रमणी दिट्ठा अम्हाहिँ तत्थ पत्ताहिँ ।
उव्वसिरंभतिलोत्तमगोरीणं[············] ॥ ४९३
तरुणजणमोहकारणभुवणब्भुयभूयदेहसोहाए ।
तीसे पासम्मि धुवं न सहसि तं हरिणि ! हरिणि व ॥ ४९४
तं मोत्तूण न कत्थइ मणभमरो रमइ नूणमेयस्स ।
ता किं उवयारपरिस्समेण बज्झेण एयस्स ॥ ४९५

१ °प्पहा. २ पसीयस. ३ हरिणी. ४ जाणइ. ५ °मणो. ६ तिहुयं. ७ °पव्वय°. ८ °वर°. ९ °समो. १० दहे. ११ रमणीहिं. १२ °सिलोत्तिम°.

भावत्थो तुह कहिओ सामिणि ! एयस्स निययपढियस्स ।
नाऊण इमं तत्थं जं रोयइ तं करिज्जासु ॥' ४९६
हरिणी भणइ – 'हला जइ न करिस्स[प. १७ A]इ मज्झ इच्छियं एसो
ता एयनाममुद्दं तुह अप्पिस्सं कह वि घेत्तुं ॥ ४९७
चिंचेण तेण हरिउं आणेअह एयवल्लहं तरुणिं ।
पच्छिमदारेण पवेसिऊण भूमीगिहं निज्ज ॥ ४९८
कायव्वं पडिकूलं दक्खिण्णविवज्जियस्स एयस्स ।'
सामच्छिऊण एवं अल्लीणा सत्थवाहस्स ॥ ४९९
अवउज्झियनेहाण वि विन्नाणं किंपि होइ वेसाणं ।
पयडंतीओ नेहं जेण जणं पत्तियावंति ॥ ५००
अब्भंगिओ तओ सो सुगंधनेहेण नेहरहियाए ।
संवाहिय उव्वट्टिय ण्हविओ[३] ण्हाणेहिँ विविहेहिं ॥ ५०१
परिहाविओ[४] य तत्तो सोमालाइं महग्घवत्थाइं[५] ।
आलिंपियं च अंगं गंधुक्कडचंदणाईहिं ॥ ५०२
काऊण कोउयाइं कप्पूरागरुतुरुक्कमाईहिं ।
विहिया से धूवणिया तस्स मणोरंजणपराए ॥ ५०३
बहुहावभावसारं नाणाविहचाडुकम्मकुसलाए ।
तह तह भणिओ वि घणं न पवत्तो तीय वयणम्मि ॥ ५०४
भाणीय मुंचमइंहरि(भणिया च सुंदरि अहं ?) संपइ वच्चामि अप्पणो ठाणं ।'
अंसुजलल्लियवयणा पुणो वि धुत्ती इमं भणइ ॥ ५०५
'[······] अभग्गमाणा नयरपहाणा बहुं पि झक्खंती ।
तुमए नाहं गणिया उड्डारूढेण सुणिय व्व ॥ ५०६
तह वि हु मे नयणाइं निम्माणाइं न चेव तिप्पंति ।
तुह दंसणस्स ता कुण खणमेक्कं जूयगोट्ठिं पि ॥' ५०७
हरिणिपरिओसहेउं पडिवन्नं तेण उज्जुहियएण ।
कंजियजलेण छलिओ धुत्तीए जुण्णमज्जारो ॥ ५०८
विस्संभभावियाणं पवंचणे किमिह नाम पंडिच्चं ।
अंकपसुत्ते हणिए संसिज्जइ केण सूरत्तं ॥ ५०९
अह सा पहट्ठवयणा सारीपट्टं ठवित्तु तस्सग्गे ।
परिकीलिउमारद्धा चिंचियगयदंतसारेहिं ॥ ५१०

१ जेण. २ भूमि°. ३ ण्हविउ. ४ परिहारिओ. ५ °वत्थाहिं. ६ °रागर°. ७ °वयणो. ८ जुत्त°. ९ हणिओ.

लद्धावसरा घेत्तुं दाहिणपाणिं[1] भणेइ – 'ते सुहय ! ।
मुद्दारयणमपुव्वं कुऊहलं एरिसे मज्झ ॥' ५११
भणइ य नियचेडिं तो – 'दंसेहि इमं सुवन्नयारस्स ।
एयाए घडणीए मुद्दं सिग्घं घडावेहि ॥ ५१२
उट्ठिउकामो एसो आगंतव्वं अओ तुरियतुरियं ।'
इय भणिय पुव्वचेडी पट्ठविया गहियसंकेया ॥ ५१३

[हरिणीचेडीहिं नम्मयासुंदरीए हरणं, तीए पलावं च]

चेडीवंद्रसमेया पत्ता सहस त्ति पोयठाणम्मि ।
दिट्ठा य सुहनिसन्ना असहाया नम्मया ताहिं ॥ ५१४
'भद्दे ! सो तुह वणिओ हरिणीभवणम्मि संठिओ संतो ।
जाओ अपडुसरीरो तेण तुमं सिग्घमाहूया[2, 3] ॥ ५१५
तुह पच्चयजणणत्थं मुद्दारयणं इमं तु पट्ठवियं ।'
एवं भणमाणाहिं समप्पिया मुद्दिया तीसे ॥ ५१६
सोऊण इमं वयणं संभंता नम्मया विचिंतेइ ।
'न घडइ तायस्स इमं अलियं जंपंति एयाओ ॥ ५१७
अहवा पयइअणिच्चे संसारे एरिसं पि संभवइ ।
अन्नह मुद्दारयणं कीस इमं पेसियं तेण ॥ ५१८
तह वि न जुत्तं गंतुं[4] असहायाए इमाइ सह मज्झ ।
मग्गेमि ता सहायं परियणमज्झे जणं कं[5] पि ॥' ५१९
उट्ठेइ निहालेइ य पुणो पुणो नियमाणुसं कं[5] पि ।
भवियव्वयानिओ[प. १७ B]या न य दिट्ठो को वि कत्थावि ॥ ५२०
किंकायव्वविमूढा ठाउं गंतुं च नेव चाएइ ।
तो ताहिं पुणो भणिया – 'न एसि जइ मुंच ता अम्हे ॥' ५२१
चिंतइ पुणो वि एसा अगयाए नूण रूसिही ताओ ।
जाणइ जुत्ताजुत्तं सो चेव किमम्ह चिंताए ॥ ५२२
पुव्वकयासुहकम्मेहिं चोइया तासिमग्गओ ठाउं ।
संचलिया सा बाला बलवं[6] खलु कम्मपरिणामो ॥ ५२३
ताहिं परिवेढिया सा नाया केणावि नेव[7] वच्चंती ।
भूमीगिहम्मि छूढा पिहियं दारं च तो ताहिं ॥ ५२४

१ °पाणी. २ सिग्घ°. ३ °साहूया. ४ गुत्त. ५ किं. ६ बलवं. ७ नेय.

दिट्ठम्मि अंधयारे हरिया एयाहिँ इय परिणाए ।
मुच्छानिमीलियच्छी पडिया सहस त्ति धरणीए ॥ ५२५
कहकह वि लद्धसन्ना विमुक्कपुक्कं सरेण करुणेण ।
घणमवि चिरं परुन्ना न सुया केणावि वज्जेणं[1] ॥ ५२६
'हा हा ! अकज्जमेयं किं राया नत्थि कोइ इह नयरे ।
हरियाऽहमणवराहा निब्भयचित्ताहि दासीहिं ॥ ५२७
एसा णु भिल्लपल्ली किं वा चोराण एस आवासो ।
जमहमकयावराहा हरिया एयाहिँ रंडाहिं ॥ ५२८
किं नत्थि कोइ रक्खो सोया[2] वा नायपेच्छओ को उ[3] ।
जेणेवमणवराहा हरिया हं चोरनारीहिं ॥ ५२९
सुरपयडम्मि दिवसे हरिया हं पिच्छ पावविलयाहिँ[4] ।
सो एस छत्तहंगो[5] जाओ रायम्मि जीवंते ॥ ५३०
हा तायय ! कत्थ गओ मा मा अन्नत्थ मं गवेसेसु ।
अच्छामि एत्थ अहयं छूढा नरओवमे घरए ॥ ५३१
तं ताय ! कत्थ चिट्ठसि पत्ता तुह मुद्दिया कहमिमाहिँ ।
अम्हाण वि जीएणं कुसलत्तं होज्ज तुह ताय ! ॥ ५३२
तुह मुद्दादंसणओ मुट्ठा हं ताय ! जाणमाणा वि ।
मा रूसि[हि] त्ति ताओ भीया एयाहिँ सह चलिया ॥ ५३३
हा ! निबिडा[6] कम्मगई पत्तो बीओ[7] न कोइ तुह सत्ये ।
विहिणा खलेण तायय ! रुद्धा सव्वे वि दिसिभाया ॥ ५३४
तुह दंसणेण तायय ! छुट्टा पुव्वं पि घोरदुक्खाओ ।
ता एहि एहि पुणरवि तुरियं मह दंसणं देसु ॥ ५३५
आर्मं[8] भणंती तायय ! तं किर अच्चंतवल्लहो मज्झ ।
तं अलियं चिय जायं तुह विरहे जीवमाणीए ॥ ५३६
हा ताय ! मज्झ हिययं वज्जसिलायाहिँ निम्मियं नूणं ।
जं अज्ज वि तुह विरहे न जाइ सयसिक्करं सहसा ॥ ५३७
हा ताय ! अहं मूढा जुत्ताजुत्तं वियाणमाणी वि ।
तुह करभूसणमुद्धा पडिया दुक्खद्दहे घोरे ॥ ५३८
बरमासि तम्मि दीवे मया अहं ताय ! सुद्धपरिणामा ।
संपइ इयदुक्खत्ता न याणिमो कह भविस्सामि ॥ ५३९

१ वज्जेण. २ सोढा. ३ ओ. ४ °वलियाहिं. ५ सो सए ससवत्त°. ६ निबडा, ७ वीओ. ८ आसं.

जह वग्घाओ भीया सहसा सीहस्स पडइ उच्छंगे ।
तह मोइया वि तुमए इमम्मि दुहसंकडे पडिया ॥ ५४०
नूणं मुणिवरसावो अज्ज वि न हु निरवसेसओ होइ ।
उवणयमेरिसदुक्खं पुणरवि जं दारुणं मज्झ ॥ ५४१
अंगीकयमरणाओ किं काही मज्झ आवई एसा ।
न हु रि स महाणुभावो झिजिस्सइ[1] मह कए ताओ ॥ ५४२
पाणेहिंतो[2] वि पिया तस्साहं आसि भुत्त[प. १८ A]सुया वि ।
मह विरहदुक्खिओ सो पाविस्सइ किं न याणामि ॥' ५४३
एयाणि य अन्नाणि य पलवंती पुणु पुणो वि मुच्छंती ।
करुणसरं रुयमाणी अच्छइ घरए नरयतुल्ले ॥ ५४४
दासीहिँ पुणो गंतुं हरिणीहत्थे समप्पिया मुद्दा ।
भणियं च – 'तुस सामिणि ! अम्हेहिँ कओ तुहाएसो ॥' ५४५
तो भणइ वीरदासो – 'मयच्छि ! [ग]च्छामि निययमावासं ।'
नन्न त्ति भणंतीए पत्तो सो पोयठाणम्मि ॥ ५४६

[वीरदासस्स नम्मयासुंदरीगवेसणा, गिहं पइ पयाणं च]

पढमं चिय परिखिवई दिट्ठिं सो नम्मयापडकुडीए ।
न य दीसइ[3] त्ति पुच्छइ–'कत्थ गया नम्मया कहह ? ॥' ५४७
पडिभणइ परियणो सो – 'जाणामो अत्थि पडकुडीमज्झे ।
अन्नत्थ सा न गच्छइ निरूवियाॅ[4] तो न अम्हेहिं ॥' ५४८
'नूणं मज्झ पएहिं हरिणीगेहम्मि सा गया होही ।'
गंतूण तत्थ पुच्छइ ताओ पभणंति – 'नाऽऽयाया ॥' ५४९
ताहे अइवियड्डो(ड्ढुं ?) तमन्निस्सन्तो[5] पुणो भण(म)इ तुरियं ।
भणइ य परियणमित्ते – 'गवेसिमो नम्मयं दट्ठुं ॥' ५५०
सव्वत्तो अन्नेसियाॅ[6] सबाहिरब्भंतरे पुरे तम्मि ।
पुच्छंतेहि वि नूणं पउत्तिमेत्तं पि नो पत्तं ॥ ५५१
तो गंतूण नरिंदो भणिओ – 'दावेहि पडहयं देव ! ।
जो मह दंसइ धूयं तस्स पसन्नो अहं सामि ! ॥ ५५२
जेत्तियमेत्तं चं[7] तुला तुलइ पयच्छामि तित्तियं कणयं ।
इत्तियअत्थेण पुरे कारिज्जउ घोसणं देव ! ॥' ५५३

---

१ झिझिस्सइ. २ पाणिहंतो. ३ दीसय. ४ निरुविया. ५ तमनिस्सन्तो. ६ अन्नि-सिया. ७ च.

तिन्नि य दिणाइँ रन्ना दवाविओ पडहगो उभयकालं।
घोसणएण समाणं न य लद्धा कत्थइ पउत्ती॥ ५५४
सहस त्ति वीरदासो मुच्छाविहलंघलो महीवीढे।
पडिओ निरासचित्तो मिलिओ य तओ सयणवग्गो[1]। ५५५
चंदणजलेण सित्तो पवीइओ विविहवीयणाईहिं।
कहकह वि लद्धसन्नो ताहे पुक्करिउमारद्धो॥ ५५६
'मुट्ठो [अहं] अणाहो इत्तियलोयस्स मज्झयारम्मि।
जीवियभूयं धूयं सहस च्चिय नासयंतेण॥ ५५७
अवहरियं नयणजुयं[2] खलेण उद्दालियं च सव्वस्सं।
छिन्नं च उत्तिमंगं जेण हिया नम्मया[3] मज्झं[4]॥ ५५८
हा पुत्ति! कत्थ चिट्ठसि कत्तो गच्छामि कत्थ पुच्छामि।
दच्छिस्सं कत्थ गओ तुह मुहचंदं कहसु वच्छे!॥ ५५९
पत्तं महानिहाणं सहसा भूएहिँ मज्झ अवहरियं।
दिट्ठा वि सुभदीवे न दीससे जह तुमं अज्ज॥ ५६०
जम्मंतरम्मि कस्सइ अवहरियं किं मए महारयणं।
अवहरिया सि किसोअरि! तेण तुमं मह अउन्नस्स[5]॥ ५६१
दाइस्सं कस्स मुहं साहिस्सं कस्स निययदुच्चरियं।
भट्ठेण व जेण मए करट्ठियं हारियं रयणं॥' ५६२
इय विविहं पलविंतो भणिओ मित्तेहिँ ईसि हसिऊण।
'पुरिसो त्ति तुमं वुच्चसि पलवसि रंड व्व किं एवं॥ ५६३
किं पलविएण इमिणा एही कत्तो वि नम्मया तुज्झ?।
उज्झसु कायरभावं धरेहि धीरत्तणं हियए॥ ५६४

अवि य–

सिरपिट्टकुट्टणेणं जुज्जइ[6] अह कायराण ववहारो।
धीरा लद्धविणट्ठे उवायतत्ताणि भावंति[7]॥ ५६५
भा[प. १८ B]वेहि फुडं सुंदर! चेट्ठामो जाव इत्थ दीवम्मि[8]।
ताव नं[9] हु होइ पयडा सुचिरेण वि नम्मया तुज्झ॥ ५६६
ता गंतूण सनयरं आगच्छामो पुणो वि पच्छन्ना।
जह न वियाणइ लोओ जुत्ता अन्नाभिहाणेहिं॥ ५६७

१ °वग्गो. २ नयणेजुयं. ३ नम्मयो. ४ मज्झं. ५ अउन्नस्स. ६ जुज्जइ. ७ भावंति. ८ दीवंसि. ९ ज.

ताहे पेच्छेस्सामो[1] वियरंतिं[2] नम्मयं न संदेहो ।
परियाणियपरमत्था जं जुत्तं तं करीहामो ॥' ५६८
सोऊण मित्तवयणं उवायमन्नं अपिच्छमाणेण ।
जुत्तमिणं ति कलित्ता पडिवन्नं वीरदासेण ॥ ५६९
विणिओइऊण खिप्पं नियभंडं[3] गहियपउरपडिभंडा ।
चलिया पडिप्पहेणं संपत्ता नम्मयानयरं ॥ ५७०
सिट्ठा य बंधवाणं वत्ता मेत्तेहिं जा जहावत्ता ।
भुज्जो वि वीरदासो घणं[4] परुन्नो सयणसहिओ ॥ ५७१
रोइत्तु[5] चिरं सयणा सोयंता संलवंति अन्नोन्नं ।
'हा ! निग्घिणो हयासो पुत्तो सो रुद्ददत्तस्स ॥ ५७२
नत्थि वयणे पइट्ठा[6] एयाण कुले य निच्छओ[7] चेव ।
दिट्ठमयस्स(?) वि वयं पयारिया तेण पावेण ॥ ५७३
अहवा सो चेव खलो निहओ[8] केणावि असुहकम्मेण ।
एरिसमित्थीरयणं[9] उज्झइ कहमन्नहा मूढो ॥ ५७४
मा गेण्हह से नामं न कज्जमम्हाण तस्स तत्तीए ।
सोएमो तं बालं निद्दोसं आवयावडियं ॥ ५७५
सा परघर[10]संपत्ता सहिही नूणं कयत्थणा भीमा ।
काही न सीलभंगं पाणच्चाए[11] वि नियमेण ॥ ५७६

अवि य –

अवि कंपइ कणयगिरी उदेइ[12] सूरो वि पच्छिमदिसाए ।
उट्ठइ जलम्मि अग्गी न हु खंडइ नम्मया सीलं ॥ ५७७
उइयं न णु पुव्वकयं कम्मं तीए महाणुभावाए ।
उवरुवरिमावयाओ उवेंति जं सुद्ध[13]सीलाए ॥' ५७८

एवं च नम्मयासुंदरीदुक्खदावानलडज्झमाणमाणसो[14] सव्वो वि नम्मयापुरजणो दुक्खेण कालं गमंतो चिट्ठइ ।

[हरिणीए नम्मयासुंदरिं पइ कवडसंभासणं]

सा वि पुण नम्मयासुंदरी तम्मि य चारगगिहे रुयमाणी विलवमाणी, बीये[15]दिवसे चेडीहिं उवणीयं भोयणं [अ]भुंजमाणी, बहुकूडकवडभरियाए हरिणीए [भणिया]–'वच्छे ! भुंजाहि भोयणं । न किंचि अम्हे तुहासुंदरं[16]

१ पेच्छेसामो. २ बियरंनी. ३ हियभडं. ४ घण. ५ तोइत्तु. ६ पयट्ठा. ७ नेच्छओ. ८ निहओ. ९ °सिरथी°. १० परघूर°. ११ °चए. १२ उवेइ. १३ सुद्ध°. १४ °माणसा. १५ बीय°. १६ °सुंदर.

चिंतेमो । किं तु सो तुह वाणियगो अम्ह संतियं किं[1] पि आहवं न देइ तेण तुममवरुद्धा सि । जया सो दाही तया तुमं पि मुचिहिसि[2] । मा मन्नेसि "सो मम दव्वं न याणाई[3]" जाणेइ चेव । किं तु वणियाणं जणयाओ तणयाओ जणणीओ घरणीओ वि सयासाओ अत्थो अच्चंतवल्लहो होइ । तेण दायवं पि दुक्खेण देंति । जइ तस्स तुमं पिया ता सिग्घमेव दाही । तुमं पि मुचिहिसि । एस परमत्थो ।' तओ नम्मयाए चिंतियं–

'एसा जंपइ महुरं हियए हालाहलं विसं वसइ ।
को पत्तियइ खलाए पावाए चप्फलगिराए ॥ ५७९
न कयाइ मज्झ ताओ न देइ आहवयं मुहुत्तं पि ।
एवभणियस्स उचियं[4] करेमि पडिउत्तरं किं पि ॥' ५८०

एवमालोचिऊणं[5] भणियं नम्मयासुंदरीए– 'भोइणि! जइ एवं ता मुंचाहि मं जेण अज्जेव तुह [आ]हवं दुगुणं तिगुणं वा दवावेमि । देमि तुह दाहिण[ह]त्थं, अन्नं [प. १९ A] वा दुक्करं सवहं कारेहि ।' तओ तीए भणियं– 'भुंजाहि जइ ते इच्छा । नाहं सवहेहि पत्तियामि' त्ति भणंती उट्ठिऊण निग्गया[6] हरिणी । न भुत्तं नम्मयाए । तयइदेहम्मओ(तइयदियहे मरउ ?) ताव छुहाए त्ति भाविंती न पत्ता चेव तीए सगासं हयासा नोवणीयं च भोयणं । पुणो चउत्थे दिणे 'मा मरिहि' त्ति संकाए समागया भणिउं च पवत्ता– 'निब्भग्गे! करेहि कवलग्गहणं । जीवंतो जीवो कल्लाणभायणं भवइ त्ति ।' ताहे 'अणुकूलो[7] मम एस वाइओ सउणो । नूणं भविस्सइ[8] मे जीयमाणीए सामग्गसंपत्ती । एसा वि अणुवत्तियवयणा सिसिरहियया होइ' त्ति कलिऊण वत्ताजुत्ताजुत्तवियारिणीए– 'मम[9] एगंतहियया लक्खिज्जसि ता करेमि तुहाएसं जेण अन्नं पि मे[9] हियं तुमए चिंतियव्वं' ति बिंतीए[10] अट्ठमभत्ताओ पाणधारणनिमित्तं भुत्तं नम्मयाए ।

एवं अट्ठमभत्ता पुणो पुणो पारणं करेमाणी ।
तम्मि घरयम्मि चिट्ठइ[11] रुयमाणी नरयसारिच्छे ॥ ५८१
हंसी पंजरछूढा सरइ जहा अविरयं कमलसंडं ।
तह नम्मया वि सुमरइ निरंतरं जणणिजणयाणं ॥ ५८२
न तहा बाहई[12] तीए नियअंगे उट्ठिया महापीडा ।
जह पित्तियस्स हियए भाविंतीए विरहदुक्खं ॥ ५८३
पच्चासन्नावासा वग्घीए कंपइ(ए) जहा हरिणी ।
तह कंपमाणहियया भएण एसा[13] वि हरिणीए ॥ ५८४

१ कि. २ सुचिहिसि. ३ याणाइ. ४ उचियं. ५ °मालोचिऊण. ६ नियया. ७ अणुकूलो. ८ सम. ९ से. १० बीतीए. ११ चिट्ठइ. १२ बाहइ. १३ एभा.

जिणगुणगणगहियाइं थुइथोत्ताइं पुणो परिगुणंती।
चिट्ठइ मोक्खासाए परिभाविंती इमं हियए॥ ५८५

'कइया होज्ज दिणं तं जत्थाहं साहुणीण मज्झम्मि।
धम्मज्झाणोवगया करेज्ज सिद्धंतसज्झायं॥' ५८६

[नम्मयासुंदरीए गणियत्तणे हरिणीकयोवएसो]

अन्नया जाणिऊण पडिगए पवहणवणिए 'सिद्धं मम वद्दं(कवडं?)' ति पहट्ठ[1]हियया समायाया नम्मयासुंदरिसमीवं हरिणी, भणिउं पवत्ता – 'हला! पेच्छ तेण वणिएण जं कयं। न दिन्नं मम देयं। तुमं पि मोत्तूण णट्ठो। धिरत्थु तस्स ववहारो जो तिट्ठाए मोहिओ नियमाणुसं परिच्चयइ। ता भद्दे! मा तुमं तस्स कारणे खिज्जिहिसि। चेट्ठ निव्वुया मम गिहे इमिणा मम परियणेण सद्धिं[2] विलसंती। नाहं तुह भाराओ बीहेमि। मम वयणकारिणीए न ते किं पि मंगुलं भविस्सइ।' तओ 'नूणं मम पउत्तिमपाविऊण निरासीभूओ पडिगओ ताओ। होउ तस्स कुसलं ममाए मंदभग्गाए न याणामि[3] किं पि अणुभवियव्वं' ति चिंतिऊण पडिभणियं—'का ममानिव्वुई तुह समीवट्ठियाए? तुममेव मम हियाहियं चिंतेसि' त्ति वुत्ते नीणिया भूमिगिहाओ, गिहमज्झे मोकलाचारेण चेट्ठइ त्ति। अन्नया पुणो वि भणिया हरिणीए – 'सुंदरि! दुल्लहो माणुसीभावो, खणभंगुरं तारुन्नं, एयस्स विसिट्ठसुहाणुभवणमेव फलं। तं च संपुन्नं वेसाणमेव संपडइ, न कुलंगणाणं। जओ पहाणमवि भोयणं पइदियहं भुंजमाणं न जीहाए तहा सुहमुप्पा[ए]इ, जहा नवनवं दि[प. १९ B]णे दिणे। एवं पुरिसो नवनवो नवनवं भोगसुहं जणइ य।

अन्नं च –

वियरिज्जइ सच्छंदं पेज्जइ मज्जं च अमयसारिच्छं।
पच्चक्खो विव सग्गो वेसाभावो किमिह बहुणा?॥ ५८७

तुज्झ वि रइरूवाए पुरिसा होहिंति किंकरागारा।
वसियरणभाविया इव दाहिंति मणिच्छियं[4] दव्वं॥ ५८८

एयाओ सव्वाओ अद्धं मे दिंति नियविढत्तस्स।
तं पुण मह इट्ठयरी देज्जाहि चउत्थयं भायं॥' ५८९

इय दासीधुत्तीए नाणाविहजुत्तिउत्तिनिउणाए।
भणिया वि न सा भिन्ना जलेण छुहलित्तभित्ति व्व॥ ५९०

---

१ पहट्ठ°. २ सद्धिं. ३ याणिमो. ४ मणच्छियं.

भणिउं च पवत्ता–

'जं जस्स जणे रूढं जुअइ तस्सेव मामि! दं(तं) कम्मं।
न सहइ चलणाभरणं सीसम्मि निवेसियं कह वि॥ ५९१

भणियं च–

जं जसु घडियं तं तसु छजइ उव्वइ पाइ कि नेउरु बज्झइ?।
सुट्ठु वि भुक्खइ भुल्लउ न कुणइ कइय वि चम्मयरत्तणु गिहिवइ॥ ५९२

तुम्हाणं चिय सोहइ एसायारो न जाउ अम्हाणं।
लज्जाए मह हिययं फुट्टइ व इमं[1] सुणंतीए॥ ५९३

जं जस्स कुले रूढं तं तस्सासुंदरं न पडिहाइ।
भणइ जणे चम्मयरो सुट्ठु सुयंधं घरं मज्झ॥ ५९४

वुत्ता सि मए भामिणि! सव्वं काहामि जं तुमं भणसि।
एसंजली कओ मे मा गणियत्तं समाइससु॥' ५९५

पुणरवि भणेइ धुत्ती–'एसो धम्मो जयम्मि सुपहाणो।
जं बहुनराण सोक्खं कीरइ अंगप्पयाणेण॥ ५९६

अहवा धम्मे दिज्जइ नियंयसरीरेण अज्जिओ अत्थो।
एसो वि महाधम्मो जइ कज्जं तुज्झ धम्मेण॥' ५९७

पडिभणइ नम्मया तं–'धम्मो पाविज्जए[2] ण विभवेण।
उप्पज्जइ इह भामिणि! सुणेहि इत्थं पि दिट्ठंतं॥ ५९८

धत्तुरीय[3]बीयाओ न होइ अंबस्स[4] उग्गमो लोए।
एवं[5]ज्जियदव्वाओ एवं धम्मो वि ना होइ॥' ५९९

पुणरवि हरिणी[6] जंपइ–'नूणं अइपंडिया सि तं बाले!।
न मुणसि अत्थेण विणा[7] कह पूरिज्जइ जठरपिठरी॥ ६००

अत्थस्सेसोवाओ[8] किलेसरहिओ सरीरसुहजणओ।
विहिणा अम्हं सिद्धो तम्हा इत्थं समुज्जमसु॥' ६०१

भणियं च नम्मयाए–'अत्थमुव[9]ज्जेमि जइ तुमं भणसि।
कत्तेमि लण्हसोत्तं[10] करेमि गंधि व धूयं वा॥ ६०२

जाणामि रसवइविहिं पक्कन्नविहिं च बहुविहं काउं।
दंसेहि कंचि कम्मं एगं गणियत्तणं मोत्तुं॥' ६०३

---

१ इम. २ पाविज्जिए. ३ धुत्तीरय°. ४ अबस्स. ५ एय°. ६ हारिणी. ७ विण. ८ °सोवाओ. ९ अत्थमु°. १० लण्हमोत्तं.

[हरिणीकया नम्मयासुंदरीकयत्थणा]

इय सोउं आरुट्ठा पाविट्ठा निट्ठुरेहिं[1] वयणेहिं ।
हियगयकालकुट्ठं[2] सहसा उग्गिरिउमारद्धा ॥ ६०४
'पावे ! सामेण मए भणिया न करेसि तह वि मह वयणं ।
नूणं पयंडदंडं अज्ज वि मग्गेसि निब्भग्गे ? ॥ ६०५
संपइ तं मज्झ वसे कारिस्समवस्स तो मणोभिट्ठं[3] ।
किं कइया वि हयासे[4] ! लुज्झइ अह गड्डरा सवसा ॥' ६०६
पडिभ[प. २० A]णइ नम्मया तं – 'जीवंती न हु करेमि गणियत्तं ।
मारेसु व चूरेसु व जं वा रोयइ तयं कुणसु ॥' ६०७
तो तीए क(दु)ट्ठाए आरुट्ठो कामुओ[5] समाहूओ ।
भणिओ – 'बला वि भुंजसु इह भवणे महिलियं एगं ॥' ६०८
आलवइ सुंदरी तं – 'भाय ? अहं तुज्झ भइणिया एसा ।
मा कुणसु मज्झ दोहं जणणीमवहेण सविओ सि ॥' ६०९
सो वि विलक्खो नट्ठो अन्ने अन्ने वि सा महापावा ।
जे जे पेसेइ नरे ते वारइ नम्मया एवं ॥ ६१०
सुट्ठुअरं सा पावा कुविया दंडाहया पुयंगे व्व ।
आणवइ नियदासे[6] – 'रे रे ! आणेह कंबाओ ॥' ६११
आणीयाओ तेहिं कणवीराईण लंबकंबाओ ।
भणिया – 'पहणह एयं जह चयइ पइव्वयावायं ॥' ६१२
ते वि चिरवेरिया इव तामाहंतुं तहा समारद्धा ।
जह सुकुमालसरीरे[7] तीसे ताडिंति मम्माइं[8] ॥ ६१३
जह जह सरइ सरीरा रुहिरं रत्तीभवंति कंबाओ ।
तह तह सा हरिसिज्जइ पावा खट्टिकघरणि व्व ॥ ६१४
भणइ य – 'अज्ज वि पहणह जेणं सा मुयइ कुलवहूवायं[9] ।
ते वि जह नरयपाला तह तह ताडिंति निर्त्तिसा ॥ ६१५
न मुयइं[10] सेक्कारं पि हु ताडिज्जंती वि नम्मया तेहिं ।
चिंतइ 'मए वि एवं केइ जिया ताडिया पुव्विं ॥ ६१६
सव्वो पुव्वकयाणं कम्माणं पावए फलविवागं ।
अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमत्तं परो होइ ॥ ६१७

---

१ निट्ठरेहिं. २ °कुट्ठं. ३ °भिट्ठं. ४ हायासे. ५ कामुओ. ६ °दोसे. ७ सुकुमाल°. ८ मंसाइं. ९ °बहू°. १० मुयइ.

होउ सरीरे पीडा नाहं पीलेमि अप्पणो सीलं ।
अकलंकियसीलाए मरणं पि [न] बाहए मज्झ ॥ ६१८

बाहई[1] पुण जं एसा अयाणमाणी मणोगयं मज्झ ।
संतावइ अप्पाणं इमे वि आणाकरे पुरिसे[2] ॥' ६१९

वारं वारं पुच्छइ हरिणी – 'किं रमसि अम्ह मग्गम्मि ? ।'
'न हि न हि न हि' त्ति जंपइ सा वि दढं हम्ममाणा वि ॥ ६२०

पभणइ हरिणी – 'पहणह मारह चूरेह निग्घिणा होउं ।
मुंचइ जेण हयासा छिज्जंती अप्पणो गाहं ।' ६२१

इय[3] चोइएहिँ तेहिँ वि तह तह [सा] निद्दयं हया बाला ।
जह संपत्ता मुच्छं खणेण सुनिरुद्धनीसासा ॥ ६२२

'मा मरिहि' त्ति पुणो वि हु सित्ता सलिलेण दाविओ पवणो[4] ।
कहकह वि लद्धसन्ना पुट्ठा तं चेव सा भणइ ॥ ६२३

'वीसमउ' त्ति विमुक्का मज्झण्हे तह पुणो दढं पहया ।
अवरण्हे वि तहेव य पहया जा पाविया मुच्छं ॥ ६२४

इय कित्तियं व भन्नइ तीए पावाइ निग्घिणमणाए ।
बहुहा कयत्थिया सा संपुन्ना तिन्नि जा मासा ॥ ६२५

[करिणीकयं नम्मयासुंदरीए दुक्खमोयणं]

अह अत्थि तत्थ वेसा करिणी नामेण भद्दिया[5] किंचि ।
दट्ठुं कयत्थणं तं जाया करुणावरा धणियं ॥ ६२६

ता एगंते तीए संलत्ता नम्मया – 'तुमं भद्दे ! ।
किं सहसि जायणाओ[6] एयाओ घोररूवाओ ॥ ६२७

कीरउ हरिणीवयणं कुट्टिज्जसि दुक्करं तुमं किमि[प. २० B]ह ? ।
कीरउ सुहिओ लोओ जेण इमा हरिणिया वड्ड(?) ॥ ६२८

तंबोलकुसुमपमुहो भोगो सव्वो वि सुंदरो अम्ह ।
ता कीस तुमं मुद्धे[7] ! एवं वंचेसि अप्पाणं ? ॥' ६२९

वज्जरइ नम्मया तो – 'पियसहि ! नेहेण देसि मह सिक्खं ।
ता साहेमि फुडं तुह पच्छन्नं नत्थि सहियाणं ॥ ६३०

जावज्जीवं गहिओ नियमो मे सुयणु ! पुरिससंगस्स ।
नियवायापडिवन्नं जीवंतो को जए चयइ ? ॥ ६३१

१ बाहइ. २ पुरिसो. ३ इह. ४ पवणो. ५ भद्दिया. ६ जायणाउ. ७ मुद्धे.

कस्स व न होइ मरणं जियलोओ कस्स सासओ होइ ? ।
अंगीकयमरणाए पियसहि ! जं होइ तं होउ ॥' ६३२
पुणरवि पुच्छइ करिणी – 'सुंदरि ! किं होइ तुज्झ सो वणिओ ? ।'
इयरी पभणइ – 'सुहए ! पित्तियओ मज्झ सो होइ ॥' ६३३
'जइ एवं सुविसत्था चिट्ठसु मोएमि अज्ज दुक्खाणं ।'
इय जंपिऊण पत्ता करिणी हरिणीसमीवम्मि ॥ ६३४
पभणइ – 'सामिणि ! एसा मारिज्जइ कीस बंदिणी दीणा ? ।
किं वसइ तुज्झ हियए एसा वणियस्स तस्स पिया ? ॥' ६३५
सा भणइ – 'सच्चमेयं एयाए मोहिएण वणिएण ।
नाहं खणं पि भुत्ता ता एसा वेरिणी मज्झ ॥' ६३६
करिणी पभणइ – 'सामिणि ! मा कुणसु मणम्मि एरिसं संकं ।
जेण सहोयरधूया एसा भत्तिज्जिया तस्स ॥ ६३७
कयपुरिससंगनियमा बंभवया निच्छिएण[1] हियएण ।
अब्भुवगच्छइ मरणं न य करणं पुरिसभोगस्स ॥ ६३८
तिहि मासेहिँ न भिन्नं चित्तं एयस्स अन्नहा काउं ।
एत्तो[2] ताडिज्जंती मरइ च्चिय सव्वहा एसा ॥ ६३९
ता मुय ईसादोसं उवरिं एईएँ कुणसु कारुन्नं ।
कुणमाणी घरकम्मं धारउ पाणे तुह पसाया ॥ ६४०
अम्हाहि एत्तियाहिँ भंडागारं न पूरियं तुज्झ ।
किं पूरिस्सइ एसा अंगीकयतणुपरिच्चाया ? ॥ ६४१
सुव्वइ इत्थीवज्झा बहुदोसा सव्वधम्मसत्थेसु ।
ता मा कुणसु कलंकं मह विन्नत्तिं कुणसु एयं ॥' ६४२
तीसे सोऊण गिरं[3] मणयं उवसंत[4]मच्छरा हरिणी ।
वाहरइ[5] तक्खणं चिय नम्मयमेवं च भाणीया ॥ ६४३
'जइ ता घयपुन्नेहिँ गल्ला[6] फुट्टंति तुज्झ निब्भग्गे ? ।
ता चेट्ठ मज्झ गेहे रसवइकिच्चाइँ कुव्वंती ॥' ६४४
हियए अणुग्गहं सा मन्नंती भणइ 'होउ एवं' ति ।
तो तीएँ अणुन्नाया पारद्धा रंधिउं भत्तं ॥ ६४५
सा आहारं साहइ जह सव्वो परियणो भणइ तुट्ठो ।
'ताइं च्चिय दव्वाइं नज्जइ अमिएण सित्ताइं ॥ ६४६

१ नच्छिएण. २ पत्तो. ३ गिरिं. ४ उवएसत्त°. ५ वाहरइ. ६ गल्लो,

को वि अउव्वो साओ संजाओ अज्ज सव्ववत्थूणं ।
जह अम्हाणं जीहा तित्तिं न हु पावइ कहंचि[1] ॥' ६४७
नाणावंजणपक्कन्नरंजिया हरिणिया[2] विचिंतेइ ।
'पढमं चिय किं न मए ठविया एसा इह निओए ॥' ६४८
संरोहिया य तत्तो कंबाघाया घयाइदव्वेहिं ।
भणिया – 'अज्जप्पभिई अभयं ते चिट्ठसु जहिच्छं ॥' ६४९
चिंतेइ न[प. २१ A]म्मया वि हु 'जायं असुहस्स कालहरणं मे ।
जाया जीवियआसा करेमि ता निवुया धम्मं ॥' ६५०
तत्तो य उभयसंझं हियए ठविऊण जिणवरं वीरं ।
वंदइ जायाणुन्ना करेइ उचियं च सज्झायं ॥ ६५१
भावेइ भावणाओ वेरग्गकराइँ गुणइ कुलयाइं ।
सव्वजणो अणुकूलो[3] वाघायं को वि नो कुणइ ॥ ६५२
पहिरेइ डंडियाइं थालीमसिमंडियाइँ[4] मलिणाइं ।
परिकम्मेइ[5] न अंगं लिंपइ य मसीएँ सविसेसं ॥ ६५३
भुंजइ थोवं थोवं तहा वि चित्तस्स निव्वुइगुणेण ।
गेन्हइ उवचयमंगं उववासं कुणइ तो बहुसो ॥ ६५४
विसहइ सीयं तावं 'मा कंती [होउ] मह सरीरस्स ।'
तह वि हु तणुलायन्नं न होइ से अन्नहा कह वि ॥ ६५५
जइ वि सरीरं सुत्थं तावेइ तहा वि माणसं दुक्खं ।
रोयइ कलुणं कलुणं सुमरंती कुलहरं बहुसो ॥ ६५६

[हरिणीमरणं, नम्मयासुंदरीए वेसाण सामिणिकरणं च]

अह अन्नया कयाई हरिणी उग्गाइ सूलवियणाए ।
अभिभूया विलवंती पत्ता सहस त्ति पंचत्तं ॥ ६५७
तो भणइ परियणो सो – 'महासई सेहिया हयासाए ।
तेण अकाले वि मया तारुन्नभरम्मि वट्टंती ॥' ६५८
रुन्ना केणइ न खला न विहियमन्नं[6] पि पेयकरणिज्जं ।
दासीसुएहिँ केहि वि पक्खित्ता सा मसाणम्मि ॥ ६५९
जाणावियं च रन्नो हरिणी हरिया कयंतचोरेहिं ।
तेणावि समाइट्ठं पंचउलं जाणगं निययं ॥ ६६०

---

१ कहिंचि. २ हरिणया. ३ अणुकूले. ४ थालीमसिमुंडियाइं. ५ परिकम्मइ.
६ विहिय अन्नं.

भणियं – 'जा तुम्हाणं पडिहासइ रूलक्खणेहिँ जुया ।
तीसे करेह टिक्कं[1] हरिणीठाणम्मि वेसाए ॥' ६६१
कयसिंगारो मिलिओ वेसावग्गो तहिं निरवसेसो ।
अहमहमियाएँ पंचउलगाण देहं पयासिंतो ॥ ६६२
तेसि निरूवितार्णं[2] संपत्ता दिट्ठिगोयरं कह वि ।
सहस त्ति नम्मयासुंदरि उ मलमलिणतणु[3]वसणा ॥ ६६३
रूवसरूवं तीसे दट्ठूणं विम्हिएहि तो वुत्तं ।
'धूली(लिं?)तरियं रयणं भो ! एयं किं न पेच्छेहँ[4] ॥ ६६४
लक्खणरूवसणाहो[5] अन्ना न हि अत्थि महिलिया एत्थ ।
कीस निरूवह अग्गिं दीवेण करम्मि गहिएण ? ॥' ६६५
भणियाओ चेडीओ – 'उव्वट्टियमज्जियं इमं कुणह ।
परिहावेह य तुरियं वत्थाभरणाणि हरिणीए ॥' ६६६
विहियं च चेडियाहिं अणिच्छमाणीए नम्मयाए तं ।
'हद्धी किमेयमवरं उव्वट्टियमिमं' ति[6] चिंतेइ ॥ ६६७
ठविऊण हरिणियाविट्टरम्मि पंचउलिएहिँ तो तीए ।
मंगलतूररवड्डं[7] कयं सिरे गणियाटिंक्किं ॥ ६६८

भणियं च –

'जं किंचि हरिणितणयं भवणं दवं तहेव परिवागे ।
आहवं चिय सवं तं दिन्नं तुह नरिंदेण ॥' ६६९
इय जंपिऊण ताहे पत्ता पंचउलिया नियं ठाणं ।
इयरी वि देवया इव दिप्पंती चिंतए एवं ॥ ६७०
'एयाहि सहायाहिं [प. ७१ B] होही सवं पि सुंदरं मज्झ ।
तम्हा करेमि इण्हिं सवाओ सुप्पसन्नाओ[8] ॥' ६७१
आय(वाह ?)रिऊणं[9] ताहे सवाओ गोरवेण भणियाओ ।
'जं नियविढत्तभागं दिंतीओ आसि हरिणीए ॥ ६७२
सो सवो वि इयाणिं मए पसाएण तुम्ह परिमुक्को ।
जं पुण रन्नो देयं तं दिज्जह हरिणिकोसाओ ॥' ६७३
परितुट्ठाओ ताओ सवाओ नियसिरेण पयकमलं ।
फुसिऊण बिंति[10] – 'सामिणि ! कम्मयरीओ वयं तुज्झ ॥' ६७४

---

१ टिक्कं. २ निरूक्खिताणं. ३ °णमणु°. ४ पेच्छेहा. ५ °सणाहो, ६ °ट्टियं मि त्ति. ७ °रवड्ढं. ८ सुप्पसुन्नाओ. ९ °रिऊण. १० बिति.

भणिया य विसेसेणं करिणी–'सहि ! वल्लहा अहं तुज्झ ।
जाणासि य मह चित्तं ता चेट्ठसु मज्झ ठाणम्मि ॥ ६७५
सव्वं हरिणीकिच्चं करेज्ज सेवागयाण पुरिसाण ।
अहयं तु तुह पसाया छन्ना[1] चिट्ठामि गिहमज्झे ॥' ६७६
'एवं' ति तीय भणिए संतुट्ठा नम्मया हियमज्झे ।
नियधम्मकम्मनिरया सुहझाणंगया गमइ कालं ॥ ६७७

[असंतुट्ठकामुकस्स राइणो कन्ने पजंपणं]

अन्नदिवसम्मि एगो कयसिंगारो नवम्मि तारुन्ने ।
संपत्तो तीय गिहं अइधणवं कामुओ[3] पुरिसो ॥ ६७८
पुच्छइ–'सा कत्थ गया तुम्हाणं राणिया अचिरठविया ? ।'
करिणी भणइ–'अहं सा पच्चभियाणेसि नो मुद्ध ! ॥ ६७९
सो पभणइ–'नवदिणयरसमाणतेयं मणोहरं अंगं ।
तीए कमलच्छीए दिट्ठं चेट्ठइ मणे मज्झ ॥ ६८०
लक्खंसेण वि तुल्ला न तुमं तीए कहेहि ता सव्वं ।
अच्छइ सा कम्मि गिहे संपइ दंसेहि वा झ त्ति ॥ ६८१
तीए कज्जेण मए दुक्करकम्मेहिँ अज्जिओ अत्थो ।
ता मह दंसेहि तयं पुज्जंति मणोरहा जेण ॥' ६८२
करिणी पुणो वि जंपइ–'तुमए पच्छादिया तया दिट्ठा ।
संपइ सहावरूवा गामिल्लय ! कीस भुल्लो सि ? ॥' ६८३
सो भणइ–'नत्थि जई सा सट्ठाणं जामि तो अहं इन्हि ।'
करिणी भणइ–'न अम्हे वारेमो कुणसु जं रुयइ ॥' ६८४
गच्छंतेण य मग्गे कम्मयरो को वि पुच्छिओ छन्नं ।
'जणयसवहेण सविओ कहेहि सा राणिया कत्थ ? ॥' ६८५
कहियं च तेण छन्नं – 'कहिंचि अच्छइ अहं न याणामि ।
सा कुलनारी नूणं परिवालइ अप्पणो सीलं ॥' ६८६

तओ सो आसाभंगसमुप्पाइयमहाकोवानलडज्झमाणमाणसो तीए सीलमंडणखंडणोवायमलहंतो, रायाणमुवसप्पिऊण[5] जंपिउं पवत्तो–'देव ! निवेएमि किं पि पियकारयं देवस्स अच्चब्भुयं ।' राइणा भणियं–'किं तयं ?' ति । तओ सो पावकम्मो नम्मयाकम्मचोइओ वज्जरिउमाढत्तो–'अत्थि इह नयरे एगा नारी ।

१ च्छिआ.　२ °जाण°.　३ कामुओ.　४ नइ.　५ मुवसमप्पिऊण.

सो तिलोत्तमाईणमच्छराईणमब्भयरी, सुरवइसावेण निवडिया न कस्स वि अप्पाणं दंसेइ । मब्भे पयावइणा तुह निमित्तमेव रक्खिज्जइ । ता किं देव ! रूवेण जोव्वणेण रज्जेण जीविएण वा जइ सा लच्छि व्व सयलसुहखाणी मयरद्धयमहानरिंदराय[प. २२ A]हाणी अंतेउरं[3] नालंकरेइ ? । राइणा[4] भणियं– 'का सा ?' इयरेण भणियं–'जा सा हरिणीठाणसन्निविट्ठा ।'

सुओ एस वइयरो नम्मयासुंदरीए, चिंतियं च 'सच्चं[5] केणावि पढियं–

आसासिज्जइ चक्को जलगयपडिबिंबदंसणसुहेण ।
तं पि हरंति तरंगा पिच्छह निउणत्तणं विहिणो[6] ॥ ६८७

वच्चामि जा न पारं दुक्खसमुद्दस्स कह वि एगस्स ।
तावँऽन्नयरमपुव्वं उवट्ठियं दारुणं वसणं ॥ ६८८

खुद्दो रुद्दो चंडो निद्धम्मो नारओ महापावो ।
एसो बब्बरराया गहिओ को छुट्टइ इमेण ? ॥' ६८९

ता इन्हिं किं करेमि ? कत्थ गच्छामि ? कस्स साहेमि ? कं सरणं पवज्जामि ? सव्वहा नत्थि मे जीवमाणीए सीलरक्खा ।

हा हा कयंत ! निग्घिण ! जइ ता इं दुक्खभायणं रइया ।
ता कीस इमं रूवं निम्मवियं वेरियं[9] मज्झ ? ॥ ६९०

सुहिए कीरइ रूवं दुहियमरूवं ति एत्थ जुत्तमिणं ।
लोहीए पक्कन्नं रज्झइ नहु(तह) खप्परे छगणं ॥ ६९१

पुन्नस्स य पावस्स [य] वासो[10] एगत्थ एस कीस कओ ? ।
सव्वगुणसंपउत्ते भत्ते विससेवणमुजुत्तं ॥' ६९२

एवमणेगहा विलविऊण परिभाविउं पवत्ता 'मरणमेवोसहमिमस्स[11] दुक्खस्स, नऽन्नहा सीलरक्खा होइ । तं पुण विहाणसेण वा विसेण वा झ त्ति संभवइ । अन्नं च सुयपुव्वं मे साहुणीणं समीवे अक्खाणयं–

[धणेसरकहाणयं]

वसंतपुरे नयरे धणवइसिट्ठिसुओ धणेसरो अहेसि । सो जणणिजणए कालगए तहाविहकम्मदोसेण गहिओ दारिद्दविहिणा चिंतिउं पवत्तो–

'चिरकालियवेरग्गो कयाइ उच्छामिया पणस्संति (?) ।
इय नासइ दालिद्दं कयाइ देसंतरगयस्स ॥ ६९३

---

१ सा. २ °माईणिम°. ३ °अंतेउर. ४ रायणा. ५ सच्चं. ६ विहिणा. ७ ताव. ८ जय. ९ वेरियं. १० वामो. ११ °म्मिमस्स.

अन्नं च –

उच्चं नीयं कम्मं कीरइ देसंतरे धणनिमित्तं ।
सहवड्ढियाण मज्झे लज्जिज्जई[1] नीयकम्मेण ॥' ६९४

एवमालोइऊण संठविऊण कुडुंबं दूरदेसे पत्तो एगं गामं । 'न पयाणएहिं दालिद्दं छिज्जइ' त्ति ठिओ तत्थ । भणिओ गामीणेहिं – 'गोरुवाई चारेहि त्ति । लेभिहिसि मासंते पइगोरूवयं रूवयं' ति । सो वि [व]वसायंतराभावाओ चारिउं पवत्तो । तस्स य पंच पंच रूव[य]सयाइं पइमासं मिलंति । पंचहिं वासेहिं जाओ महाधणो । तओ मुसूणं[3] गोवालत्तं लग्गो वाणिज्जे । दुवालसवासेहिं जाओ अणेगधणकोडिसामी, चिंतिउं च पवत्तो –

'किं तीए लच्छीए नरस्स जा होइ अन्नदेसम्मि ।
न कुणइ सुयणाण सुहं खलाण दुक्खं च नो कुणइ ॥' ६९५

तओ सो गमणमणो चिंतेइ 'अंतरा महंतमरन्नमत्थि । तत्थाणेगे भिल्लपुलिंदाइणो चोरा परिवसंति, ते[4] महंतं पि सत्थमभिद्दवंति । ता न एसा संपया निव्वाहिउं तीरइ' त्ति काउं गहि[प. २२ B]याइं [त]ओ महग्घमोल्लाइं पंच महारयणाइं । ताइं जुन्नचेलंचले बंधिऊण कमेण पत्तोऽरन्नपच्चासन्नं । सुयं च 'इत्थारन्ने णेगाओ[5] चोरपल्लीओ । कप्पडिओ वि वच्चंतो उग्गाविऊण गोविओ कीरइ । रूयगो वि गंठिबद्धो[6] न छुट्टइ । तओ धणेसरो रयणाणि एगत्थ ठविऊण तेहिं समाइं पंच पत्थरखंडाइं[7] कच्छुट्टियाए गोविऊण, 'वंचेयव्वा मए तक्कर' त्ति निच्छियमणो,[8] – 'एस भो ! रयणवाणिओ गच्छइ' त्ति उच्चसद्दं घोसंतो पविट्ठो महाडविं[9] । घोसणाणंतरमेव गहिओ तक्करेहिं, पुच्छिओ य – 'कत्थ पत्थिओ सि ?' भणइ – 'रयणाणि विक्केउं ।' 'कत्थ रयणाणि ते ? दंसेहि' त्ति वुत्ते धणेसरेण कच्छोटियाउ कड्ढिऊण दंसिओ गंठी, भणियं च – 'महग्घाणि एयाणि न तुब्भे गिण्हिउं तरह ।' 'किमेएसिं मुल्लं' ति पुच्छिएण सिट्ठं – 'एगेगा धणकोडी ।' तओ पच्चभिन्नायं[10] पत्थरे चोरेहिं 'नूणं गहंगहिओ[11] एसो' त्ति कलिऊण भणिओ तेहिं – 'तुममेव एएसिं जोग्गो सि । गच्छ मणिच्छियं' ति । इयरेण भणियं – 'जइ केइ गाहगा अन्ने वि जाणह ता सिग्घं पेसिज्जह ।' तओ हसिऊण पडिनियत्ता चोरा । धणेसरो वि तं चेव घोसंतो चलिओ । अग्गओ पुणो वि भिल्लेहिं बुल्लाविओ । ते वि[12] तहेव 'गहगहिउ' त्ति भणिऊण गया । एवं पए पए पुलिंदाईणं दंसंतो पत्तो महाकंतारपारं । बीयदिवसे तहेव घोसंतो पडिनियत्तो[13] । तहेव उग्गाइओ गहग्गहिओ त्ति मुक्को

१ कज्जिजइ. २ कुणंत्ती. ३ मूसूण. ४ महत्तं. ५ णगाओ. ६ °बद्धे. ७ °खंडाणं. ८ नेच्छिय°. ९ महाडवि. १० °भिन्नोय. ११ गहं°. १२ व. १३ °नियत्तो.

य । तप्पभिइं[1] दूरट्ठिया चेव चोरा निहालयंति जाव सत्तमदिणे रयणाणि घेत्तूण गओ । सुहेण पत्तो सट्ठाणं, भोयाणं च भागी संवुत्तो[2] त्ति ।

तो जहा तेण धणेसरेण रयणाणि रक्खियाणि तहा अहं गहेल्लवि[3] हे(चेट्ठे ?)ण सीलरयणं रक्खेमि त्ति । मा [कयाइ] जीवंती कहिं पि कुलहरं पि पावेज्जा । किं तु जइ कह वि एसो राया इह एइ ता मम सरीरं पासइ तक्खणमेव भंजइ मे सीलं, ता न तीरइ गहिल्लत्तणं काउं, घरमज्झगया विहाणसेण मरिस्सं । अह अन्नो कोइ एही ता लद्धावसरा[4] अवहत्थियलज्ज-विणया अंगीकयसरीरसंतावा गहेल्लचेड्डुयमेव[5] पवज्जिस्सं । माया वि कारणे कीरमाणी न दोसमावहइ' त्ति निच्छियमणाए ।

[नम्मयासुंदरीए राइणो निमंतणं गहेल्लचेड्डुयकरणं य]

अन्नया रूवायन्नणावज्जियमाणसेण राइणा पेसिओ समागओ नम्मयागिहं दंडवासिओ । परियाणियकज्जाए कया तस्स पडिवत्ती पुच्छिओ य – 'किमा-गमणपओयणं ?' तेण भणियं – 'राइणा तुह दंसणुक्कंठिएणाहमायरेण समाइट्ठो "हरिणीठाणट्ठवियं राणियं सिग्घमाणेहि" ता तुरियं कीरउ गमणेण पसाओ ।' नम्मयाए भणियं –

'जं इच्छंती हियए तुमए तं चेव मज्झ आइट्ठं ।
इक्कं उक्कंठीया बीयं पुण बरहिणा लवियं ॥ ६९६
अत्थि च्चिय पुन्नाइं अम्हाणं नत्थि एत्थ संदेहो [प. २३ A]
जं संभरिया अज्ज महिवइणा इंदसेणेणं[6] ॥' ६९७

भणिया करिणी – 'भद्दे[7] ! सुयं तए सुभासियं –
जइ किज्जइ विट्ठालडउ लंघिज्जइ अप्पाणु ।
तो वरि गहिलिय ! तेण सहु जो दंगडइ पहाणु[8] ॥' ६९८

करिणीए भणियं – 'सुंदरमेयं, पुज्जंतु मणोरहा ।' नम्मयाए भणियं – 'सलक्खणा ते जीहा । पुणो एरिसमासीवायं मम दिज्जाहि' त्ति भणंतीए कारिओ दंडवासियस्स मज्जणभोयणाइओ उवयारो । अप्पणा वि कयमज्जणाइ-सिंगारा परिहियविसेसुज्जलवत्थाभरणा दंडवासिओवणीयसिवियारूढा चलिया नयराभिमुहं । अंतराले दिट्ठं घडिजंतं[9] वहमाणं । तओ भणियं – 'तन्हाइया अहं, उत्तारेह मं जेणेत्थ सहत्थेण पाणियं पियामि ।' तओ 'जमाणवे-सि' त्ति भणंतेण उत्तारिया दंडवासिएण, पत्ता विमलजलभरियं सारणिं[10] । तत्थ पाऊण पाणियं कुहियचेक्कणजंबाल[11]भरियखड्डाए लद्धावसरा फेल्हुसण[12]मिसेण

१ तप्पभिउं. २ संवोत्तो. ३ गहेल्लं. ४ °वंसरा. ५ °वेड्डुय°. ६ °सेणेगो. ७ भद्दा. ८ पाहाणु. ९ °जंतं. १० सारणीं. ११ जंवाल°. १२ पल्हुसण°.

झड त्ति निवडिया खड्डाए । तओ कयअट्टहासाए—'अहो ! राइणा ममेयमाभरणं[1] पेसियं' ति भणंतीए सव्वमालिंगियं सरीरं । एत्थंतरे 'हा सामिणि ! किमेयं ?' ति भणमाणो सम्मुहं[2]मागच्छंतो—'अरे रे ! रायगिहिणिं[3] अप्पणो भारियं काउमिच्छसि' त्ति जंपमाणीए पहओ कद्दमेण दंडवासिओ । 'अहो ! गहो' त्ति कओ जणेण कोलाहलो । विगरालीकयलोयणा[4] निल्लालियजीहा सिवारवं[5] कुणंती पहाविया जणसमूहसमुहं—'अहो ! रायभारियं गहिल्लि[6]मुल्लवह त्ति संचल्लह[7] रायउलं[8] जेण दंसेमि दुब्भासियं[9]फलं ।' एवमालजालाइं पलवंतीए दंडवासिओ रायसगासं साहिउं पयत्तो—'देव ! सव्वमेयं—

अम्मह परिचिंतिज्जइ सहसा[10] कंडुज्जुएण हियएण ।
परिणमइ अम्मह च्चिय कज्जारंभो विहिवसेण ॥ ६९९

जओ सा वराई सयमेव देवसंगमूसुया मम विन्नत्तियं सोऊण बहलरोमंचकंचुयं[11] चच्चक्कियं तणुं तुरियं[12] कयसिंगारं मह वयणेण समारूढा सिबियं ति । तयणंतरं "पच्चक्खा लच्छी न हि न हि रंभा तिलोत्तिमा मयणघरणि[13]" त्ति दिसि दिसि समुट्ठिया जणसमुल्लावा । मए पुण चिंतियं एयासिं संतियं रूवलायन्नं घेत्तूण देवस्स कए विहिणा निम्मविय त्ति । तओ देव ! न याणामि किं तीए चक्खुदोसो ? किं जलं पियंतीए उत्तेडियं किमपि[14] ? खड्डातीरेण गच्छंती धस त्ति निवडिया विगंधे जंबाल[15]मज्झे । तओ गहगहिया इव जणेण कीलाविज्जंती चेट्ठइ ।' तओ राइणा संभंतेण भणिओ—'गच्छ गच्छ सिग्घं ति, तिहुयणभूयवाइयमाणेहि[16] । अहं पि एस तत्थ पत्तो चेव ।' तओ दंडवासिएण समाहूओ[17] चेवागओ तिहुयणो । भणिओ रन्ना—'निरूवेहि को एस गहो ? केणोवाएण नियत्तइ ?' तिहुयणेण उग्घाडिया फुडपुत्थिया, निरूवियाइं गहलक्खणाइं । सुचिरं परिभाविऊण संलत्तं—'देव ! एस उवाओ नाम गहो[18] । पुरिसित्थिया[णा]मिह माणुससंगमपाविऊण ताणमुप्पज्जइ । असज्झो मंततंताणं, [प २३B] एयस्स इच्छाभंगो न कायव्वो । जं मग्गइ[19] तं चेव दिज्जइ, न य चंकारिज्जइ त्ति तओ कालेण सयमेव उवसमइ त्ति ।' तओ नम्मयसुंदरि[20]भागधेयचोइएण भूयवाइएण भणिएण रन्ना उग्घोसावियं सबाहिरब्भंतरे नयरे—'जो एयाए रायवल्लहाए गरुए वि अवराहे कए मंगुलं भणिस्सइ करिस्सइ वा, तमहं महादंडेण दंडिस्सामि' त्ति ।

१ °मालभणं. २ समुह°. ३ °गिहिणी. ४ °लोयणो. ५ सिवारयंती. ६
७ संचलह. ८ °उल. ९ दुब्भासियं°. १० सहस. ११ °कंचुयं. १२ तुरिय. १३ °घरणे. १४ किमंपि. १५ जंबाल°. १६ °माणेहिं. १७ सामा°. १८ गाहो. १९ मग्गइ. २० णम्मय°.

अह सा पच्चयहेउं जणस्स गहचेट्ठियं पयासेइ ।
हिंडइ घरं घरेणं पप्फोडंती कुलालाइं ॥ ७००
कत्थइ[1] खप्परहत्था भिक्खं मग्गइ कहिंचि जइ लहइ ।
छड्डाविज्जइ सहसा सह हिंडंतेहिँ डिंभेहिँ ॥ ७०१
चेक्खल्लं दट्ठूणं लिंपइ अंगं पुणो पुणो धणियं ।
सीसे[2] खिवइ कयारं छारेण य गुंडइ सरीरं ॥ ७०२
जरचीरचीरियाहिं वेढइ अंगाइँ दुगुणतिगुणाइं ।
दट्ठूण य निम्मल्लं मुंडे मालीं(लं?) सिरे कुणइ ॥ ७०३
जं जं रच्छाचीरं तं तं सव्वं[3] पि निवसइ कडीए ।
कत्थइ गया य नच्चइ कत्थइ फेकारवं कुणइ ॥ ७०४
गायई[4] हसइ य कत्थइ अन्नत्थ करेइ घोरधाहाओ ।
नारीए पुरिसस्स व निवडइ चलणेसु पहसंती ॥ ७०५
दिवसम्मि भमइ नयरे सुन्नघरे जुन्नदेउले वा वि ।
रत्तिं गंतुं छन्नं करेइ जिणवंदणाईयं ॥ ७०६
'रे जीव ! मा किलम्मसु एयाए लज्जणेज्जकिरियाए ।
जि च्चिय साहिंति दुक्खं ति च्चिय सुहभायणं होंति ॥ ७०७
सीलरयणं महग्घं किच्छेण वि जइ तरिज्ज रक्खेउं ।
ता होज्ज मज्झ तुट्ठी तिहुयणरज्जोवलंभे व ॥ ७०८
जइ जत्थ व तत्थ व जह व तह व रे हियय ! निवुइं[5] कुणसि ।
ता दुक्कह तुह जम्मंतरे वि दुक्खं चिय न होइ ॥ ७०९
रे जीव ! भवे आसिर जत्थ व तत्थ व सुही य गयनिंद ! ।
जेण व तेण व संतुट्ठ जीव ! मुणिओ[6] सि तं अप्पा ॥ ७१०
जं सोढं जीव ! तुमे दुक्खं सुन्नम्मि तम्मि दीवम्मि ।
भावेसु इमं सव्वं कित्तियभागो इमो तस्स ॥ ७११
हरिणीगेहम्मि तुमे सोढाउं[7] कयत्थणाउ भीमाउ ।
ताओ संभरमाणो मा झूरसु जीव ! एत्ताहे ॥' ७१२
एवं अणुसासंती[8] अप्पाणं जामिणिं[9] गमेऊण ।
पुणरवि पभायसमए जिणमुणिगुणसंथवं कुणइ ॥ ७१३

---

१ कत्थइहत्थ ख°. २ मीसे. ३ मव्वं. ४ गायइं. ५ निव्वुयं. ६ सुणिओ.
७ सोढाओ. ८ °सासंती. ९ जामिणी.

पुणरवि तहेव नयरे वियरइ कयगीयनच्चणपयासो[1] ।
अन्नदिणे घरदारे गायइ एयारिसं गीयं ॥ ७१४

'पभणइ लोगो गहिल्लिया सुस्सुइया ण अहं गहिल्लिया ।
जोएमि निरवज्जमिक्खयं जा नासइ सयलं पि दुक्खयं ॥' ७१५

[नम्मयासुंदरीए जिणदेवेण सह मिलणं]

एयं तीए गीयं निसुयं आसन्नमंदिरगएणं ।
सुस्सावएण केणइ अच्चंतं विम्हियमणेणं[2] ॥ ७१६
एयमउव्वं गीयं सम्मं हिययम्मि भावयंतेण ।
निरवज्जसद्दसुणणा 'नायं न णु नम्म[प.२४ A]या एसा ॥ ७१७
कारणवसेण केणइ एरिसनेवच्छधारिणी एसा ।
तो निच्छयं[3]नाणत्थं पुच्छिज्जइ छन्नभासाए ॥' ७१८
इयं[4] चिंतिऊण पुच्छइ – 'रे गह ! तं कस्स संतिओ तस्स(?) ।
पूएसि कं च[5] देवं अवयरिओ किमिह पत्तम्मि ? ॥' ७१९

तीए वुत्तं –

'सव्वजगजगडणपरो जेण हओ मोहदाणवो चंडो ।
तस्संतिओ गहो[6] हं लीलाए एत्थ निवसामि ॥ ७२०
तं चेव महादेवं सूरं धीरं जमुत्तमं वीरं ।
पूएमि भत्तिसारं किं न मुणसि सावओ तं सि ? ॥ ७२१
अवयरणकारणं पुण नाहं साहेमि तह वि नाओ सि ।
वच्चंति[7] अणिट्ठमणा बहवे[8] सागारिया लोया ॥' ७२२
भणियं च सावएण वि – 'जइ वि न साहेमि तह वि नाओ सि ।
हिंडसु जह मणइट्ठं किं अम्हं तुम्ह वुत्तीए ॥' ७२३
इय जंपंतो सहसा ओसरिओ सावओ तओ ठाणा ।
चिंतइ 'न हु सच्चगहो कारिमयं चेट्ठियं एयं ॥ ७२४
साहिउकामा वि इमा न कहइ सच्चं जणस्स संकाए ।
ता पइरिकं गंतुं पुच्छिस्सं एत्थ परमत्थं ॥' ७२५
तो अणुमग्गं तीए हिंडइ केणइ अणज्जमाणो सो ।
इयरी वि गहियभिक्खा विणिग्गया भोयणं काउं ॥ ७२६

---

१ °पयास. २ °मणेणा. ३ नेच्छय°. ४ एय. ५ किंचि. ६ गणो. ७ विचंति, ८ बहावे.

नयरस्स नाइदूरे[1] जिन्नुज्जाणे जणागमविहीणे ।
नाग[2]घरयम्मि पत्ता उवविट्ठा बोहए जीवं ॥ ७२७
'रे जीव ! मा धरिज्जसु निव्वेयं माणसे मणागं पि ।
दुहरूवं पि सुह च्चिय भावेज्जसु सम्ममेयं च ॥ ७२८
एयाइं[3] रच्छाचीवराइँ मन्निज्ज देवदूसाइं ।
रक्खेज्जइ जेहिँ दढं सव्वावायाण तुह देहो ॥ ७२९
जं पि य अंगे लग्गं कुहियं कद्दमविलेवणं एयं ।
सुट्ठु सुयंधं नाणसु सीलंगं कुणइ जं सुरहिं ॥ ७३०
एयं पि अंतपत्तं(पंतं) [अन्नं] भावेज्ज अमयरस[स]रिसं ।
एएण उवग्गहिओ जं देहगिहे तुमं वससि ॥ ७३१
भणउ जणो एस गहो तं चिय भावेसु एस मोक्खो त्ति ।
एयपसाएण तुमं जओ विमुक्को सि मिच्छाओ[4] ॥ ७३२
सोढव्वं दुहमेयं पाविज्जइ जा न निग्गमोवाओ ।
एवं वि सहंतीए मे होही सुंदरं सव्वं ॥ ७३३

भणियं च –

ता निंति किं पि कालं भमरा अवि कुडयवच्छ[5]कुसुमेसु ।
कुसुमंति जाव च्चया मयरंदुद्दामनिस्संदा ॥' ७३४
इय भाविऊण सुइरं मम्मं वेरग्गमग्गगहिया य ।
भुवणगुरूण जिणाणं संथवणं काउमारद्धा ॥ ७३५
'निम्महियमोहमल्ला बंधवभूया जणाण सव्वेसिं ।
जम्मजरमरणरहिया जयंतु तित्थेसरा सव्वे ॥ ७३६
भत्तिजुयाण जिणाणं जेसिं पयपंकयं थुणंताणं ।
वच्चंति दुरंताइं दूरंदूरेण दुरियाइं ॥ ७३७
निट्ठवियकम्मरिउणो[6] केवलवरनाणदंसणसमिद्धा ।
सासयसुहसंपत्ता जयंतु ते जिणवरा सव्वे ॥ ७३८
सव्वेसिं सिद्धाणं आयरियाणं च गुणस[प.२४ B]मिद्धाणं ।
तह य उवज्झायाणं नमो नमो होउ मे निच्चं ॥ ७३९
मोक्खपहसाहगाणं पाए पणमामि सव्वसाहूणं ।
सिवमग्गे सुट्ठियस्स य नमो नमो समणसंघस्स ॥' ७४०

---

१ नाइहूरे. २ मग°. ३ एयांइं. ४ मिच्छाओ. ५ °वत्थ°. ६ °रियणो.

एवं सत्थीभूयहियया जाव कवलगहणं काउमारद्धा, एत्थंतरे सो वि सावओ उआये पविसंति[मा]लोइऊण कयदिसालोओ दारंतरेण समागओ वागघरासन्नं[1] । 'गीयत्थो' त्ति काऊण भणिया – 'इओ निसीही ।' नम्मयासुंदरी निसीहीसद्दसवणाओ चिरावलोयणरहंगी[3] व मरिउं च जीविया हरिसभरनिब्भरा संवुत्ता[4] । तओ – 'सागयं निसीहियाए, वीसमह ताव महासावग ! इह सिणिद्धं[5]-तरुच्छायाए जावाहमप्पाणं संठवेमि[6] ।' ताहे अणवसरो त्ति नाउं निसन्नो तहाविहसिणिद्धतरुणं[7]वल्लीए । नम्मया वि तुरियं तुरियं कयकइवयकवलाहारा कालोचियविहियसरीरसंठवणा – 'एहि एहि' त्ति भणंती निग्गया संमुही । मन्नुभरनिरुद्धकंठा निवडिया य तस्स चलणेसु रोविउं[8] च पवत्ता । सावगेणावि महुरवयणेहिं आसासिऊण भणिया – 'महाणुभावे ! किं तं रोइसि ?' त्ति । नम्मयाए रुयमाणीए चेव सिट्ठं – 'बहुकालाओ धम्मबंधवो तुमं दिट्ठो, नं[9] य लोयावंरा(यविंदा ?)ओ बीह[माणीए ?] मए वयणमित्तेणावि तुह विणय-पडिवत्ती कया ।' सावगेण वुत्तं[10] – 'मुद्धे[11] ! मा एयनिमित्तं खेयमुव्वहसि । कयं चेव सव्वं तुमए एरिससाहम्मियपक्खवायमुव्वहंतीए[12], साहिओ तए नियभावो[13] गूढक्खराए वाणीए । मए वि लक्खिओ चेव कहमन्नहा इत्थागओ ? त्ति[14] । ता होसु सुविसत्था । सुणाहि मम वत्तं – अहं भरुयच्छनिवासी जिणदेवो नाम वीरजिणसासणाणुरत्तचित्तो[15] मित्तो वीरदासस्स । सो वि इत्थ आगंतुकामेणेमेहिं घयभरियं[16]सगडेहिं संपत्तो पोयठाणं । दिट्ठो[17] य मए तत्थ थिरधरियजाणवत्तो अंसुजलोल्लियकवोलो[18] वीरदासो । पुच्छिओ य मए – 'कओ भवं ? किं च सोयाउरो[19] लक्खियसि ? ।' निवेइयं च तेण – 'मए बब्बरं[20]कूलगएण हारिया नम्मयासुंदरी । गविट्ठा सा बाहिरब्भंतरे नयरे बहूणि दिणाणि । न से पउत्तिमेत्तं पि उवलद्धं, न अम्हेसु चिट्ठंतेसु सा पायडा होइ त्ति कलिऊण समागया वयं । एयं मे उव्वेयकारणं, गेहं गंतूण पुणो वि भायसहिएण सिग्घं तत्थ गंतव्वं । तुमं पुण कत्थ पत्थिओ सि ?' मए भणियं – 'अहं पि तत्थ दीवे गमिस्सं ।' 'जइ एवं गच्छिहिसि[21] तुमं तत्थ [न]म्मयं तं अत्थेण सामत्थेण सव्वस्सेण वा मोयाविज्जासि ।' मए भणियं – 'जा तुह भायधूया सा किं मम धूया न होइ ? अच्छह तुब्भे वीसत्था जाव ममागमणं ।' अहं पुण 'तं दिट्ठमसोहयं मोत्तूण न पडिनियत्तामि' त्ति कयपइन्नो चलिओ [प. २५ A] म्हि ।

---

१ पविसंती°. २ °रासन्न. ३ °रहगी. ४ संतुत्ता. ५ मिणिद्ध°. ६ मंठवेमि. ७ °तरुण°. ८ रोविओ. ९ ने. १० वोत्तं. ११ सुद्धे. १२ °मोव्वहं°. १३ °भावे. १४ त्ति. १५ °चित्ते. १६ °भरीय°. १७ हिट्ठो. १८ °कवोलो. १९ सोयाओरो. २० बब्बर°. २१ वच्छिहिसि.

अंतरा य मम पोओ पडिकूलपवणेण दीवंतरं[1] नीओ । चिरकालेणाणुकूलपवणो पाविओ । तेण चिरेणेह पत्तो म्हि । अन्नेसिया मए तुमं इत्थ, न कत्थइ उवलद्धा सि । अज्ज पुणासंभावणिज्जरूवा वि 'अणवज्जं[2]भिक्खं माएमि' त्ति सोऊण, कुओ इत्थ अणवज्जसद्दो त्ति संकिएण पुच्छिया सि । तुमं पि साहेहि एत्तियदियहेहिं किं सुहमणुभूयं, किं वा गहिल्लचेट्ठएणं[3] हिंडसि ?' । एवं पुट्ठाए सिट्ठं नम्म[या]ए हरिणीओ आरब्भ वट्टमाणदिवसावसाणं नियचरियं । तं सोऊण समुट्ठियसिय(?)रोमेण भणियं जिणदेवेण–

'धन्ना सि तुमं वच्छे अइदुक्करगारिए महासत्ते ! ।
सोमालसरीराए जं विसहियमेरिसं दुक्खं ॥ ७४१
सच्चो जणप्पवाओ मरइ अखुट्टे न जीवए को वि ।
जं तह ताडिज्जंतं पाणेहि न वज्जियं अंगं ॥ ७४२
धीराण तुमं धीरा जीए तह दारुणं महावसणं[4] ।
सम्ममहियासियं सिय(?) न बालमरणे कया वंछा ॥ ७४३
तं धन्ना धन्नयरी धम्मीणं धम्मिणी तुमं चेव ।
जीए वसणसमुद्दे धम्मतरंडं न परिचत्तं ॥ ७४४
सीलवईणं मज्झे पढमा लेहा लिहिज्जए तुज्झ ।
जीए नि[य]बुद्धीए मेच्छाओ रक्खिओ अप्पा ॥ ७४५

[जिणदेवकयं नम्मयासुंदरीमोयणं]

संपइ सुणेहि सुंदरि ! जाया तुह मोयणम्मि[5] मह बुद्धी ।
वित्तवयभीरूणं न हु सिज्झइ एरिसं कज्जं ॥ ७४६
कल्लं च मए निसुयं एमा इट्ठा दढं[6] नरिंदस्स ।
नयरा दूरं जंती रक्खिज्जइ रायपुरिसेहिं ॥ ७४७
गरुयम्मि वि यऽवराहे एईए विप्पियं कुणइ जो उँ[7] ।
देइ तणुं च पहारं सो पावइ दारुणं दंडं ॥ ७४८
ता हरिउं न हि तीरसि धणेण बहुणा वि मुयई[8] न हु मुच्छा ।
नवरं तु पक्खवाई दढमेसो पोयवणियाणं ॥ ७४९
तेसु सुहिएसु तूसइ दूमेज्जइ ताण दुक्खलेसेण ।
तेसुमवराहकारिसु गाढं कोयाउरो होइ ॥ ७५०
ता हं सुयणु ! पहाए रायघरासन्नचच्चरे भद्दे ! ।
ठाविस्समणेगाइं घयकुंभसयाइँ पंतीए ॥ ७५१

१ दीवंतर. २ अणविज्ज°. ३ महिल्लविज्जुएण. ४ °सवणं. ५ सोयणम्मि. ६ इहं. ७ मो. ८ सुयइ.

घेत्तूण लउडयं तो ताइं फोडिज्ज निद्दया होउं।
मा मं पोक्करमाणं गणेसु कलुणं पि कंदंतं ॥' ७५२
उल्लवइ नम्मया तो – 'नाहं एयारिसी महापावा।
एत्तियमत्थविणासं काहं जा नियवप्पस्स ॥' ७५३

जिणदेवेण वुत्तं –

'एवं कयम्मि वच्छे! कोवानलडज्झमाणसव्वंगो।
मुंचीहि[1] धुवं मिच्छो ता होही सुंदरं सव्वं ॥ ७५४
वित्तं च तं पवित्तं जस्स वओ[2] कुणइ मोयणं तुज्झ।
तुह लाभाउ न अन्नो गरुययरो मज्झ धणलाभो ॥ ७५५
ता कुणसु मज्झ वयणं मा चिन्तं[3] कुणसु अन्नहा पुत्ति!।'
एवं कयसंकेओ जिणदेवो उट्ठिओ तत्तो ॥ ७५६

कयं च दुइयदियहे जहाइट्ठं नम्मयाए। तओ दोहि वि करेहि सो[4] पोट्ट-पिट्टणं[5] कुणमाणो पोक्करिउमारद्धो घयसामी जाव हाहारवमुहलो[6] मिलिओ नयर[प. २५ B]लोगो। उग्घोसिओ य अन्नओ[7] सुंकसालिएहिं – 'अहो! भग्गो मग्गो संजत्तियाणं। अहो! मूढो राया जो एयं महारक्खसिं दीवाओ न निद्धाडेइ।' एवंविहे जणुल्लावे निसामिंतो[8] राया चिंतेइ 'न एसग्गहो उवसमइ, किंतु अहिगयरा दोसवुड्ढी भविस्सइ। इओ दीवंतरेसु अप्पसिद्धी। नागमिस्संति पवहणाणि[9] ता जणभणियं निद्धाडणमेवोचियमेयाए।' एत्थंतरे बहुजणपरिवेढिओ महया सद्देण पोकारंतो समागओ रायसमीवं जिणदेवो, भणिउं[10] च पवत्तो – 'देव! पोयवणियाणमइ[11]वच्छलो त्ति पसिद्धीओ[12] वयं कयं-तवयणं भीसणं महोयहिमोगाहिऊणेहागया। एत्थ पुण एस ववहारो, केरिसीए मुहं[13]च्छायाए पडिगच्छामि? णेगाइं घडसयाइं लाभकए आणियाणि मे एत्थ। पिच्छउ[14] देवो एसा पुररच्छाए नई वूढा।

काउं रिणं पभूयं संगहियं घयमिणं मए भूरि।
लाभेण होउ इन्हिं मूलं दावेह नरनाह! ॥ ७५७
ससिकासकु[सु]मधवलो वियरइ महिमंडले जसो तुम्हा।
सो पहु! अवस्स नासइ एयाएँ कहाइ भीमाए ॥ ७५८
आहव[इ?] जस्स एसा दाविज्जउ तेण मज्झ घयमोल्लं।
मह विन्नत्ती एसा मा कीरउ निप्फलो[15] सामि! ॥' ७५९

१ मुंचुहि. २ वउ. ३ चेसं. ४ सि. ५ °पेट्टणं. ६ °सुहलो. ७ अन्नाओ. ८ °मितो. ९ पवाहणाणि. १० भानणिउं. ११ °वणियाणंमयव°. १२ पसिद्धिओ. १३ सुह°. १४ पिच्छओ. १५ निफला.

पडिभणइ पत्थिवो तो – 'जा पीडा सत्थवाह ! तुह अज्ज ।
तत्तो अब्भहियतमा वट्टइ मह माणसे भद्द ! ॥ ७६०
गहगहियाएँ इमाए कुविएहि वि किमिह तीरई काउं ।
एयाए अवराहे को दाविज्जउ धणं तुज्झ ॥ ७६१
आहवई पुण एसा मह चेव किमित्थ अन्नभणिएहिं ।
दिन्ना मए तुहेसा दाउं न तरामि घयमोल्लं ॥ ७६२
जह भंडं चयमाणो मुंचइ सुंकस्स वाणिओ नियमा ।
तह एसा तुह दिन्ना मा कुण अम्हाणमवराहं ॥' ७६३
आह पुणो जिणदेवो – 'गहगहियाए पओयणं किं मे ।
किंतु म सक्का गणिउं बला वि दंता गयमुहम्मि ॥ ७६४
नायं च मए महिवइ ! एएण मिसेण निययदीवाओ ।
धाडेउमिमं इच्छसि छड्डणमोल्लं[1] तह वि देसु ॥' ७६५
हसिऊण भणइ राया – 'जइ एवं सत्थवाह ! मह रज्जे[2] ।
उस्सुंकं तुह भंडं एसा वाया मए दिन्ना ॥' ७६६
'जइ एवं तो निययं कोवफलं पायडेमि[3] एयाए ।'
इय भणिउं जिणदेवो दीहररज्जुं करे घेत्तुं ॥ ७६७
बंधइ जणपच्चक्खं पहसंती सा वि तं इमं भणइ ।
'किं एस चूडओ मे परिहिज्जइ राइणा[4] दिन्नो ? ॥' ७६८
तो जिणदेवो जंपइ – 'अज्ज वि फोडिज्ज घयघडे बहुए ।
एरिसआभरणाइं तो परिहिस्सं तुह बहूणि ॥' ७६९
एवं दंसियकोवो घेत्तुं[5] बाहाएँ दिन्नउक्कोसो ।
जणपच्चयजणणत्थं गओ लहुं निययमावासं ॥ ७७०
थाणुम्मि बं[प. २६ A]धिऊणं – 'भुंजसु दुन्नयफलाइँ' घोसंतो ।
नियकिच्चम्मि[6] पवत्तो जणो वि कुक्कुत्थिओ सत्थो ॥ ७७१
परितुट्ठो जिणदेवो ताहे तं पडकुडीय छोढूण ।
पक्खालइ पयकमलं अब्भंगउवट्टणं[7] कुणइ ॥ ७७२
मज्जावेइ [य] विहिणा परिहावइ सुंदराइँ[8] वत्थाइं ।
अणुणेइ महुरवयणं कारेई भोयणं सुहयं ॥ ७७३
भणइ य एसो[9] – 'जत्ता सहला मह अज्ज सुयणु ! संजाया ।
मन्नामि तुज्झ लाभे तिहुयणरज्जं मए पत्तं ॥' ७७४

---

१ °मोल्लं. २ रज्जो. ३ पायडिमि. ४ रायणा. ५ घेत्तु वहाए. ६ °किच्चंमि. ७ °उवट्टणं. ८ सुंदराइं. ९ एसा.

चिंतेइ नम्मया वि हु 'जम्मंतरबंधवो इमो नूणं[1] ।
नरया उद्धरिऊणं जेणाहं ठाविया सग्गे ॥' ७७५
एवं पमोयसागरपडियाण परोप्परं दुविन्हं पि ।
सुहसंलावपराणं वोलीणो वासरो अं त्ति ॥ ७७६
तत्तो जिणदेवेणं[2] खणेण पउणीकओ नियययोओ ।
रयणिमुहि[3] च्चिय तहियं आरूढो[4] नम्मयासहिओ ॥ ७७७
'पच्छायावी कयाइ भुज्जो वि कहं पि मा हु तु(मु?)चेजा ।'
इय संकाए सहसा मुक्को पोओ महावेगो ॥ ७७८
कम्मम्मि[5] समणुकूले[6] सव्वं जीवस्स होइ अणुकूलं ।
तत्तो य तक्खणेणं अणुकूलो मारुओ[7] लग्गो ॥ ७७९
उवसंतसयलविग्घो जिणदेवो वासरेहिँ थेवेहिँ ।
संपत्तो भरुयच्छे बंधवजणकयमहाणंदो ॥ ७८०

[नम्मयासुंदरीए सयणाण सह मिलणं]

पट्ठाविओ य तुरियं लेहो[8] नम्मयपुरम्मि सयणाणं ।
लाभेण नम्मयासुंदरीवि(ऍ?) वद्धावणनिमित्तं ॥ ७८१
परिओसनिब्भरा ओलंघि(?) उ(तु?)रंगेहि पवणजवणेहिं ।
सहदेव-वीरदासा सबंधवा तत्थ[9] संपत्ता ॥ ७८२
सम्माणिया य सव्वे जिणदेवेणावि हट्ठतुट्ठेण ।
मिलिया[10] य नम्मयाए तुट्ठा उक्कंठियमणाए ॥ ७८३
काउं कंठग्गहणं परोप्परं रोवियं च तह करुणं[11] ।
उग्गिलियमणोदुक्खा जिणदेवेणावि ते भणिया ॥ ७८४
'कज्जे समइक्कंते रुन्ने को इत्थ किर गुणो होइ ।
अज्जं खु नम्मयासंगमम्मि[12] नणु होह साणंदा ॥' ७८५
कयवयणधोवणाइं सव्वेसि सुहासणेसु बइठाणं[13] ।
जिणदेवो वुत्तंतं[14] जहदिट्ठसुयं कहइ तेसिं ॥ ७८६
जह हरिया दासीहिं सुचिरं सेहाविया य हरिणीए ।
जह सामित्तं पत्ता तासिं कवडग्गहो य कओ ॥ ७८७

१ अज्ज. २ जिणं°. ३ रेयणिमुहि. ४ आरुहो. ५ कम्ममि. ६ समण°. ७ मारूओ. ८ लहो. ९ इत्थ°. १० सिलिया. ११ करणं. १२ °संगमि. १३ बइट्ठाणं. १४ वोत्तंतं.

दुक्खेण परिन्नाया दुक्खं मोयाविया य मेच्छाओ।
जिणदेवेण सवित्थरमक्खायं जा गिहागमणं॥ ७८८
तो नम्मयाइ दुक्खं सव्वेसु वि बंधवेसु संकंतं।
ऊससियरोमकूवा सव्वे पलवंति तो एवं॥ ७८९
'भो[1] सोमालसरीरे! कह एयं विसहियं तुमे दुक्खं।
कन्नविवरे पइट्ठं अम्हे सोढुं न हि तरामो॥ ७९०
सुहलालिया वि सुहपालिया वि सयणा[प. २६ B]ण सुट्ठु इट्ठा वि।
हा! कह कम्मवसेणं वसणसमुद्दम्मि बुड्डा सि॥ ७९१
किं नाम सा हयासा हरिणी तुह पुव्ववेरिणी आसि।
इयनिंदियहिययाए जीए सेहाविया तं सि॥ ७९२
एरिसनिग्घिणहियया दीसइ नारी न काइ जियलोए।
सा उ अणज्जा पावा संजाया एरिसी कह णु॥ ७९३
कह बालिस[2]भावाए सहिया तह तारिसी तए पीडा।
कह नियजणरहियाए पाणा संधारिया तुमए॥ ७९४
कह बालिमभावाए तुमए संपाविया इमा बुद्धी।
अगणियतणुदुक्खाए कवडगहो[3] जं कओ तुमए॥ ७९५
धन्ना सि तुमं वच्छे! अम्ह वि पुव्वाइँ[4] अत्थि पुन्नाइं[5]।
जमखंडियवयनियमा मिलिया अम्हाण जीवंती॥' ७९६
इय सोऊणं बहुहा बहुसो उववूहिऊण गुणनिवहं।
तं ठविया रुयमाणी सा बाला अंबताएहिं॥ ७९७
अह जिणदेवो भणिओ—'सज्जण! जिणदेव! साहु साहु कयं।
अवहत्थिऊण तत्तियवित्तं जं मोइया एसा॥ ७९८
सुयणाण तुमं सुयणो उत्तमपुरिसाण उत्तमो तं सि।
धम्मीण धम्मिओ तं साहम्मियवच्छलो तं सि॥ ७९९
तुह सुंदर! सव्वगुणा एगेण मुहेण वन्निमो कह णु?।
जलहिम्मि[6] व रयणाणं जेसि न पाविज्जई अंतो॥ ८००
साहम्मियधुरधवलो तं खलु सव्वस्स पूयणिज्जो सि।
इय गिण्हसु एयाओ बत्तीस हिरन्नकोडीओ॥' ८०१
इय भणिरो सहदेवो पडिओ चलणेसु बंधुणा सद्धिं।
जिणदेवो वि पयंपइ—'मा बंधव! एवमाइससुँ॥ ८०२

---

१ मो. २ बालिस°. ३ °राहो. ४ पुत्ताइं. ५ पुन्नाइं. ६ जलहम्मि. ७ °माइसुसु.

तुह नंदिणि[1] त्ति भणिउं न मए मोयाविया इमा किंतु ।
साहम्मिणि त्ति काउं जिणसासणपक्खवाएण ॥ ८०३
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं वण्णियं जिणमयम्मि ।
जेणं पढिज्जइ धणवइ ! जिणागमे एरिसा गाहा ॥ ८०४
साहम्मियवच्छल्लम्मि उज्जुया उज्जया य सज्झाए ।
चरणकरणम्मि य तहा तित्थस्स पभावणाए य ॥ ८०५
जिणसासणस्स सारो जीवदया निग्गहो कसायाणं ।
साहम्मियवच्छलया तह भत्ती जिणवरिंदाणं ॥ ८०६
एगत्थ सव्वधम्मो साहम्मियवच्छलत्तमेगत्थ ।
बुद्धितुलाएँ ठवियाइँ दो वि तुल्लाइँ भणियाइं ॥ ८०७
जो मंदमई पुरिसो न कुणइ साहम्मियाण वच्छल्लं ।
जिणसासणस्स तत्तं न मुणइ सो छेयमाणी वि ॥ ८०८
एवं च महापुन्नं समज्जियं मोयणेण एयाए ।
तुम्ह धणं गेण्हंतो हारेमि[5] न संपयं इत्थ ॥ ८०९
दीणारेणेक्केणं दो पडियारा न चेव लब्भंति ।
एवं न होंति दोन्नि वि धणवइ ! अत्थो य धम्मो य ॥' ८१०
आह तओ सहदेवो – 'जइ तुमए मोइया [प. २७ A] निययधूया ।
भण तत्थ किमम्हाणं तुज्झ नियं चेव तं कज्जं ॥ ८११
अम्हेहिँ किं न कज्जा उत्तमसाहम्मियस्स तुह पूया ।
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं मन्नमाणेहिं ॥ ८१२
मोयंतेण सधूयं निरीहचित्तेण अज्जियं[6] पुन्नं ।
इन्हि पि तं निरीहो ता कह नासइ तयं तुज्झ ? ॥' ८१३
एवं बहुप्पयारं विचित्तउत्तीहिं बोहिओ संतो ।
अग्गट्ठिय(?)दक्खिन्नो जिणदेवो गाहिओ वित्तं ॥ ८१४
संपूइया य दोन्नि वि जिणदेवेणावि ते सपरिवारा ।
जाओ परमाणंदो एवं सव्वेसि सयणाणं ॥ ८१५
ठाऊण केइ दियहे परिवड्ढियगुरुसणेहसंताणे ।
आपुच्छिय जिणदेवं सहदेवो पत्थिओ नयरं ॥ ८१६
विन्नवइ नम्मया तो जिणदेवं[7] निवडिऊण चलणेसु ।
'देज्जउ मम आएसो चेट्ठामि वयामि वा ताय ! ॥' ८१७

---

१ निंदणि. २ जिण. ३ °वक्काए. ४ सुणइ. ५ हारेमि. ६ अज्जियं. ७ °देवे.

सो वि तयं पडिजंपइ – 'वत्थालंकारभूसियं काउं।
पुत्ति ! पयट्टसु मग्गे होज्ज विणीया गुरुजणस्स ॥' ८१८
घेत्तूण नम्मयं तो सहदेवो पडिगओ सनयरम्मि।
नम्मयजम्मदिणम्मि व वद्धावणयं तओ विहियं ॥ ८१९
नाणाविहकोसल्लियहत्था पत्ता समत्तपुरपुरिसा।
आसीवायपवत्ता अक्खयहत्था य नारिगणा ॥ ८२०
पणमंति नम्मयाए पाए केई वियासिमुहकमला।
कुणइ पणामं केसिंचि नम्मया नमणजोग्गाण[1] ॥ ८२१
जो जत्तियस्स जोग्गो सम्माणं[2] तस्स तत्तियं कुणइ।
सहस त्ति वीरदासो मणपरिओसं विवड्ढंतो ॥ ८२२
अट्ठाहिया य महिमा पवत्तिया जिणहरेसु सव्वेसु।
पडिलाभिया य मुणिणो फासुयघयणंतमा(गा)ईहिं ॥ ८२३
कासी य नम्मया वि हु जिणच्चणं पइदिणं[3] तिसंझं[4] पि।
आवस्सगकरणेज्जं करेइ समणीण सन्निहिया ॥ ८२४
सरियअणुहूयदुक्खा अणुसमयं वड्ढमाणसंवेगा।
संजमगहणे[5]क्कमणा चेट्ठइ गुरुसंगमा एसा ॥ ८२५

[सुहत्थिसूरिणो नम्मयपुरे ओसरणं]

अह अन्नया कयाई चउदसपुव्विस्स[6] थूलिभद्दस्स।
सीसो दसपुव्वधरो तवतविओ उज्जयविहारी ॥ ८२६
संपइरायस्स[7] गुरू गामागरनगरपट्टणपसिद्धो।
विहरंतो ओसरिओ सुहत्थिसूरी तहिं नयरे ॥ ८२७

जो सोमो वि णिक्कलंको, सूरो वि तवे अमंदो[8], समुद्दो वि खाररहिओ, मंदरागो वि जडत्तवज्जिओ। तहा सूरो इव पयावी, चंदो इव सोमदंसणो, सागरो इव गंभीरयाए, मंदरो इव धीरयाए, पईवो इव अन्नाणतिमिरमोहियाणं, कप्पपायवो[9] धम्मोवएसफलदाणे, सारमोसहं मोहमहारोगस्स, घणाघणो कोवदावानलस्स, कुलिसपाओ माणमहीधरस्स, पक्खिराओ मायाभुयंगीए[10], पवणो लोहमेह[प. २७ B]पडलस्स। तहा संजओ वि अबंधणो, सुगुत्तो वि सयलजणपयडो, समिई[11]पहाणो [वि] अवह[12]त्थियपहरणो त्ति। अविय –

धम्माधम्मविहन्नू बंधवभूओ जियाणं[13] सव्वेसि।
परहियकरणेक्करसो जुगप्पहाणो विमलनाणो ॥ ८२८

१ °ओगाण. २ मम्माणं. ३ पयदिणं. ४ तिसज्झं. ५ °महणे°. ६ °पुव्विस्सा. ७ °रायास्स. ८ अमंदो. ९ °पाइवो. १० साया°. ११ समीइ°. १२ अवह°. १३ नियाण.

सोउं तस्सागमणं सकोउहल्लो[1] खणेण संचल्लो।
सयलो नरनारिगणो वंदणहेउं मुणिवरस्स॥ ८२९
सिट्ठी वि उसभदत्तो पमोयसमुल्लसियबहलरोमंचो।
सयणसुहिपुत्तजुत्तो सविड्ढीए[2] समुच्छलिओ॥ ८३०
चलिया य नम्मयासुंदरी वि जणणीपुरस्सरा तुरियं।
उच्छलियमहामोया रविउग्गमणे कमलिणि व॥ ८३१
तिपयाहिणिं[3] करित्ता पंचंगपणामपुव्वयं सव्वे।
संसंति समणसीहं कयकरयलसंपुडा[4] एवं॥ ८३२
'जय मुणिमहुयरसेविज्जमाणलक्खणसणाहपयपउम!।
दंसणमेत्तपणासियनयजणनीसेसपावमल!॥ ८३३
संघसरोवरवररायहंस! मिच्छत्तकोसियदिणेस!।
दुक्खत्त[5]सत्तबंधव! धवलजसापूरियदियंत!॥ ८३४
बहुकालाओ अज्जं अंकुरिओ पुन्नपायवो अम्ह।
जं दिट्ठो सि महायस! अइदुल्लहदंसणो नाह!॥' ८३५
एवं गुरुं थुणंता वंदित्ता सेसमुणिवरे विहिणा।
उवविट्ठो गुरुमूले वंदारुजणो जहाठाणं॥ ८३६
उवविट्ठाण य गुरुणा नवजलहरगहिरमहुरघोसेण।
पारद्धा धम्मकहा मयरसनिस्संदसुंदेरा॥ ८३७
'भो भो! सुणेह सम्मं चउगइसंसारसायरे बुड्डा।
विसहंति जेण जीवा तिक्खाइं दुक्खलक्खाइं॥ ८३८
जह जच्चंधो पुरिसो पवंचिओ निद्दएहिं धुत्तेहिं।
पडइ गहिरंधकूवे कंटयमज्झम्मि जलणे वा॥ ८३९
एवं अन्नाणंधा जीवा धुत्तेहिं[6] रागदोसेहिं।
कयसंमोहा बहुसो नारयतिरिएसु हिंडंति॥ ८४०
पाणवहासच्चगिराचोरेक्काबंभपरिग्गहासत्ता।
अज्जिय[7]बहुपावमला[8] पडंति नरयावडे केवि॥ ८४१
निस्सीमारंभपरिग्गहेसु गिद्धा असंति गिद्ध व।
मंसवससोणियाइं के वि नरा जंति तो नरए॥ ८४२
तत्थ य छिंदणभिंदणउक्कत्तणफालणाइ वि सहंति[9]।
पच्चंति कुंभियाए वेयरणिजलम्मि छुब्भंति॥ ८४३

१ मुक्कोड°. २ सुविड्ढीए. ३ °हिणी. ४ °संपुडा. ५ दुक्खंत. ६ धुत्तेहं. ७ अजिय°. ८ °पावकमला. ९ हसंति.

घोराइं दुक्खाइं नरएसु सहंति पाविणो जाइं।
कोडिसमाऊ वि नरो को वन्नेउं[1] तरइ[2] ताइं ॥ ८४४

मायाए मुद्धजणं कूडतुलाकूडमाणभंडेहिं।
वंचित्तु जंति केइ वि तिरियगइं[3] कम्मपरतंता ॥ ८४५

बहुकूडकवडनडिया लंचुं[4]कोडाइगहणतत्तिल्ला।
गयकरहतुरंगाइसु वाहणतिरिएसु गच्छंति ॥ ८४६

जलयरथलयरखयरा मंसासी जीवघायगा कूरा।
लद्धूण वि तिरियत्तं हुंति पुणो नारया दीणा ॥ ८४७

पत्तेयमणुयभावे जे धम्मं नायरंति [प. २८ A] जिणभणियं।
नारयतिरिएसु चिरं ते वि पयट्टंति बहुमोहा ॥ ८४८

जिणवयणोसहजोगा अन्नाणंधत्तमूसरइ जेसिं।
वामोहिज्जंति न ते रागद्दोसेहिं[5] धुत्तेहिं ॥ ८४९

सम्मत्तनाणचरणाभरणेहिं अलंकिया कयपमोया।
पावंति उत्तमसुहं देवत्तं पुण वि मणुयत्तं ॥ ८५०

ता जाव म संपज्जइ सुदुल्लहो खाइओ चरणजोगो।
तम्मि पुणो संपत्ते नियमा पावंति निव्वाणं ॥ ८५१

तत्थ उदाहरण न गंधो(?) उवमाइयं सुहं सयाकालं।
अणुहुंति[6] सव्वजीवा अपुणब्भवभावमावन्ना ॥ ८५२

एवं नाऊण जणा ! रागद्दोसाण निग्गहसमत्थं।
पडिगिण्हह[8] जिणवयणं जेणाणुत्तरसुहं लहहा ॥' ८५३

एवं च सूरिमुहमयंकवज्जरियं देसणामयं कन्नंजलीहिं मायामाया-(आयामा ?)वियमाणाणं खणेणावगयं मिच्छत्तविसं। संजाओ केसिं चरणधरण-परिणामो, समासादियं[10] केहिं पि बोहिबीयं ति। एत्थंतरे लद्धावसरेण पुच्छियं वीरदासेण–'भयवं ! एसा अम्ह धूया भावियजिणवयणा[11] सरयससहरकिरणपुंज-समुज्जलसीला किमे[रि]सावयाण भायणं संवुत्ता ?' ताहे भगवया विहियसुय-नाणोवओगेण सम्ममवधारिऊण वज्जरियं–'धम्मसीले[12] ! संसारे जीवाणं दोन्नि भंडागाराणि संति–पुन्नागारं पावागारं च। जया[13] च जीवस्स ठिईखएण पुन्ना-गाराउ पुन्नमुदयं[14] लहइ तया जीवो सुही होइ, जया य पावागाराउ पावमुदयमेइ तया जीवो दुही होइ। जया य दो वि उदिज्जंति तया जीवो मिस्साइं सुहदुक्खाइं

---

१ वन्नेउ. २ तरह. ३ °गई. ४ लंबु°. ५ °दोसेहिं. ६ अणुहुति. ७ अपुण°. ८ °गिण्हह. ९ °णुत्तर°. १० °सासियं. ११ °वयण. १२ °सीला. १३ जाया. १४ °सुहलयं.

वेएइ[1] । जं च उक्कडं तस्स ववएसो होइ । ता पयाए तुह धूयाए सुकुलजम्मो जिणवरधम्मो रूवकलाकलावजुत्तया भोगोवभोगसंपया – एयमणग्घं[2] पुव्वो(को)दय-माहप्पं । जं पुणो मणुस्से विरामो, सुवदीवे चागो, वेसाहि हरणं, तहाविह-दुक्खजायणाकस्सं – एयं महाबलं पावोदयपायवफलं ति ।' पुणो पणमिऊण वीरदासेण पुच्छियं – 'भयवं ! कहं पुण[3] दुग्गमेयमेयाए उव्वज्जियं[4] ? ति नाउमिच्छामि, तो विसेसेणाणुग्गहं काऊण कहिउमरिहंति मे भगवंतो त्ति ।' तओ भयवं तस्स अन्नेसिं च लोयाणमणुग्गहनिमित्तं साहेउमारद्धो । अवि य –

[नम्मयासुंदरीए पुव्वभववण्णणा]

अत्थि कलिंजय(र)विसए गामो सिरिमेलउ त्ति नामेण ।
तत्थ सिरियालनामो एगो कुलपुत्तओ होत्था ॥ ८५४

तस्स य सुरूवकलिया सिरिप्पभा भारिया सिणेहवई ।
गरुयाणुरायकलिया ताणं कालो सुहं जाइ ॥ ८५५

अन्नदिणे सिरिपालो समाणमित्तेहिँ एवमुल्लविओ ।
'गंतूण अमुगगामं लूडेमो अज्जरयणीए ॥ ८५६

जो कोइ तत्थ ला[प २८B]भो तस्सद्धं[5] तुज्झ सेसमम्हाणं ।
दिज्जाहि जहाजोगं विभजिस्सामो य तो अम्हे ॥ ८५७

किं तस्स जीविएणं नरस्स रंड व्व विगयववसाओ ।
जो चारणेहिँ निच्चं न हु गिज्जइ दंतिदंतीहिँ(?) ॥' ८५८

सोऊण समुल्लावं सिरिप्पभाए पिओ निओ भणिओ ।
'मा नाह ! कुणसु वयणं एएसिं पावमेत्ताणं ॥ ८५९

धणधन्नसमिद्धप(घ)रं मोत्तूण कुणंति रोरियमणेगे ।
धणसामिपहावहया चुक्कंति सये(गे?)हभोगाणं ॥ ८६०

पेच्छइ[6] छीरं[7] वरओ मंजारो[8] न उण लउडयपहारं ।
पेच्छंति परेसि धणं निययं मरणं[9] न पेच्छंति ॥ ८६१

जे हुंति नरा दुत्था धरिउं न तरंति अन्नहा जीयं ।
ते खलु चोरियजूयं रमंति हरिउं व मरिउं वा ॥ ८६२

तं पुण धन्नसउन्नो विलससु नियसंपइं[10] सया सुहओ ।
सद्दाणट्ठेणं[11] सयं[12] अलाहि चोरेक्क[13]करणेण ॥' ८६३

---

1 वेयइ. 2 एयगणग्घं. 3 पुण°. 4 उवजियं. 5 तस्सधं. 6 पच्छइ. 7 सछीरं. 8 मघारो. 9 नियय गरणं. 10 °संपई. 11 सद्दाणेट्ठेण. 12 मयं. 13 चोपुक्क°.

लोहमहागहगहिओ सिरिपालो संठवेइ नियदइयं ।
'नाहं करेमि एयं दइए ! तं चेट्ठ सुविसत्था ॥' ८६४
अकहित्ता घरणीए रयणीए निग्गओ सगेहाओ ।
सहस त्ति ताण धाडी पडिया हियइच्छिए गामे ॥ ८६५
सन्नद्धा गामभडा पयट्टमाओहणं महाघोरं ।
भग्गा य तहा धाए अणुलग्गा पिट्ठओ कुढिया ॥ ८६६
दट्ठूणं[1] हम्ममाणे नियजोहे कोवजलणपज्जलिओ ।
चलिओ तेसिं समुहो सिरिपालो साहससहाओ ॥ ८६७
सो एगोऽणेगेहिं समंतओ बाणघायजज्जरिओ ।
पडिओ मेइणिवीढे संपत्तो दीहरं निद्दं ॥ ८६८
आयन्निऊण एयं सिरिप्पहा मुच्छिया गया धरणिं ।
कहकह वि लद्धसन्ना कासि पलावे बहुपयारे ॥ ८६९
तत्तो वि सुन्नपु(वु?)न्ना अडुवियड्डा वणंतरे भमिरी ।
कालिंजर[2]गिरिमूले संपत्ता आसमं एगं ॥ ८७०
दिट्ठा य तावसीहिं दयापहाणाहिँ महुरवयणेहिं ।
बोलाविऊण भणिया – 'भद्दे ! किं इत्थ रुन्नेण ॥ ८७१
जइ रुयसि जइ वि विलवसि तिलं तिलं जइ वि कप्पसे अप्पं ।
तह वि न वलंति पुरिसा विहिणा उद्दालिया जे उ ॥' ८७२
तो सा जंपइ – 'भयवइ ! न कयाइ वि मग्ग(ज्झ) खंडिया आणा ।
ता कीस सो पउत्थो मए तहा वारिओ संतो ? ॥' ८७३

तावसीए भन्नइ –

'जइ वि न ग(इ?)च्छइ गंतुं वारिज्जइ जइ वि निद्धबंधूहिं ।
तह वि हु वच्चइ पुरिसो पगड्ढिओ कालपासेहिं ॥ ८७४
किं तस्स सोइयव्वं धम्मिणि ! चिंतेहि अप्पणो धम्मं ।
जम्मंतरे वि जत्तो दुक्खाण न भायणं होसि ॥ ८७५
एसो च्चिय वणवासो मूलं सव्वेसि होइ सुक्खाणं ।
पियविप्पओगदुक्खं सुविणे वि न दीसए एत्थ ॥ ८७६
न सुणंति फरुस[3]वयणं आणं न सुणंति कस्सइ कयाइं[4] ।
न सुणंति कलहवयणं वणवासी सव्वहा [प. २९ A] धन्ना ॥ ८७७

---

१ दट्ठुण. २ कालिंनर. ३ फरस°. ४ कयाई.

इयं पालिज्जइ बंभं दुहियाण जियाण कीरइ परित्ता ।
तप्पिज्जइ निच्चग्गी नवनवसमिहाहिँ पइंदियहं ॥ ८७८

कायव्वा गुरुभत्ती गुरुआणापालणम्मि जइयव्वा(व्वं?) ।
इच्चाइ अम्ह धम्मो सुहकरणेज्जो सुहफलो य ॥' ८७९

एमाइ भणंतीहिँ सिरिप्पभा बोहिया तहा ताहिँ ।
जह तासिं चिय मूले सयराहं तावसी जाया ॥ ८८०

तो पयणुरागदोसा परिसुद्धायारपालणुज्जुत्ता ।
विहिणा कयसन्नासा उववन्ना वंतरनिकाए ॥ ८८१

सअणोढियपरिवारे नम्मयनइरक्खणम्मि अभिउत्ता ।
परिहिंडइ सच्छंदा कीलंती नम्मयतडेसु ॥ ८८२

कारंडहंससारसरहंगपमुहेहि बहुविहंगेहिँ ।
चिंतइ य जलं रेवं निज्झायंती सुहं लहइ ॥ ८८३

उच्छलिय विलिज्जंते पिट्ठंती नम्मयाइ कल्लोले ।
चिट्ठइ पलोयमाणी अतित्तचित्ता चिरं तं पि ॥ ८८४

कत्थइ हत्थिकुलाइं वणमहिसिकुलाइँ नम्मयजलम्मि ।
उब्बुड्डनिब्बुडणँवावडाइँ तूसइ पलोयंती ॥ ८८५

आरुहइ विंझसेले पेच्छइ विंझाडविं विसेसेण ।
रुरुरुज्झगवयँसूयरकुलेहिँ परिमंडिउद्देसं ॥ ८८६

सद्दूलसरहचित्तयसीहाइजिएहिँ मीमरूवेहिँ ।
घेप्पंतपलायंतेहिँ संकुलं तं महारन्नं ॥ ८८७

इच्छाए रमइ विसे(सए) नच्चंतँसिहंडिमंडलीरम्मे ।
निज्झायइ संझगिरिं कीलइ तत्थेव गंतूण ॥ ८८८

सुचिरं परिब्भमंती केलिकि(पि)या सा कयाइ दच्छीय ।
विंझगिरिस्स नियंबे झाणत्थं मुणिवरं एगं ॥ ८८९

नासानिरुद्धदिट्ठं संवरियँासेसइंदियपयारं ।
मेरुमिव निप्पकंपं एगग्गमणं महासमणं ॥ ८९०

जाईए पच्चएणं कीलारसिया तओ तयं दट्ठुं ।
सा परिचिंतइ 'एयं चालेमि कहंचि' झाणाओ ॥' ८९१

---

१ हूया. २ पयवि°. ३ रसमणा°. ४ अप्पडहनिप्पुडण°. ५ °गयवव°. ६ इहाए. ७ तवंत°. ८ संचरिया°. ९ कहिंचि.

परिचिंतिऊण सहसा मुंचइ अट्टट्टहासमइभीमं।
गुह[1]कुहरुट्ठियपडिरवसंराविथसयलजीवं [च?] ॥ ८९२
दट्ठूण तं अभीयं ताहे दंसेइ घोरसद्दूले।
गुंजारवभरियनहे विगरालमुहे समुहमिंते ॥ ८९३
सु[2]निरुद्धदिट्ठिपसए(र)स्स तस्स तव(न व)ते मयंकओ जाया।
ताहे उक्खिविऊणं मुंचइ तं जलहिमज्झम्मि ॥ ८९४
तुच्छम्मि जलहिनीरे सव्वत्तो परिमिलंतगुरुवेले[3]।
तत्थ वि य अबीहंतं नेई[4] [पुण] पुव्वठाणम्मि ॥ ८९५
तत्थ य दंसेइ पुणो पुलिंदवंदाइं[5] भीमरूवाइं।
'छेदह भिंदह [मारह]' भणमाणाइं अणेगाइं ॥ ८९६
[एस] मएण [ण] जिप्पइ कलिऊण करेइ चित्तहरणत्थं।
उब्भडवेसविलासिणिरूवं चाहणि[6] कुणमाणं ॥ ८९७
तेणावि अकयखोहं पसंतहियथं महामुणिं नाउं।
उव[प. २९ B]संतमणा देवी सपच्छयावा[7] विचिंतेइ ॥ ८९८
'एसो कोइ महप्पा तीरइ न हु चालिउं गुमाणाओ।
किं वट्ट(ह)इ सिहरिनाहो पहओ वि पयंडपवणेहिं ॥ ८९९
तो दुट्ठु[8] मए विहियं किलेसिओ एस जं महासत्तो।
नीसेससत्तसुहओ वट्टंतो सुद्धझाणम्मि[9] ॥ ९००
कोउगमित्तेण मए इमस्स झाणंतरायमारद्धं।
कीलस्स कए नूणं पवीलियं तुं[10]गदेवउलं ॥ ९०१
उत्त[11]मसत्तो धीरो चलिओ न वि एस सुद्धझाणाओ।
पत्तं च मए पावं पावेक्कमणाइ पावाए ॥' ९०२
एवं पच्छायावं उवहमाणी मुणिस्स चलणाणं।
पुरओ कयप्पणामा खामेइ मुणिं सुपरिणामा ॥ ९०३
'भयवं! खमाहि[12] मज्झं अवराहमिमं महामहंतं पि।
पक्खित्तं नियसीसं मया तुहंके महाभायैं[13]! ॥ ९०४
धिद्धी मह देव[त्ते] माहप्प[14]मुवेक्खिऊण तुह जीए।
खलियारणा खलाए कया पयट्टस्स सिवमग्गे ॥ ९०५

१ गिह°. २ सुसुनि°. ३ °वेलो. ४ नेइ. ५ °वंदाइ. ६ चाहणि. ७ सपच्छाया. ८ दुट्ठ. ९ °झाणम्मि. १० तुंम°. ११ उत्तग°. १२ खमाणि. १३ °भाया. १४ माहप्पमउतिक°.

डज्झइ मणो महायस! दुच्चरियमहानलेण एएणं।
विज्झवसु तं सुसंजय! मं मीमसु(सीचसु?) वारिधाराए॥ १०६
अन्नाणमोहियाए बालिसभावाइ खमसु मे दोसं।
बालकओ अवराहो कोवं म जणेइ जणयाणं॥ १०७
खम खमसु मह[1]रिसि! तुमं खमिउं जाणासि तं च्चिय न अन्नो।
नहि[2] चंदमंडलाओ पडंति अंगारधाराओ॥' १०८
एवमणेगपयारं खामिंति पासिऊण मुणिवसभो[3]।
उवसंतो उवसग्गो त्ति पारए झाणमइपुन्नं॥ १०९
पभणइ – 'सुमाविगे[4]! मा बीहसु साहूण होइ न हु कोवो।
सहयारपायवाओ न निंबगुलियाण उप्पत्ती॥ ११०
किं च निसामेहि फुडं उवएसं वज्जरेमि जिणभणियं।
जिणसाहुचेइयाइं आसायंतो जणो मूढो॥ १११
अज्जेइ महामोहं अणंतसंसारकारणं घोरं।
जेण न पावइ अन्नं नारइतिरियाइदुरियाणं॥ ११२
हासऽज्जियं पि कम्मं वेयइ दुक्खेण कह वि रोयंतो।
अन्नजणस्स वि विसए विसेसओ जिणमयवएसु॥ ११३
एक्कसि कए वि दोसे अणुहवइ जिओ असंखदुक्खाइं।
जिणसाहुचेइयाणं पडणीओ होज्ज मा कोइ॥ ११४
जइ वि तुह नासि रो(दो?)सो तहा वि तुमए उवज्जियं पावं[5]।
इय [पच्छ]याव[6]पराएँ नवरं उवसामियं बहुयं॥ ११५
तो होज्ज इओ सुंदरि! जिणमुणिभत्ता विसुद्धसम्मत्ता।
झोसेसि[7] जेण सव्वं पावं एयं पि अन्नं पि॥' ११६
उप्पाइयसम्मत्तो सो साहू नम्मयाइ देवीए।
काऊण धम्मलाभं चलिओ नियवंछियविहारं॥ ११७
देवी संवेगपरा भवभमणभएण भावियसुभावा।
सव्वं मुणिवरभणियं आयरइ जहट्ठियं तुट्ठा॥ ११८
पंथपरिब्भट्ठाणं मग्गं दंसेइ समणसमणीणं।
तक्करवग्घाइभया सा रक्खइ निच्च सन्निहिया॥ ११९
तण्हाछुहा[प. ३० A]भिभूयं संघं दट्ठूण अडविमज्झम्मि।
निम्मेइ गोउलाइं विउलाइं भत्तपाणट्ठा॥ १२०

१ महा°. २ महि. ३ °वसभा. ४ सुसाविगे. ५ फयं. ६ °याउप°. ७ झासेसि.

चेइयन(ज)इपडणीयं उवसामइ देवसत्तिओ सव्वं ।
कुणइ जिणचेइएसुं तिकालं पूयमणुदियहं ॥ १२१
वेयावच्चं निच्चं वच्छल्लं तह समाणधम्माणं ।
कुव्वंतीए सावग ! पुन्नं समुवज्जियं तीए ॥ १२२
साहूवसग्गपभवं खवियं पावं पि ताव अइबहुयं ।
किंचि पुण सावसेसं न निट्ठियं चिक्कणत्तेण ॥ १२३
एत्थंतरम्मि आउक्खएण सा देवया चुया तत्तो ।
उववन्ना कुच्छीए एसा महदेवघरणीए ॥ १२४
जं नम्मयानई पइ पडिबंधो आसि तम्मि कालम्मि ।
तेणं चिय जणणीए जाया तम्मज्जणे सद्धा ॥ १२५
एवं दुन्नि वि सावग ! कयाइँ एयाए पुन्नपावाइं[1] ।
अइबलवंतं पुन्नं पावं पुण तारिसं नासि ॥ १२६
जेऊण आवयाओ मिलिया तुम्हाण पुन्नमाहप्पा ।
बलिएण दुब्बलो जं जिप्पइ तं किमिह चोज्जं [व ?] ॥ १२७
पावं ति(वि) पुव्वभवियं इमीएँ जायं निकाइयत्तेण ।
जं वावियं सुपत्ते मज्ज(हा ?)फलं होइ दाणिं च ॥' १२८

[नम्मयासुंदरीए दिक्खागहणं]

एवं च निसामिंती सहस चिय नम्मया गया मोहं ।
जाया य समासत्था[2] [चे]लंचलपवणसंगेण ॥ १२९
भाणी य पणमिऊणं – 'भयवं ! तुब्भेहिं सुट्ठु उवलद्धो ।
निम्मलनाणच्छीए जहट्ठिओ मज्झ वुत्तंतो ॥ १३०
केवलिजिणाण विरहे जुगप्पहाणेहिँ दाणि तुब्भेहिं ।
धा(धी ?)रिज्जइ तत्थमणं संसयवोच्छेयदच्छेहिं ॥' १३१

गुरुणा भन्नइ –

'सुन्नम्मि तम्मि व(र ?)न्ने सुंदरि ! हिययम्मि आसि जे धरिया ।
तेसिं मणोरहाणं पत्थावो सुंदरो एसो ॥' १३२
वियसंतवयणकमला वंदित्ता वयइ नम्मया – 'भयवं ! ।
जह आणवेह तुब्भे वसइ [इ]मं माणसे मज्झं ॥ १३३

१ °पावाए. २ पमासत्था.

सुगुरुं[1] मग्गंतीए[2] पत्तं तुह दंसणं मए सामि ! ।
अब्भुट्ठियाए वयभारधरणबुद्धिं धरंतीए ॥ १३४
आपुच्छिऊण जणए करेमि ता तुम्ह तुरियमाण त्ति ।'
भणइ गुरू वि–'अविग्घं मा पडिबंधं करेज्जासि[3] ॥' १३५
वज्जरइ गिहं पत्ता सव्वं चिय गुरुजणं विणयसारं ।
'दिट्ठो नाणाइसओ सुहत्थिसूरिस्स तुब्भेहिं ॥ १३६
जं किंचि मज्झ अंगे मणवय[4]काएहिं जेहिं जं रइयं ।
तं सव्वं चिय नज्जइ समक्खमेयस्स संजायं ॥ १३७
अणुहूयबहुदुहाए सुमरियनियपुव्वजम्मकम्माए[5] ।
ता एयपायमूले जुत्तं मे समणगुणधरणं ॥' १३८
पडिभणइ गुरुजणो तं–'पुत्ति ! तुमं सुट्ठु वल्लहा अम्ह ।
किं तु तुह तम्मि वमणे अम्ह सिणेहेण किं सिट्ठं ? ॥ १३९
सोऊण दुस्सहाइं[6] तुमए सोढाइं दुक्खलक्खाइं ।
मत्तं(मव्वं ?) अम्हाणं पि हु पट्ठु(च)इओ हंदि सव्वेसिं ॥ १४०
किं तु वयं गुरुकम्मा लतम(न तरा)मो दुद्धरं वयं धरिउं ।
धन्ना य तुमं इक्का अंगीकाउं [प. ३० B] इमं महसि ॥ १४१
पव्वा[विज्ज]हि वच्छे ! अम्हं पि य बोहणं करेज्जासि ।
भावियजिणवयणाणं[7] वयगहण[8]निवारणमजुत्तं ॥' १४२
इय पमुइयहियएहिं दिक्खामहिमा गुरूहिं पारद्धा ।
घोसाविया य अमरी कया य अट्ठाहिया महिमा ॥ १४३
पडिलाभिया य विहिणा समणा समणी य फासुदव्वेहिं[9] ।
सम्माणिओ य सम्मं समाणधम्माण समुदाओ ॥ १४४
दिन्नमवारियसत्तं मग्गणयगणस्स वड्ढिओ तोसो[10] ।
विहिया य विसेसेणं पूया नियसयणवग्गस्स ॥ १४५
सोहणदिणम्मि तत्तो न्हायालंकारसरी[11]रियावयवा ।
चलिया सिवियारूढा धुव्वंती[12] मह(मागह)गणेण ॥ १४६
वज्जंतगहिरतूरं[13] मंगलगीयाइँ दिसि दिसि सुणंती ।
पत्ता वसहिसमीवं उत्तिण्णा [त]ओ [य?] सिवियाओ ॥ १४७
होऊण रायचा[ई ?] काउं तिपयाहिणं[14] मुणिवईस्स[15] ।
पभणंति कयंजलिणा जणणीजणया मुणिगइंदं ॥ १४८

१ सुणुरं. २ गग्गंतीए. ३ °ज्जामि. ४ °वह°. ५ °कम्मगए. ६ दुस्सहायं. ७ °जिणतयणा°. ८ °गहरण°. ९ °देव्वेहिं°. १० तासो. ११ °लंकारेरीरिया°. १२ धुवंती. १३ °गहिरत्तेस. १४ °हिण. १५ °वयरस.

'भयवं ! एसा अम्हं अइप्पिया नम्मया वरा धूया ।
संसारभउव्विग्गा इच्छइ संजमभरं[1] वोढुं ॥ ९४९
एयं सीसिणिभिक्खं तं[2] गेण्ह[ह] दिज्जमाणमम्हेहिं ।
तुम्ह सरणागयाए जं जुत्तमिमीए[3] तं कुणह ॥' ९५०
आह गुरू[4]–'जुत्तमिणं धन्ना एसा पुरा सुकयपुन्ना ।
तुब्भे[5] वि नूणं[6] धन्ना जाण कुले वड्ढिया एसा ॥' ९५१
दिन्ना य तओ दिक्खा तीए पच्चक्खमेव सयणाणं ।
जिणभासिएण विहिणा सुहत्थिनामेण मुणिवइणा ॥ ९५२
अभिवंदिया य विहिणा तत्तो[8] सयणेहिं मुइयहियएहिं[9] ।
दिन्नो आसीवाओ[10]–'नित्थारगपारगा होसु ॥ ९५३
देवगुरुपसायाओ संपुन्नमणोरहा तुमं जाया ।
अम्हाण वि संपत्ती एरिसिया होज्ज कइया वि ॥' ९५४
उववूहिऊण बहुसो पुणो पुणो वंदिऊण भत्तीए ।
वड्ढियहरिसविसाओ सयणगणो पडिगओ गेहं ॥ ९५५
इयरी वि वसुमईए पवत्तिणीए समप्पिया गुरुणा ।
दुविहपयारं सिक्खं पगिन्हिया[11] विणयनयनिउणा ॥ ९५६
तूसइ मारिज्जंती अणुग्गहं मुणइ[12] वारिया संती ।
चोइज्जंती वि खरं न चेव पडिचोयणं कुणइ ॥ ९५७
दिवसेण वि जिट्ठाए विणीयवयणा[7] करेइ सा विणयं ।
तवमाणगुणड्डा(ड्ढा?)णं गुरुबुद्धीए कुणइ किच्चं ॥ ९५८
छट्ठट्ठमाइरूवं तवइ तवं गुरुजणस्स आणाए ।
सोसेइ नियं देहं सुमरंती पुव्वदुक्खाइं ॥ ९५९
पत्ता(न्ना)इसया तुरियं अहिया[इं] विजियदुज्जयपमाया ।
एक्कारस अंगाइं पवित्तिणीए पसाएण ॥ ९६०
भरभावियसुत्तत्था संतत्थाऽऽसवभवाण य दुहाणं ।
संजाया गुरुगोरवपयं विसेसेण समणीणं ॥ ९६१
पावियसुहपरिणामा जा नम्मयसुंदरी तवं चरइ ।
एत्थंतरम्मि वसुमइपवत्तिणी [प. ११ A] पाविया सग्गं ॥ ९६२

१ गंजमसरं. २ त. ३ °ममीए. ४ गुरु. ५ तुज्झे. ६ तूण. ७ °वयणा. ८ मत्तो.
९ मुवहहि°. १० आसी°. ११ पगिम्हिया. १२ मुहणइ.

[नम्मयासुंदरीए पवत्तिणीपयठवणा]

जोग्ग त्ति[1] जाणिऊणं ठविया गुरुणा पवत्तिणी एसा ।
जणयंती आणंदं समणीसंघस्स सयलस्स ॥ ९६३
तो गुरुणाणुन्नाया साहुणिजणउचियउज्जयविहारा ।
गामनगरेसु विहरइ बोहंती धम्मिए लोए ॥ ९६४
सव्वत्थ नियदचरियं सवित्थरं साहिऊण संविग्गो[2] ।
समणीण सावियाण य विसेसओ देइ उवएसं ॥ ९६५
साहूसु साहुणीसु य- 'वयभंगमणं पि मा करेज्जासु ।
दुक्खेहिँ दारुणेहिं जइ ता पत्तेहिँ न हु कज्जं ॥ ९६६
अन्नाणमोहियाए पुव्वभवे मुणिवरो मए एगो ।
काउस्सग्गम्मि ठिओ खुब्भइ नव(न य व)त्ति कोड्डेण ॥ ९६७
उवसग्गिओ महप्पा खुभिओ मणयं पि नेव झाणाओ ।
बद्धं च मए पावं जस्स विवागो इमो जाओ ॥' ९६८
वयपरिणामतवेहिं किसियंगी सा चिरेण कालेण ।
तारिसिया संजाया सयणा वि जहा न लक्खंति ॥ ९६९
जे आसि सिरे केसा अइकुडिलतरंगसच्छहच्छाया ।
ते कासकुसुमधवला विरल च्चिय केइ दीसंति ॥ ९७०
आयंससमच्छाया आसि कवोला वि जे समुत्ताणा ।
तवसोसियदेहाए जाया खल्ला दढं ते वि ॥ ९७१
सोमालमंग(स)लाओ अंगुलिओ आसि हत्थवाएसु ।
परिमुक्क[ट्ठ]घडिय व अन्नरूवं गया ताओ ॥ ९७२
सेयपडपाउयंगी तणुइ[3] शूलं व मुणइ न हि कोइ ।
सद्दो वि तारमहुरो न अन्नभावं गओ तीए ॥ ९७३

[नम्मयासुंदरीए कूवचन्द्रगाम पइ विहरणं]

इओ य जप्पभिइं[4] जाणिओ[5] जणएहिं नम्मयापरिच्चागवुत्तंतो तप्पभिई चेव अवहत्थिओ कूवचंद्रोदंतो[6] । रिसिदत्ता वि अन्नायपुत्तावराहा न कोइ तसिं करेइ त्ति माणेण न तेसिं वत्तमन्निस्सइ । चिरस्स समागएण महेसरदत्तेण रुयमाणेण साहियं सयणाणं जहा-'सुवन्नदीवे रक्खसेण खइया मम दइया, अहं पि किच्छेण वारिवसहं मग्गिऊण पलाणो तेण जीविओ इन्हि ।' एयं

1 जोगचिछ. 2 संविग्गो. 3 तणुइ. 4 जप्पभियं. 5 जाणिउं. 6 °चड्डोदत्तो.

सोऊण जाया सोआउरा रिसिदत्ता, रोयमाणी कहकह वि धीरविया सयणवग्गेण। तह वि तीए माणाइमएण न जाणाविओ एस वइयरो जणयगिहे। महेसरदत्तो वि कयकलत्तंतरसंगहो अपरिचत्तमावगधम्मो नम्मयासुंदरिकारियचेइए पूयणवंदणाइ कुणमाणो चेट्ठइ। परोप्परगमणागमणाभावाओ कूवचंद्रे नयरे न केणावि विन्नायं नम्मयासुंदरीए आगमणं पवयणं वा। एवं च काले वच्चमाणे अन्नया पवत्तिणीए सामच्छियाओ साहुणीओ–'जइ भे रोयइ ता कूवचंद्रेण विहारं करेमो।' ताहिं भणियं–'भयवई पमाणं।' 'तो खाइं तुब्भे तत्थ गयाओ मम नामं मा [प ३१ b] कहेज्जह, "पवत्तिणी पवत्तिणी" वा अहं भाणियव्वा जओ अन्नायउंच्छमे(से ?)वाए मे वन्नइ किं नामविक्कएणं ?' तओ 'जमाणवेहि' त्ति परिवारेण वुत्ते सुहविहारेण पत्ता तत्थ। दट्ठूण वंदियाओ महेसरदत्तेण, दिन्नो नियगिहास[न्न] उवस्सओ। ठियाओ तत्थ वंदियाओ भत्तिसारं। रिसिदत्ताए दंसियाइं चेइयाइं, कयमुक्कंठियाए पवत्तिणीए विसेसेण वंदणं। विहिया विहाणेण धम्मदेसणा, आणंदिओ सावियावग्गो। एवंमन्नायचरियाए विहरमाणीओ सज्झायंतीओ चेट्ठंति। तत्थ महेसरदत्तो वि तासिं किरियाकलावाणुरंजियमणो तासि सज्झायझुणिमेगचित्तो निसामेइ, विसेसओ पवत्तिणीए। चिंतइ 'नम्मयसुंदरिसरिच्छो एस [स]द्दो। नूणमेसा तीसे माउच्छा माउच्छीदुहि[या] वा भविस्सइ। कहमन्नहा सद्दसमाणत्तं ?' ति। अन्नया कयाइ पवत्तिणी महुरवाणीए सरमंडलपगरणं परावत्तिउं पवत्ता। अवि य–

'सो जयउ जिणवरिंदो जस्स मुहा स(पु)न्नचंदबिंबाओ।
जरमरणवाहिहरणं सिद्धंतमहामयं झरियं॥ ९७४

जयइ सरमंडलं तं जेणिह पढिएण बुद्धिमन्तेहिं।
पुरिसाण महेलाण य गुणा य दोसा य नज्जंति॥ ९७५

सत्त सरा पन्नत्ता सज्जो रिसहो तहेव गंधारो।
मज्झिम पंचम रेवय नेसाओ सत्तमो होइ॥ ९७६

सत्त [स]रट्ठाणाइं तत्थ य सज्जं तु अग्गजीहाए।
रिसभं उरेण कण्ठेण तइययं नीसवेइ सरं॥ ९७७

---

१ °वसा°. २ °गमणाभा°. ३ आगमण. ४ रोवइ. ५ भयवइ. ६ कहेज्जहा. ७ वत्तिणी. ८ अन्नायं°. ९ वंमियाइं. १० एव. ११ विरहमा°. १२ °सुणि°. १३ चिंतय. १४ एस. १५ वत्तिणी. १६ साजा. १७ सज्ज. १८ कण्ठेण.

मज्झिमंजीहाए मज्झिमं[1] तु नासाएँ पंचमं जाण ।
रेवय दंतोट्ठवहं[3] भमुहक्खेदे(वे)ण नेसायं ॥ १७८
सज्जं रवइ मयूरो रिसहं पुण कुक्कुडो सरं[4] रवइ ।
हंसो गंधारसरं मज्झं तु गवेलया रवइ ॥ १७९
पंचमयं परपुट्ठा छट्ठं पुण सारसा य कुंचा य ।
सत्तमयं तु गयंदा सत्तसरा जीवनिस्साओ ॥ १८०
सज्जं रवइ मुइंगो गोमुह रिसहं च नदइ गंभीरं ।
संखो वि य गंधारं मज्झिमयं झल्लरी रवइ ॥ १८१
चउचरणगोहिया पंचमं तु आडंबरो य रेवययं ।
सत्तमयं पुण भेरी भणिया अज्जीवनिस्साओ ॥ १८२
सज्जेण सुहपवित्ती बहुपुत्तो वल्लहो[5] य जुवईणं ।
रिसहेणं धणवंतो भणिओ सेणावई चेव ॥ १८३
विविहधणरयणभागी भणिओ गंधप्पिओ य गंधारे ।
पवियक्खणो कवी वि य एयम्मि सरे समक्खाओ ॥ १८४
मज्झिमसरप्पलावी सुहजीवी बहुधणो य दाया य ।
पंचमसरमंता पुण पुह[इ]वई[6] हुंति सूरा य ॥ १८५
छट्ठे कुच्छियवित्ती कुवसणकुभोयणा कुजोणीया ।
कलहकरलेहवाहयदुहजीवो सत्तमे भणिया ॥ १८६
पयईकसिणो सज्जं अवस्स भावेइ जइ वि य समत्तं ।
असमत्तेणऽइकालो गुज्झम्मि य लक्खणं रत्तं ॥ १८७
रिसहं मरगयगोरो [प ३२ A] अवस्स भावेइ परमगोरो वा ।
तेण य सिरम्मिं[10] तस्स य विवरीयं लक्खणं भवइ ॥ १८८
धवलो गंधारसरं अवस्स भावेइ किंचि भावेण ।
तेण य तं विवरीयं दाहिणओ लक्खणं होइ ॥ १८९
कणयपहो मज्झिमयं अवस्स भावेइ जइ वि न विस(सम?)त्तं ।
तेण उदरम्मि बिंबं तव्विवरीयं वियाणेज्जा ॥ १९०
आलोहियधवलवन्नो अवस्स भावेइ पंचमं सो उ ।
होइ य सिरम्मि पिप्पो पंकयदलसप्पभो तस्स ॥ १९१
छट्ठं कंबोयवइ(?) अवस्स भावेइ चित्तवन्नो य ।
तेणावि रत्तवन्नो अवस्स लिंगे मसो होइ ॥ १९२

---

१ तज्झिम°. २ सज्झिम. ३ °ठवह. ४ इसरं. ५ तल्लहो. ६ °वइ. ७ कुच्छोय°, ८ °कुतोयण. ९ °जीव. १० सिरम्भि.

सत्तमयं मुद्ध(ह?)सामो पढमतिवक्षो य कुणइ नियतीए।
ताण य रुक्खविरुक्खा होंति मसा चलणदेसेसु ॥' ९९३

[महेसरदत्तकयपच्छायावो]

एयं च पढिज्जंतं सव्वं आसन्नसंठिओऽवहिओ।
सुणइ महेसरदत्तो चिंतेइ तो मणेणेवं ॥ ९९४
'आसि मए सुयपुव्वं एसा सरमंडलं वियाणेइ।
सिट्ठं च तीय अहयं जाणामि जिणागमपसाया ॥ ९९५
कोहग्गिभुयंगमवंफियस्स परूढमयलमत्तस्स।
सुइगोयरं न पत्तं पडिसग्गममग्गमग्गस्स ॥ ९९६
परूढो गुणनिवहो असंतदोसा पइट्ठिया चित्ते।
धुत्तरियहिययस्स व विवरीया धाउणो जाया ॥ ९९७
एक्किको तीए गुणो दीसइ अन्नासु नेव नारीओ(सु)।
अप्पा हु अप्पणा च्चिय हा! मुट्ठो दुट्ठचित्तेण ॥ ९९८
सो तारिसओ विणओ सि(ति) च्चिय महुरक्खरा समुल्लावा।
कत्थ मए लहियव्वा दुरीकयभागधेज्जेणं[1] ॥ ९९९
हा हा! पाविट्ठो हं जेण तहा भीसणम्मि दीवम्मि।
एगागिणी अणाहा मुक्का निक्करुणचित्तेण ॥ १०००
मह विरहभीरुहियया मए समं[5] पत्थिया किर वराई[6]।
सो मे कओ महंतो ही मरणाओ भयं जायं ॥' १००१
एवं विचिंतयंतो संभरियासमसिणेहसब्भावो।
सहस त्ति मेइणीए मुच्छाविहलंघलो पडिओ ॥ १००२
तक्खणमिलिएहि सबंधवेहिं सहस त्ति सिसिरनीरेण।
जलसिंचणपवणाओ किच्छेण सचेयणो होउं ॥ १००३
वारं वारं हत्थं गच्छइ मुच्छं नियच्छमाणाणं।
नीससमज्जणाणं हाहारवभरियभवणाणं ॥ १००४
नाइक्खइ नियदुक्खं पुच्छंताणं पि निद्धबंधूणं।
मोणव्वयं चेट्ठइ एयं हिययम्मि झायंतो ॥ १००५
'अप्पा हु अप्पणा च्चिय लज्जइ सरिएहिँ जेहिँ कम्मेहिं।
कह ताणि बंधवाणं पुरओ तीरंति अक्खाउं ॥' १००६

१ कोहग्ग°. २ आसासु. ३ °धेज्जाण. ४ निक्करुण°. ५ समा. ६ वराइं.

पाहरिया य सवेगं संपत्ता तो पवत्तिणी भणइ ।
'किमियमयंडे चंडं[1] सावग ! वसणं समुप्पन्नं ॥' १००७
काऊण य एगंतं पभणइ– 'भयवइ ! उवट्ठियं मरणं ।
देहि पसायं काउं पज्जंतालोयणं मज्झ ॥ १००८
[वो]च्छुमच्छुत्तं अन्नस्स जं पुरो निययदुक्कयमणज्जं[2] ।
तं पि गुरू[प २२ ४]णं नियमा साहिज्जइ मरणसमयम्मि ॥' १००९
इय भणियम्मि निसन्ना पवत्तिणी साहियं तओ तेण ।
सयलं जहट्ठियं जाव नम्मया उज्झिया सुत्ता ॥ १०१०
'सरमंडलसज्झायं अज्ज सुणंतस्स मज्झ संभरियं ।
सा वि पढंती एवं विन्नायं तेण तं चिंधं ॥ १०११
अज्जे ! जाणामि अहं असमिक्खियकयारओ[3] महापावो ।
दुक्कडमिणं सरंतो पाणे धरिउं न याएमि ॥ १०१२
ता देहि अणसणं मे कन्नेसु जवेसु जिणनमोक्कारं ।
मा तुज्झ पसायाओ[4] पाविज्ज पुणो वि जिणधम्मं ॥' १०१३
भणई[5] पवत्तिणी तो– 'बालुल्लावेहिँ सावग ! इमेहिँ ।
सिज्झइ न किंचि कज्जं परमत्थवियारणं कुणसु ॥ १०१४
न हि[6] मरणमित्तमज्झं एयं तुह संतियं महापावं ।
सुज्झइ नियमा तवसंजमेहिँ जिणवीरभणिएहिँ ॥ १०१५

अन्नं च–

नूणं पुराणमसुहं कम्ममुइन्नं तया तुह पियाए ।
तव्वसओ से नूणं समुट्ठिओऽलिंजरे अग्गी ॥ १०१६
पंडिय ! सुसिक्खिओ तं गुरुजणउवएससा(भा ?)वियमणो हं(य) ।
नूणं तीए कम्मेहिँ चोइओ निद्दओ जाओ ॥ १०१७
किं बहुणा भो सावग ! उव्वेयं मा करेसु तव्विसए ।
दुकयसुकयं च निययं भोत्तव्वं सव्वजीवेहिँ ॥' १०१८
भणइ महेसरदत्तो– 'भगवइ ! तं भणसि अवितहं सव्वं ।
तह वि न तरामि धरिउं पाणे तीए अदिट्ठाए ॥' १०१९
विन्नायनिच्छया तो ईसि हसंती पवित्तिणी भणइ ।
'उवलक्खेसि न दिट्ठं तहावि तुह इत्तिओ नेहो ॥ १०२०
नणु होमि नम्मया हं न मया निरुवक्कमाउया नूणं ।
सावय ! तुज्झ पसाया सामन्नसिरी मए पत्ता ॥ १०२१

१ चंडे. २ °मणज्जा. ३ °यारओ. ४ पसायाओ. ५ भणइ. ६ नहि.

तुमए अणुज्झियाए कुडुंबवावारवावडमणाए।
को जाणइ होज्ज न वा दुलहा जिणभणियपव्वज्जा॥' १०२२

तओ एवं सुणमाणो[1] महेसरदत्तो असंभवं संभव[ति] त्ति विम्हिओ, एसा सा जीवइ[2] त्ति हरिसिओ, कहमेयाए[3] मुहं दंसेमि[4] त्ति लज्जिओ, सुदरं वयमणुपालेइ त्ति निव्वुयमणो,[5] एवं संकिन्नरसमणुहवंतो महियलनिहित्तजाणुपाणिभालवट्टो पणमिऊण भणिउमारद्धो – 'तुह मज्झाय[माय]न्नमाणस्स ठियं मम मणे एरिसो नज्जइ नम्मयसुंदरिसद्दो, किं तु नियदुच्चेट्ठियवसमंभावियावस्समरणस्स पणट्ठा जीवियसंभावणा, तो सुट्ठु कयं जमज्ज मरमाणस्स जीवियं दिन्नं, खमाहि य मे पाविट्ठजिट्ठस्स दुट्ठचिट्ठियं।' एवं पुणो पुणो पणामपुव्वं खामिंतो भणिओ पवत्तिणीए – 'सावय! कुओ भावियजिणागमतत्ताणं अखमासंभवो। तइया वि मए[6] सकम्मफलमेव संभावियं, कहियं च मे भगवया सुहत्थिसूरिणा तस्स दुरंतवसणस्स कारणं। ता मा विचित्तो[7] भवाहि।' पुणरवि महेसरदत्तेण भणिया – 'साहेह[8] मे अणुग्गहं काउ[प. ३३ १]ण मए विमुक्काए तुमए केरिसं दुक्खमणुभूयं? कहं वा तओ दीवाओ समुद्दाओ वा निक्खंता सि त्ति।'

वुत्तं पवित्तिणीए – 'मासेहिं सत्त संठिया तत्थ।
रुन्नाइं पलवियाइं कित्तियमेत्ताइं सुमरामि॥ १०२३

अह कह वि दिव्वजोगा संपत्तो मज्झ पित्तिओ तत्थ।
तेण य पयाणुसारा[9] गवेसमाणेण दिट्ठा हं॥' १०२४

इच्चाइ सवुत्तंतो रिसिदत्तापमुहं[10]परियण[11]जुयस्स।
सिट्ठो पवत्तिणीए जा पत्ता कूवचंद्रम्मि[12]॥ १०२५

सोऊण सद्धलोगो जाओ दुक्खाउरो दढं[13] तत्थ।
रिसिदत्ता वि परुन्ना गणणीकंठग्गहं काउं॥ १०२६

झ त्ति महेसरदत्ते पडिया सयणाण नीरसा दिट्ठी।
लज्जोणामियसीसो सो वि ठिओ गरुयअणुतावो॥ १०२७

वज्जरइ तओ अज्जा – 'सव्वे जीवा महंति दुक्खाइं।
पुव्वज्जियपाववसा[14] निमित्तमित्तं पुणो वज्झं[15]॥ १०२८

जरसीसवेयणाओ भवंति जीवस्स पुव्वकम्मेहिं।
अब्भक्खाणं [.......] वब्भाणं तेलमाईणं॥ १०२९

---

१ सुणमाणो. २ जीवमइ. ३ °मेया २. ४ दसेमि ५ निव्वुयामणो. ६ सए. ७ विचित्ते. ८ साहेहे. ९ °साराओ. १० रिसिदत्ता २ सुह°. ११ °परियणु°. १२ कवचंद्रम्मि. १३ दुक्खाओरो. १४ यवसा. १५ वज्झं.

जायइ धणस्स नासो जणस्स पुवंतरायदोसाओ ।
तेण णरिंदाईणं रूसइ लोगो मुहा[1] सवो ॥ १०३०
अन्नाणंधा जीवा करेंति कूराइँ ताइँ कम्माइं ।
नासंतरुयंतस्स व अणुमग्गं जाइँ धावंति ॥ १०३१
भो भो! महाणुभावा[2] वीरजिणिंदस्स सासणे लीणा ।
काऊण समणधम्मं दुक्खाण जलंजलिं देह ॥' १०३२
पभणइ महेसरो तं-'जं पत्तं बब्बरे तुमे दुक्खं ।
तं सोउं पि न सक्को किं पुण सोढुं जणो अन्नो ॥ १०३३
तस्स वि अहं निमित्तं हा! धिद्धी निग्घिणो महापावो ।
पाविज्ज किं कयाई सोहिं बोहिं च जिणधम्मे ॥' १०३४
पभणइ पवत्तिणी तं-'वारं वारं किमेवमुल्लवसि? ।
नत्थि असज्झं किंचि वि सावग! जिणभणियदिक्खाए ॥ १०३५
सुवइ दढप्पहारी चोरो अच्चंतकूरकम्मो वि ।
सामन्नाओ पत्तो सुद्धिं सिद्धिं च सुकयाओ ॥ १०३६
एही सुहत्थिसूरी निम्मलसुयनाणलोयणो एत्थ ।
नीसेसपाणिपरिणामजाणओ तस्समीवम्मि ॥ १०३७
आलोइऊण पावं पालिज्जसु निम्मलं समणधम्मं ।
सोहिउवाओ एसो मा धरसु मणम्मि संदेहं ॥ १०३८
भुत्ता तुमए भोगा मुणियं संसारवासनेगुन्नं[3] ।
भुत्ते पत्तलिचाओ संपइ गिहवासचाओ ते ॥' १०३९
रिसिदत्ता वि रुयंती वुत्ता-'जइ वल्लहा अहं अंबे! ।
लग्गसु[4] ममाणुमग्गं मग्गे णेवाणनयरस्स ॥ १०४०
अन्नह रुन्नं सुन्नं नेहो वि हु कित्तिमो व पडिहाइ ।
जलणम्मि वसइ लोगो मद्धिं[5] खलु वल्लहजणेणं ॥ १०४१
तुम्हाणमेव बोहणनिमित्तमहमागया इह पुरम्मि ।
सुवइ सत्थेसु जओ इट्ठं धम्मम्मि जोइज्जा ॥' १०४२
नम्मयपवत्तिणीए पवत्तियाइं दुवे वि वयगहणे ।
सो च्चिय सच्चो मित्तो जो पावाओ नियत्तेइ ॥ १०४३

[सुहत्थिसूरिकया धम्मदेसणा

इत्थंतरम्मि पत्तो सुहत्थिसू[प ३३ B]री महामुणी तत्थ ।
आवासिओ य रम्मे उज्जाणे नंदणवणम्मि ॥ १०४४

१ मुहा. २ -भावो. ३ 'नेगुत्त. ४ लमासु. ५ सिद्धि.

जाओ नयराणंदो पए पए मन्नए जणसमूहो ।
नूणं इमम्मि नयरे कल्लाणमुवट्ठियं किं पि ॥ १०४५
जं एसो सुरमहिओ संपइरायस्स वल्लहो[1] भयवं ।
संपत्तो अज्ज इहं जणकइरवसंडनिसिनाहो ॥ १०४६
रायाइ नमोसज्जो नियपयउचिएणं[2] सयलविहवेणं[3] ।
अभिवंदिउं मुणिंदं निक्खंतो झ त्ति नयराओ ॥ १०४७
अभिवंदिऊण विहिणा मुणिनाहं[4] साहु[5]सत्थपरियरियं ।
उवविट्ठो सयलजणो नियनियउचिएसु ठाणेसु ॥ १०४८
पारद्धा धम्मकहा नवजलहरगहिरमहुरसद्देण ।
सव्वेसिं सत्ताणं अणुग्गहत्थं अइमहत्था ॥ १०४९
'माणुस्स कम्मभूमी आरियदेसो[6] कुलम्मि उप्पत्ती ।
रूवं बलमारोगं(ग्गं) मुदीहरं आउयं बुद्धी ॥ १०५०
सुहगुरुजोगो बोही[7] सद्धा[8] चारित्तधम्मपडिवत्ती ।
दुक्खेण जए लब्भइ एसा कल्लाणरिंछोली ॥ १०५१
एगिंदिया[9] अणंता मरिउं मरिउं पुणो वि तत्थेव ।
उववज्जंति वराया कालमणंतं सकम्मेहिं ॥ १०५२
उव्वट्टिऊणं[10] विरला बियं[11]तियचउरिंदिएसु गच्छंति ।
तत्थ य पुणो पुणो वि य मरंति जायंति बहुकालं ॥ १०५३
पंचिंदिया[12] वि होउं जलथलयरखयरविविहजोणीसु ।
चिट्ठंति चिरं कालं जंति पुणो पुरिसजोणीसु ॥ १०५४
विरला केइ नरत्तं लहंति तत्थ वि अणारिया बहवे ।
तत्तो वि हु विरलाणं आरियदेसे हवइ जम्मो ॥ १०५५
आरियदेसे वि ठिओ धीवर[13]चंडाललुद्धयाईसु ।
कुच्छियकुलेसु जाया नामं न मुणंति धम्मस्स ॥ १०५६
उत्तमकुलेसु जाया काला कुंटा य पंगुला[14] अंधा ।
जीवा अणिट्ठरूवा दिक्खं न लहंति जिणभणियं ॥ १०५७
तवसंजमबलवियला धम्मं न कुणंति रूवकलिया वि ।
बलवंताण वि रोगाउराण धम्मे कओ सत्ती ? ॥ १०५८

---

१ वल्लहो. २ ओविएण. ३ भयलविहतेण. ४ °नाहो. ५ माहु°. ६ °दोसा. ७ बोहा. ८ सुधा. ९ एगदिया. १० उवहिऊण. ११ विय°. १२ पंचंदिया. १३ धीवर°. १४ पुगुला.

सव्वगुणसंगया वि हु बालत्ते केइ जंति पंचत्तं[1]।
अन्ने नवतारुन्ने तेसिं पि हु दुल्लहो धम्मो ॥ १०५९
चिरजीवीण वि बुद्धी धम्मे विरलाण होइ केसिंचि।
गुरुसंपओगविरहा बहूण न हु साफलं होइ ॥ १०६०
धम्मे मइं[2] कुणंता अन्नाणपासंडिगोयरावडिया।
भामिज्जंति अणेगे जह चक्कं कुंभयारेण ॥ १०६१
कारिज्जंति अधम्मं बाला धुत्तेहिं धम्मबुद्धीए।
भोइज्जंति विसन्नं नूणं चिरजीवियं[3]निमित्तं ॥ १०६२
गुरुणा वि कहिज्जंते धम्मे बोहिं न केइ पावंति।
चिक्कणनाणावरणस्स कम्मणो[4] हंदि उदएणं[5] ॥ १०६३
बुद्धे वि धम्मरूवे न सद्दहाणं बहूण संभवइ।
मिच्छत्तमोहणिज्जे तिव्वे उदयम्मि संपत्ते ॥ १०६४
सद्दहमाणा वि नरा धम्मं जिणदेसियं विगयसंगं।
न कुणंति समणधम्मं [प ३४ A] गिद्धा गिहदेसविसएसु ॥ १०६५
दुलहं गुणसंदोहं लद्धं पि हु ते पमायदोसेण।
हारिंति मंदभग्गा धमियं कणयं व फुक्काए ॥ १०६६
जह सागरम्मि पडिओ कीलयकज्जेणं[6] भिंदई नावं।
इय विसयकए जीवो हारइ पत्तं पि सामग्गिं ॥ १०६७
जह कोद्दवाण छित्ते छित्तुं कप्पूरतरुवरसमूहं।
वाडी करेइ एवं भोगत्थी चयइ जो धम्मं ॥ १०६८
कहकह वि दुक्खपत्तं कप्पतरुं कोई पत्थइ बोरे।
पत्ते पुव्वगुणोहे एवं विसएसु जो रमइ ॥ १०६९
अत्थो अणत्थमूलं बंधुजणो बंधणं विसं विसया।
पसमसुहामयभारिओ संजमरयणायरो एगो ॥ १०७०
जरमरणवारिपूरे विओगरोगाइगाहगहणम्मि।
मा पडह भवसमुद्दे चरित्तपोयं[7] समारुहह ॥' १०७१
देसणमिमं सुणित्ता संबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे।
संसारभउव्विग्गा जाया समणा समियमोहा ॥ १०७२

[महेसरदत्तस्स जणणीसहियस्स चरणपडिवत्ती]

सो वि महेसरदत्तो संपावियभावचरणपरिणामो।
आलोइयदुच्चरिओ जणणीसहिओ ठिओ चरणे ॥ १०७३

१ पंचत्ती. २ मयं. ३ °जीवीय°. ४ कम्मुणो. ५ आदएण. ६ कज्जेण. ७ °पोइ.

संजाया कयकिच्चा पवत्तिणी णाणचरणलाभेण ।
संवेगभावियाइं तिन्नि वि तप्पंति तवमुग्गं ॥ १०७४
छट्ठाओ अट्ठमाओ तह य दसमओ मासओ अद्धमासा
अंतं पंतं [च रुक्खं] तणुजवणकए किं पि भुंजंति भत्तं ।
सीयं उन्हं च तन्हं खुहमवि बहुसो भावसारं[1] सहंते
सोसेउं पावपंकं गुरुपयकमले भिंगरूवं[2] वहंता ॥ १०७५
अट्टेण रुद्देण य दूरियाइं धम्मेण सुक्केण य संजुयाइं ।
सुत्तेण अत्थेण य ताणि नूणं भावेंति अप्पाणमहोनिसिं पि ॥ १०७६
एवं विहरंताइं कयाइँ पत्ताइँ नम्मयपुरम्मि ।
परितुट्ठो बंधुजणो सव्वो भणिउं समाढत्तो ॥ १०७७
'धन्नाइं[3] पुन्नाइं[4] तुब्भे तुम्हाण जीवियं सहलं ।
सामन्नमणन्नममं जाइं पालेह एयं ति ॥ १०७८
अम्ह कुले जायाणं जुत्तं एवंविहं अणुट्ठाणं ।
सयलो वि अम्ह वंसो अलंकिओ नूण तुब्भेहिं ॥ १०७९
अइधन्ना सि पवत्तिणि ! रिसिदत्ता ठाविया जओ तुमए ।
पुव्वं सावगधम्मे इन्हिं पुण दुक्करे चरणे ॥' १०८०
एवमुववूहिया वंदिया य मयणेहिं हट्ठतुट्ठेहिं ।
सेसो वि नयरलोगो जाओ तद्दंसणे मुइओ ॥ १०८१
तीए तत्थ ठियाए जाओ धम्मुज्जुओ सयललोगो ।
पव्वाविओ य विहिणा मयणजणो सेसलोगो वि ॥ १०८२
ता जत्थ जत्थ विहरइ सुभगआएज्जकम्मजोगेण ।
पडिबोहइ भव्वजणं कुमुयज(व)णं चंदलेह व्व ॥ १०८३
पावेइ केइ चरणं अन्ने ठावेइ देसविरयम्मि ।
गाहेइ केइ सम्मं उप्पायइ बोहिबीयाइं ॥ १०८४
सासणमुब्भासंती[5] विहरइ सा जत्थ जत्थ देसम्मि ।
जायइ लोगो गुणगहणवावडो तत्थ सव्वत्थ [प. ३४ B] ॥ १०८५
अह अन्नया कयाई एगारसअंगधारिणी होउं ।
तवनियमसोसियंगी रिसिदत्ता गुरुअणुन्नाया ॥ १०८६
आलोइयपडिकंता सम्मं संघस्स खामणं काउं ।
भत्तपरिन्नपइन्नामंदरसिहरं समारूढा ॥ १०८७
चउसरणगमणवु(दु?)क्कडगरिहासुकडाण(णु)मोयणं काउं ।
झायंती य सुणंती पंचनमोकारमविरामं ॥ १०८८

१ °सार. २ °रूव. ३ धन्नायं. ४ पुन्नायं. ५ °संता.

असुइवसमंससोणियचम्मट्ठिण्हारु[1]वारबीभत्थं।
मोत्तूण तणुं तणमिव उववन्नो मासभत्तंते ॥ १०८९
कप्पे सणंकुमारे अइसयरमणेज्जसुरविमाणम्मि।
सुरविसरकयाणंदो सुरिंदसामाणिओ देवो ॥ १०९०
कडयमणिमउडकुंडलतुडियाभरणेहि भूसियावयवो।
हारद्धहारवत्थो(च्छो) दीहररेहंतवणमालो ॥ १०९१
विन्नायपुव्वजम्मो काउं सव्वाइँ देवकिच्चाइं।
अच्छरगणमज्झगओ विलसइ एगंतसच्छंदो ॥ १०९२
एव महेसरदत्तो साहू साहूण सन्निहाणेण।
भत्तपरिन्नाणसणं काऊणाराहिऊणं तो ॥ १०९३
तत्थेव देवलोए सुरवइसामाणियत्तमणुपत्तो।
अवगयचारित्तफलो विलसइ सम्मत्तथिरं[2]चित्तो ॥ १०९४

[नम्मयासुंदरिए सग्गगमणं]

कालेण कालकालं पवत्तिणी नम्मया वि नाऊण।
उवरियमवसड्ढा[3] सयलं संघं खमावित्ता ॥ १०९५
समणीण सावियाण य विसेसओ वागरेइ उवएसं।
'आसायणं मुणीणं मणसा वि हु मा करेज्जाह ॥ १०९६
जो हीलइ साहुजणं स हीलणिज्जो भवे भवे होइ।
अक्कोसंतो वहबंधणाइ पावेइ पइजम्मं ॥ १०९७
जो पुण देइ पहारं समत्तजियबंधवाण साहूण।
वज्जग्गिघोरजालावलीसु सो पच्चए नरए ॥ १०९८
तत्थेव अत्थहाणी[4] होइ मुणीणं अवन्नवायाओ।
इट्ठजणविप्पओगो [अ]कालमरणं च जीवाणं ॥ १०९९
अहव असज्झो देहे संजायइ कोइ दारुणो वाही।
हसिया वि रोवियव्वे होंति निमित्तं न संदेहो ॥' ११००
एवं भणिऊण फुडं कहेइ नीसेसमप्पणो चरियं।
जेण निसुएण जाओ संवेगो समणसड्ढीणं ॥ ११०१
ताहे भत्तपरिन्नं सम्मं पालेइ मासपरिमाणं।
जीवियमरणासंसप्पओगपरिवज्जियमईया ॥ ११०२
चइऊण तणुकरंकं पत्ता तत्थेव तइयकप्पम्मि।
सुरनाहसमाणत्तं परियरआयप्पमाणेहिं ॥ ११०३

1 °ट्ठिमण्हारु°. 2 °थिर°. 3 °सड्ढो. 4 °हाणी.

तियसमहुयरालीलीढ[1]पायारविंदो मणिकणयविचित्ताकप्पसंपत्तसोहो।
पणयतियसरामारामणाखित्तचित्तो न हि मुणइ स कालं जंतमच्चंतदीहं॥ ११०४

गीयं गंधव्वियाणं सुइसुहजणयं नूण तालाणुविद्धं
नट्टं देवंगणाणं[2] नयणमणहरं अंगहाराभिरामं।
गंधो कप्पूर[प ३५ A]पारीपरिमलबहलो घाणसंतोसकारी
फासो देवंगदेवीतणुसमणुगओ देहसोक्खस्स हेऊ॥ ११०५

सोक्खं एवंपयारं ते संवेयंता निरंतरं।
सत्तसागरमाणं ते कालं पालित्तु आउयं॥ ११०६

तत्तो चइत्ता सुहसेसजुत्ता कुले पहाणम्मि महाविदेहे।
अणुत्तरे साहुगुणे धरित्ता जाहिंति मोक्खं धुयकम्मकोसं[3]॥ ११०७

चरियमणहमेयं नम्मयासुंदरीए अनुहजणहियत्थं पायडत्थं पसत्थं।
भणियमसुहबुद्धीनासणत्थं जणाणं परहियरसिएहिं संतिसूरिप्पहूहिं॥ ११०८

धम्मकहा पुण एसा जम्हा इह साहिओ इमो धम्मो।
सम्मत्ते जइयव्वं सिवसुहसंपत्तिहेउम्मि॥ ११०९

वयभंगस्स निमित्तं उवसग्गो नो मुणीण कायव्वो।
पालेयव्वं सीलं पाणच्चाए वि जत्तेण॥ १११०

चइऊण गेहवासं कायव्वो संजमो सुपरिसुद्धो।
नम्मयसुंदरिचरियं निरंतरं संभरंतेहिं॥ ११११

विविहपयसंपयाए कहाइ जइ किंचि ऊणमहियं वा।
भणियं पमायओ वा न संसओ तत्थ कायव्वो॥ १११२

एसा य कहा कहिया महिंदसूरीहिं नियसीसेहिं।
अब्भत्थिएहि न उणो[5] पंडिच्चपयडणनिमित्तं॥ १११३

जो लिहइ जो लिहावइ वाएइ कहेइ सुणइ वा सम्मं।
तेसिं पवयणदेवी करेउ रक्खं पयत्तेण॥ १११४

संतिं[6] करेउ संती संतियरो सयलजीवलोयस्स।
तह बंभसंतिजक्खो कयरक्खो समणसंघस्स॥ १११५

निम्माया एस कहा विक्कमसंवच्छरे वइक्कंते।
एक्कारसहिं सएहिं सत्तासीएहिं वरिसाणं॥ १११६

आसोयासियएगारसीए वारम्मि दिवसनाहस्स।
लिहिया पढमायरिसे मुणिणा गणिसीलचंदेण॥ १११७

॥ श्रीः ॥ इति नर्मदासुन्दरीकथा समाप्ता॥

॥ ग्रंथाग्रं १७५०॥

---

१ °लीढे°. २ °गुणाण°. ३ °कोस. ४ मियय°. ५ उणे. ६ संतां.

सिरीदेवचंदसूरिकया

नम्मयासुंदरीकहा

(मूलशुद्धिप्रकरणवृत्त्यन्तर्ग्रथिता)

एत्थेव जंबुदीवे[1] दीवे भरहद्धमज्झखंडम्मि ।
अत्थि गुणोहनिहाणं[2] वरनयरं वद्धमाणं ति ॥ १

तस्स पहू सिरिमोरियवंसप्पभवो कुणालअंगरुहो ।
तिक्खंडपुहईसामी[3] अत्थि निवो संपई नाम ॥ २

अन्नो वि तत्थ नीसेसगुणमओ उसभसेणसत्थाहो ।
अत्थि जिणधम्मनिरओ वीरमई तस्स वरभज्जा ॥ ३

तीसे य दुण्णि[4] पुत्ता सहदेवो तह य वीरदासो[5] त्ति ।
रिसिदत्ता वि य[6] धूया पभूयनारीयणपहाणा ॥ ४

तीसे य रूवजोव्वण[7]लुद्धा वरया अयंति[8] रिद्धिजुया ।
न य देइ ताणं[9] जणओ मिच्छादिट्ठि[10] त्ति काऊण ॥ ५

भणई[11]-'दरिद्दजुओ वि हु रूवविहीणो[12] वि जिणवरमयम्मि ।
जो होही निकंपो[13] दायव्वा तस्स मे एसा ॥' ६

एवं[14] सुणिय पइण्णं[15] समागओ कूवचंद्[16]नयराओ ।
नामेण रुद्ददत्तो महेसरो तत्थ सत्थेण ॥ ७

अह संकामिय भंडं नियमित्तकुबेरदत्तगेहम्मि ।
तव्वीहीएँ निविट्ठो[17] जावऽच्छइ ताव नयरपहे[18] ॥ ८

नियसहीयणजुत्तं निग्गच्छंतं[19] निएइ रिसिदत्तं ।
तं दट्ठूणं एसो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥ ९

'का मित्त ! इमा कण्णा[20] ?' पुट्ठे सो कहइ तस्सरूवं तु ।
तत्तो तल्लोहेणं गच्छइ सो सूरिपासम्मि ॥ १०

---

१ L °दीवे. २ L गुणोहनिवासं. A B गुणोहनिहाणं. C D गुणाण निवासं°. ३ L °खमरहसामी. ४ L दुन्नि. ५ L °दासु त्ति. ६ L °दत्ता वरधूया. ७ L °जुव्वण°. ८ L अइंति. ९ L नयरिइ ताणं. १० A B मिच्छावाइ त्ति. ११ L पभणइ. १२ L °विहूणो. १३ L निक्कंपो. १४ A B एयं. १५ L सुणिय पईवं. १६ L कूवचंद°. १७ L तव्वीहीए निमित्तो-विट्ठो. A B निव्विट्ठो. १८ L नयरमहे. १९ L नियच्छंती. २० L कन्ना.

जाओ य कवडसड्ढो जिणगुरु[1]पूयाइएसु बहुदवं[2] ।
वियरइ[3]. अहवा पुरिसो रागंधो किं च न हु कुज्जा ॥ ११

तो दट्ठुं तच्चरियं अच्चंत्थं[4] रंजिओ उसभसेणो ।
सयमेव देइ कण्णं[5] वीवाहं कुणइ रिद्धीए[6] ॥ १२

भुंजंतो वरभोए चिट्ठइ जा तत्थ रुद्ददत्तो सो ।
तो पिउणा से लेहो आहवणत्थं तु पट्ठविओ ॥ १३

तब्भावत्थं नाउं[8] ससुराओ मोइऊण अप्पाणं ।
रिसिदत्ताए[9] सहिओ संपत्तो कूववंद्र[10]म्मि ॥ १४

[11]अभिनंदिओ [12]पिइ-माईएहिँ चिट्ठइ तहिँ सुहेण सो ।
कवडगहिय त्ति दूरं[13] दूरेणं मुयइ जिणधम्मं ॥ १५

रिसिदत्ता वि हु मिच्छत्तसंगदोसेण दूसिया अहियं ।
मोत्तूणं[14] जिणधम्मं धणियं[15] निद्धंधसा जाया ॥ १६

तं नाउं जणएहिँ वि[16] आलावाई विवज्जियं[17] सवं ।
जोयणदुगमित्तं पि हु संजायं जल[18]हिपारं च (व ?) ॥ १७

मयमत्ताणं ताणं विसयपसत्ताण अन्नया जाओ ।
रिसिदत्ताए पुत्तो रूवेणं सुर[19]कुमारो व ॥ १८

तस्स महेसरदत्तो [20]ठवियं नामं गुरूहिँ समयम्मि ।
कालेण परिणयवओ[21] उद्दामं जोव्वणं[22] पत्तो ॥ १९

एत्तो[23] य व[24]ड्ढमाणे पुरम्मि रिसिदि[25]त्तजिट्ठभाउस्स[26] ।
सहदेवस्स उ भज्जा सुंदरिनामा अणन्नसमा ॥ २०

जिणधम्मरया निच्चं भुंजंती नियपियेण[27] सह भोए ।
गब्भवई संजाया उप्पज्जइ डोहलो तत्तो[28] ॥ २१

जाणामि जइ पिएणं समयं मज्जामि नम्मयासलिले ।
बहुपरिवारसम[29]ग्गा तम्मि अपुज्जंतए तत्तो ॥ २२

१ A B जिणसुणिपूया°. २ L बहुदत्तं. ३ L वयरइ. ४ L अचंतं. ५ L कन्नं. ६ L रिद्धिए. ७ O D तो. ८ L नाओ. ९ L °त्ताए समेओ. १० L कूवचंदम्मि. ११ L अभिनिंदिओ १२ L पियमाई°. १३ L °गहियं ति काउं दूरेणं १४ L मुत्तूणं. १५ L धणियम्मि निद्धं°. १६ L जणएहिं आला°. १७ L विसज्जियं. १८ L कलहि°. १९ A B सिरिकुमारो. २० L °दत्तो उवियं. २१ A B °णयकलो. २२ L जुव्वणं. २३ O D तत्तो. २४ L वद्दमाणे. २५ A B सिरिदत्त. २६ L °भायस्स. २७ L °पिएण. २८ L तीए. २९ L °वारसमेया तम्मि.

कंठग्गयपाणा[1] सा जाया अच्चंतदुब्बल[2]सरीरा।
चिंतावसा चिट्ठइ तं दट्ठुं भणइ सहदेवो ॥ २३
'किं तुह पिए! न पुज्जइ जं जाया[3] एरिसा[4] सरीरेण?।'
भणइ इमा—'मह पिययम! मणम्मि नणु डोहलो गरुओ ॥ २४
जाओ गब्भवसेणं जइ किरि[5] मज्जामि नम्मया[6]सलिले।
तुमए सह'. तो एसो आसासियं[7] कुणइ सामग्गिं ॥ २५
बहुवणिउत्तसमेओ[8] गिण्हइ[9] नाणाविहाइँ पणियाइं।
काऊण महासत्थं चलिओ अह सोहणदिणम्मि ॥ २६
अणवरयपयाणेहिँ वियरंतो[10] अत्थवित्थरं पत्तो।
नम्मय[11]नईएँ तीरे आवासइ सोहणपएसे ॥ २७
दट्ठूण नम्मयं तो बहुतरलतरंगरेहिँ[12]रावत्तं।
अइगरुयविभूईएँ[13] पियाएँ[14] सह मज्जणं कुणइ ॥ २८
संपुण्णे डोहलएँ[15] तत्थेव य नम्मयापुरं नाम।
रम्मनयरं[16] निवेसिय कारावइ वरजिणाययणं ॥ २९
तं सोउं सव्वत्तो आगच्छइ तत्थ भूरि वणिलोगो[17]।
जायइ[18] य महालाभो पसिद्धमेवं[19] पुरं जातं ॥ ३०
अह सुंदरी वि तत्थेव वरपुरे नियगिहे[20] निवसमाणी।
पसवइ पसत्थदिवसे वरकन्नं तीएँ सहदेवो ॥ ३१
कारइ वद्धावणयं परितुट्ठो जेट्ठपुत्तजम्मे[21] व।
विहियं च तीएँ नामं जह नम्मयसुंदरी एसा ॥ ३२
कमसो परिवड्ढंती जाया नीसेसवरकलाकुसला।
सरमंडलं च सव्वं विन्नायं अह विसेसेण ॥ ३३
पत्ता य जुव्वणं सा असेसतरुणयणमणविमोहणयं।
तत्तो परा पसिद्धी संजाया तीएँ सव्वत्थ ॥ ३४
सोऊण तीएँ रूवं रिसिदत्ता दुक्खिया विचिंतेइ।
'कह मह पुत्तस्स इमा होही भज्जा वरा कण्णा? ॥ ३५

---

१ L कंठगहणप्पणा. २ L °दुबल°. ३ A B °जाइ संजाया. ४ L एरिसी सरीरेण. ५ L किरि. ६ L नमया°. ७ L आसासि कुण°. A B आसासइ. ८ L °वणिओत्तिसमेओ. ९ C D गिण्हिय. १० L बिलसंतो. ११ L नम्मया°. १२ L °रेहिँरा°. १३ L °विभूइए. १४ C D पिएण. L पियाइ. १५ L संपुन्नडोहलाए. १६ L °नयरम्मिय°. १७ A B वणलोगो°. १८ L आयइ महा°. १९ C D °द्धमेयं. २० L नियपुरे निवस°. २१ L जिट्ठपुत्तिजम्मेण.

हा हा ! अहं अपुण्णा[1] विवज्जिया जा समत्थ[2]सयणेहिं ।
अहवा कित्तियमेत्तं[3] एयं परिचत्तधम्माए ॥ ३६

आलावो वि हु जेहिं परिचत्तो ते कहं महं कण्णं[4] ।
दिंति' इय माणसेणं दुक्खेणं रोवए एसा ॥ ३७

तं दट्ठूणं भत्ता पुच्छइ[5]–'किं पिययमे ! तुहं दुक्खं ।
साहीणे वि ममम्मी[6] भणसु तयं[7] जेण अवणेमि ॥' ३८

तो सा कहेइ सव्वं तं सोऊणं पयंपई पुत्तो ।
'तायं ! विसज्जेहं[8] ममं[10] जेणाहं तत्थ वच्चामि ॥ ३९

विणयाइएहिं[11] सव्वे[12] आराहित्ता मए इमा कण्णा[13] ।
परिणेयव्वाऽवस्सं कायव्वो जणणिसंतोसो ॥' ४०

तो विविहपणियभंडेहिं[14] पूरियं अइमहंतयं सत्थं[15] ।
काऊणं जणएणं विसज्जिओ नम्मयानयरे ॥ ४१

पत्तो य तत्थ बाहिं सत्थस्स निवेसणं करेऊणं ।
मायामहस्स गेहं पविसइ सुपसत्थदियहम्मि ॥ ४२

मायामहमाईए[16] सयणे दट्ठूण हरिसिओ[17] धणियं ।
गेहागयं ति लोगट्ठिईइ[18] गोरविहिं[19] इयरे वि[20] ॥ ४३

विणयाइएहिं[21] सव्वे तत्थ वसंतोऽणुरंजए[22] एसो ।
मग्गइ य आयरेणं तं कण्णं[23] ते वि नो तस्स ॥ ४४

दिंति तओ तेण इमे अच्चत्थं[24] जाइया तत्तो[25] ते वि ।
कारविय विविहसवहे[26] दिंति तयं अन्नदियहम्मि ॥ ४५

जाए धम्मवियारे कण्णात्तयणेहिं[27] माहुपडिबुद्धो ।
सद्धम्मभावियमई [28]जातो अह सावगो[29] परमो ॥ ४६

तो तुट्ठा जणयाई पाणिग्गहणं[30] विहीएँ कारेंति[31] ।
भुंजइ विसिट्ठभोए तीए समं धम्मकयचित्तो ॥ ४७

१ L अपुन्ना. २ L समत्त°. ३ L °मित्तं. ४ L कन्नं. ५ L पिच्छइ. ६ AB पइम्मी. ७ L °सु तुमं जे°. ८ L सो य विस°. ९ CD विसज्जेहि. L विसज्जेसि. १० L समं. ११ L विणयाईहिं. १२ A B सव्व. L सव्वेहि. १३ L कन्ना. १४ L सो विविवहरणियभंडेहिं. १५ L सव्वं. १६ L मायमहमाइए. १७ A B हरसिओ. १८ L लोगट्ठिईए. १९ A B गोरवहिं. C D गोरवएहिं. २० A B इयरेहिं. २१ L विणयाईहिं. २२ L णुरंजइ. २३ L कन्नं. २४ L अच्चंत. २५ L तओ. २६ L ° सवहेहिं. २७ L कन्नासयणेहिं. २८ L सद्धम्मभावियमई जाओ. २९ L सावओ. ३० L °ग्गहण. ३१ L कारिंति.

केण य कालेण तओ[1] नियनयरं जाइ नम्मयासहिओ।
जणयाईपडिवत्तीपुव्वं पविसरइ नियगेहे ॥ ४८
सासू-ससुराईणं पडिवत्तिं नम्मया विहेऊणं।
चिट्ठइ विणएण तओ अप्पवसं कुणइ सव्वं पि ॥ ४९
सो वि महेसरदत्तो धम्मम्मि दढो कयत्थमप्पाणं।
लाभेणं[2] तीएँ मन्नइ विलसइ[3] नाणाविणोएहिं ॥ ५०
रिसिदत्ता वि पुणो वि हु पडिवज्जई[4] पुव्वसेवियं धम्मं।
अह अन्नया कयाई सा नम्मयसुंदरी हिट्ठा[5] ॥ ५१
आयरिसे नियँवयणं[6] पलोयमाणा[7] गवक्खमारूढा।
जा चिट्ठइ ता साहू तत्थ तले कह वि संपत्तो ॥ ५२
तो[8] तीएँ[9] पमायपरव्वसाएँ अनिरूविऊण पक्खित्ता।
पिक्का[10] मुणिस्स सीसे तो[11] कुविओ जंपए साहू ॥ ५३
'जेणाहं पिक्काए भरिओ सव्वंगयंपि(मि)[12] सो पावो।
पियविप्पओगदुक्खं मह वयणेणं समणुभवउ ॥ ५४
बहुविहदुक्खकिलंतो पभूयकालं तु मज्झ वयणेणं।'
तं सोउं नम्मयसुंदरी[13] वि सहस त्ति संभंता ॥ ५५
उत्तरिय गवक्खाओ निंदंती अप्पयं बहुपयारं[14]।
लूहित्ता[15] वत्थेणं पणमइ मुणिचलणजुयलम्मि ॥ ५६
परमेणं विणएणं खामित्ता–'भणइ जगजियाणंद!।
संसारियसोक्खाइं[16] मा मह एवं पणासेहि ॥ ५७
धिद्धी! अहं अणज्जा जीईं[17] पमायाउ एरिसं काउं।
बहुविहदुक्खसमुद्दे खित्तो अइभीसणे अप्पा ॥ ५८
अज्जं चिय सामि! महं सव्वाइँ[18] पणट्ठयाइँ[19] सोक्खाइं[20]।
अज्ज अहं संजाया पाविट्ठाणं पि[21] पावयरी ॥ ५९
तुम्हारिसा महायस! कुणंति दुहियाण उवरि कारुण्णं[22]।
ता करुणारससायर! भयवं! अवणेहि महँ[23] सावं ॥' ६०

१ L केण य कालेण इमो तओ. २ L लंभेण. ३ L विलसई. ४ A B पडिवज्जिय.
५ L दिट्ठा. ६ L °से णयवयणं. ७ L °माणी. ८ तो is not found in L. ९ L तीए य पमा°.
१० L पेक्खा. ११ L ता. १२ A B सव्वंगियंपि. १३ L नम्मया°. १४ L °प्पयारं.
१५ L लूहाविय वत्थे°. १६ L °सुक्खाइं. १७ L जीए. १८ A B सव्वाइ. १९ L पणट्ठाइं.
२० L सुक्खाइं. २१ A B °ट्ठाणं तु पाव. २२ L कारुन्नं. २३ C D मम.

इय विलवंती बहुहा भणिया उवओगपुव्वयं मुणिणा ।
'मा मा विलवसु मुद्धे ! एवं अइ[1]दुक्खसंतत्ता ॥ ६१

कोववसमुवगएणं दिण्णो[2] सावो तुहं[3] मए भद्दे ! ।
संपइ पसण्णहियओ[4] तुह उवरिं नत्थि मे[5] कोवो ॥ ६२

किंतु अणाभोगेणं[6] वि भणिओ सावो[7] हु भाविओ एसो ।
तुमए अन्नभवंतर[8]सुनिकाइयकम्मदोसेणं ॥ ६३

पियं[9]विरहमहादुक्खं अणुभवियव्वं तए चिरं[10] कालं ।
न हु नियकयकम्माणं संसारे छुट्टए को वि ॥ ६४

वच्छे ! हसमाणेहिं जं बज्झइ पावयं इह जिएहिं ।
रोवंतेहिं[11] तयं खलु नित्थरियव्वं न संदेहो ॥' ६५

तो नाउं परमत्थं वंदिय साहू[12] विसज्जिओ तीए ।
तम्मि गए रुयमाणी[13] पिएण[14] पुट्ठा कहइ सव्वं ॥ ६६

आसासिऊण तेण वि भणिया कुण जिण[15]जईण पूयाई ।
दुरियविघायणहेउं न हु रुन्नेणं हवइ किं पि ॥ ६७

पडिवज्जिय तव्वयणं[16] कुणइ तवं पूयए जिणाईए ।
कइहिं वि[17] दिणेहिं तत्तो पुणो वि भोगप्परा जाया ॥ ६८

एवं परिगलमाणे काले मित्तेहिं एरिसं भणिओ ।
सो हु महेसरदत्तो एगंते ठविय सव्वेहिं ॥ ६९

'अत्थोवज्जणकालो मित्त ! इमो वट्टए सुपुरिसाणं ।
पुव्वपुरिसज्जियत्थं लज्जिज्जइ विलसमाणेहिं ॥ ७०

ता गंतु जवणदीवं विढविता नियभुयाहिं[18] बहुदव्वं ।
विलसामो' तव्वयणं पडिवज्जइ रंजिओ एसो ॥ ७१

अह महयाकट्ठेणं जणणी-जणयाणं[19] मोकलावेउं[20] ।
गिण्हेई[21] बहुप्पयारं जं जं भंडं तहिं जाइ ॥ ७२

भणिया य नम्मयासुंदरी वि–'कंते[22] ! समुद्दपारम्मि ।
गंतव्वं मह होही चिट्ठसु ता तं सुहेणेत्थ ॥ ७३

---

१ L °दुख°. २ L दिण्णो. ३ C D सावो मए तुमं भद्दे. ४ L °हियए तुह. ५ L °त्थि मह को°. ६ L °भोगेणं भणिओ. ७ A B भावो. ८ L °सनिकाइय°. ९ L पिय-विरह°. १० C D तए बहुं कालं. ११ L रोयंतेहिं. १२ L साहुं. १३ A B रुवमाणी. १४ L पियेण. १५ कुण जईण°. १६ L तव्वयणा. १७ L कहवि. १८ L °भूयाहिं. १९ C D °जणयाणि. २० L मुक्कलावेउ. २१ L गिन्हइ. २२ L वि कंठे समु°.

जम्हा[1] अइसुकुमालं तुह देहं न हु सहिस्सई कट्ठं।
तम्हा देव-गुरूणं भत्तिपरा चिट्ठ अणुदियहं॥' ७४
तो भणइ इमा–'पिययम! मा जंपसु एरिसाइँ वयणाइं।
जम्हा उ[2] तुज्झ विरहं न[3] समत्था विसहिउं अहयं[4]॥ ७५
कट्ठं पि तए समयं वसंतीए अईव सुहजणयं।
ता निच्छएण तुमए सह गंतव्वं मए नाह!॥' ७६
तन्नेहमोहियमई पडिवज्जिय तो महंतसत्थेण।
गंतूण जलहितीरे आरुहइ पहाणवहणेसु॥ ७७
जा जाइ जलहिमज्झे पहाणअणुकूलवायजोगेण।
ताव तहिं केणावि हु उग्गीयं महुरसद्देण॥ ७८
तं सोऊणं बाला सरलक्खणजाणिया पहिट्ठमुही[5]।
जंपइ–'एसो पिययम! गायइ[6] कसिणच्छवी पुरिसो॥ ७९
अइथूल[7]पाणिजुयलो बब्बरकेसो रणम्मि दुज्जेओ[8]।
उण्णय[9]वच्छो साहस्सिओ य बत्तीसवारिसिओ[10]॥ ८०
गुज्झम्मि[11] य रत्तमसो इमस्स ऊरुम्मि[12] सामला रेहा।'
इय सोउं से भत्ता[13] गयनेहो[14] चिंतए एवं॥ ८१
'नूणं इमेण समयं वसइ इमा तो[15] वियाणई एवं।
ता निच्छएण असई एसा अच्चंतपाविट्ठा॥ ८२
आसि पुरा मह हियए महासई साविया इमा दइया[16]।
किं तु कयं मसिकुचय[17]दाणमिमीए कुलदुगे वि॥ ८३
ता किं खिवामि एयं उयहिम्मि[18] उयाहु मोडिउं गलयं।
मारेमि[19] आरडंती किं वा घाएमि छुरियाए॥' ८४
इय चिंतइ[20] जावेसो बहुविहमिच्छावियप्पपरिकलिओ।
ता कूवयट्ठियनरो[21] जंपइ–'रे धरह वहणाइं॥ ८५
एसो रक्खसदीवो गिण्हह[22] इह नीरइंधणाईयं[23]।'
ते वि तयं पडिवज्जिय धरंति तत्थेव वहणाइं॥ ८६

१ L जंम्हा. २ L °म्हा हु तु°. ३ C D °हं असमत्था. ४ L विसहियं अहियं. ५ L सरलखणजाणगा पहट्ठमुही. ६ L जंपइ पियपम गीयइ एसो जंपइ कसिण°. ७ L अइसूल°. ८ L बब्बरकेसा रणम्मि पुच्छेड. ९ L उन्नयवच्छा. १० L °वारसिओ. ११ L गुस्सम्मि रत्त°. १२ L उरम्मि. १३ L सत्ता. १४ L °नेहं. १५ L इमा विया°. १६ L दईया. १७ L °कुंचय°. १८ L उवहिम्मि. १९ L मारेमे. २० L चिंतिय. २१ L ता कूवयट्ठिपुरिसो. २२ L गिन्हइ. २३ L °यंधणा°.

पेच्छंति[1] तयं दीवं गिण्हंती[2] इंधणाइयं सव्वं ।
सो वि महेसरदत्तो मायाए जंपए एवं ॥ ८७
'अइरमणीओ[3] दीवो सुंदरि ! ता उत्तरित्तु पेच्छामो[4] ।'
सा वि परितुट्ठचित्ता तेण समं भमइ दीवम्मि ॥ ८८
अण्णण्णेसु[5] वणेसु कमेण[6] पिच्छंति सरवरं एक्कं ।
उत्तुंगपालिसंठियनाणाविहतरुवरसणाहं ॥ ८९
अइसच्छ[7]साउसीयलजलपुण्णं[8] सयलजलयरसणाहं ।
दट्ठूण तयं मज्जंति दो वि तत्तो वि उत्तरिउं ॥ ९०
जा तव्वणगहणेसुं[9] भमंति ता सच्चवंति[10] एगत्थ ।
रमणीयलयाहरयं तं मज्झे करिय सत्थरयं ॥ ९१
दोण्णि वि सुवण्णयाइं खणेणं[11] निद्दावसं गया बाला ।
तो चिंतइ से भत्ता निग्घिणहियओ जहा 'एत्थं[12] ॥ ९२
मुंचामि इमं जेणं मरइ सयं चेव एगिया रण्णे[13] ।'
इय चिंतिऊण सणियं[14] सणियं उस्सक्किउं[15] जाइ ॥ ९३
वहणेसुं विलवंतो 'माइल्लो' उच्च-उच्चसद्देहिं ।
सत्थिल्लएहिँ पुट्ठो–'रुयसि[16] किमत्थं ?' ति सो[17] भणइ ॥ ९४
'सा मम भज्जा भाउय ! खद्धा घोरेण छुहिय[18]रक्खेण ।
तं दट्ठुं भयभीओ अहमेत्थ पलाइउं[19] पत्तो ॥ ९५
तो पूरह वहणाइं मा एत्थ समागमिस्सई रक्खो ।'
ते वि तओ भयभीया पूरंति झड त्ति वहणाइं ॥ ९६
सो वि हु आहाराई दुक्खकंतो[20] व मुंचइ खणेण ।
रोवइ[21] विलवइ कुट्टइ उरसिरमाईणि[22] मायाए ॥ ९७
हियएणं पुण तुट्ठो[23] चिंतइ नणु सोहणं इमं जायं ।
जं लोगऽववाओ[24] वि हु परिहरिओ एवविहियम्मि ॥ ९८

१ L पिच्छंति. २ L गिण्हंती. ३ L °समणीओ. ४ L पिच्छामो. ५ L अन्नन्नेसुं. ६ L कमेण. ७ C D अइअच्छ°. ८ L °सियजलपुन्नं°. ९ L जाव य वणगहणेसुं. १० L सच्चवंति. ११ L दुन्नवि सुव्वंति खणेणं. Blank space is found in A B for the lines from निद्दावसं (inclusive) upto the letters खेमे (inclusive) of खेमेण° in verse १०१. १२ L इत्थ. १३ L एगया रन्ने. १४ L सयणिं. १५ L ओस्सक्कियं. १६ L रूयसि. १७ L ति तो भ°. १८ L छुरिय°. १९ L अहमित्थ पलाइयं. २० दुक्खकंतो. व्व मुयइ. २१ C D रुवइ विल°. २२ L °माईण. २३ L हियएणं परितुट्ठो. २४ L जं लोगविवाओ.

सत्थियलएहिं तत्तो पडिबोहिय मोइओ[1] इमो वि तओ ।
अइमहया कट्ठेणं संजाओ विगयसोगो[2] व ॥ ९९
पत्ता य जवणदीवं सव्वेसि वि[3] हिययवंछियाओ वि ।
जाओ अहिओ लाभो कमेण गिण्हित्तु[4] पडिपणिए ॥ १००
वलिऊणं खेमेणं पत्ता सव्वे वि कूववंदम्मि[5] ।
सो वि महेसरदत्तो अक्खइ सयणाण रोवंतो ॥ १०१
जह—'मह दइया खद्धा रक्खसदीवम्मि घोररक्खेण ।'
ते वि तओ दुक्खत्ता कुणंति तीसे मयगकिच्चं[6] ॥ १०२
परिणाविओ य एसो अण्णं[7] कुलबालियं अइसुरूवं[8] ।
तीए य बद्धनेहो भुंजइ भोगे अणण्णसमे[9] ॥ १०३
एत्तो[10] वि नम्मयासुंदरी वि जा उट्ठिया[11] खणद्धेण ।
तो न हु पिच्छइ[12] कंतं तत्थ तओ चिंतए एवं ॥ १०४
'नूणं परिहासेणं लुक्को[13] न णु[14] होहिई महं दइओ ।'
वाहरइ तओ—'पिययम ! देसु महं[15] दंसणं सिग्घं ॥ १०५
मा कुण बहुपरिहासं बाढं उत्तम्मए[16] महं हिययं ।'
जा एइ न एवं पि[17] हु सासंका उट्ठिउं[18] ताव ॥ १०६
परिमग्गइ सव्वत्तो तह वि अपिच्छंतिया[19] सरे जाइ ।
भमइ[20] य वणविवरेसुं[21] कुणमाणी बहुविहे सद्दे ॥ १०७
'हा नाह ! ममं मोत्तुं[22] दुहियमणाहं कहिं गओ इण्हि[23] ।
सोऊणं पडिसद्दं[24] धावइ तो[25] तम्मुही बाला ॥ १०८
विज्झंती खइर[26]कंटएहिं पाएसु गलिय[27]रुहिरोहा ।
गिरिविवरे भमिऊणं पुणो वि सा जाइ लयहरए[28] ॥ १०९
एत्थंतरम्मि सूरो दट्ठूणं तीए तारिसमवत्थं ।
पडिकाउं अचयंतो लज्जाए व दूरमोसरिओ[29] ॥ ११०

१ L °बोहिया भाइओ. २ L °सोगु व्व. ३ L सव्वे वि हु हिय°. ४ L गिण्हिउ. ५ L °वंदुम्मि. ६ L कुणंति नीसेसमयकिच्चं. ७ L अन्नं. ८ L °सरूवं. ९ L भोए अनन्नसमे. १० A B इत्तो. ११ L उठिया. १२ L पिक्खइ. १३ A B लिहओ. L लिक्को. १४ C D न हु हो°. १५ L देसि ममं. १६ L उत्तस्सए. १७ L एवं वि. १८ L उट्ठिया. १९ L अपिच्छंतया. २० L समइ. २१ A B °विवरेसु. २२ L महं मुत्तुं. २३ L इण्हि. २४ A B पडिसद्दे. २५ L धाइ तओ तम्मुही. २६ L खाइर°. २७ L गहियकहि°. २८ C D लइह°. २९ L °मोसरीओ.

अत्थगिरिए[1] सूरो ल्हसिउं अवरोयहिम्मि निब्बुड्डो[2] ।
अहवा अत्थमइ च्चिय सूरो पडिकाउमचयंतो ॥ १११
एत्थंतरम्मि[3] तो सा तत्थेव लयाहरम्मि परिखिन्ना ।
सोगत्ता वीहंती जुवजाएँ[4] पल्लवत्थरणे ॥ ११२
उत्थरई[5] य तम[6]नियरो सव्वत्थोवहय[7]लोयणप्पसरो ।
अहव पसरंति मलिणा[8] परितुट्ठा मित्तनासम्मि ॥ ११३
इय जा खणंतरेक्कं[9] चिट्ठइ सा दुक्खिया तहिं बाला ।
ता उग्गमेइ राया राय व्व तमारिखयकारी ॥ ११४
तं दट्ठूणं[10] ससिया मण्णइ उज्जीवियं व[11] अप्पाणं[12] ।
अहवा पीऊसरुई आसासइ जं किमच्छेरं[13] ॥ ११५
तो बहुविहचिंतावाउलाइँ[14] अइदुक्खियाएँ सा रयणी ।
चउजामनिम्मिया वि हु जामसहस्सं व वोलीणा ॥ ११६
अह उग्गयम्मि[15] सूरे सा नम्मय[16]सुंदरी दुगुणदुक्खा ।
पुण रोविउं पयत्ता सुमरिय नियनाहगुणनियरं ॥ ११७

अवि य–

'हा पडिवण्णय[17]वच्छल ! दक्खिन्नयनीरपूरसरिनाह ! ।
हा करुणायर ! अहियं[18] कह मुक्का एक्किया रण्णे[19] ॥' ११८
एवं[20] विलवंती सा पुणो[21] वि गच्छइ सरोवरं तेण ।
पुणरवि हिंडइ रण्णे[22] पुच्छंती हरिणिमाई उ[23] ॥ ११९
'किं दिट्ठो मह भत्ता कत्थइ[24] तुब्भेहिँ एत्थ भमडंतो ? ।'
पडिसद्दं सोऊणं पविसइ गिरिकुहरमज्झम्मि ॥ १२०
तत्थ वि तमपेच्छंती[25] पुणो वि निग्गच्छई तओ एवं ।
वोलीणा पंच दिणा आहारविवज्जियाइं[26] दढं ॥ १२१
अह छट्ठम्मि दिणम्मी भमडंती जाइ उयहि[27]तीरम्मि ।
जत्थाऽऽसि पवहणाइं[28] चिंतइ तं सुण्णयं[29] दट्ठुं ॥ १२२

---

१ L अत्थिगिरीउ. २ L विब्बुड्डो. ३ L इत्थ°. ४ L जुव्वजाए. ५ L उच्छरइ. ६ A B हिम°. ७ L सव्वत्तो पुइयलो°. ८ L मसिणा परिमुट्ठा. ९ L °तरिक्कं. १० L दट्ठूणं स°. ११ C D वियं तु अ°. १२ L मन्नइ उज्जीविज्जयव्व अत्ताणं. १३ L आसासइ तं वि मच्छेर १४ L °वाउलाए. १५ L उदयम्मि. १६ L नमय°. १७ L °वन्नय°. १८ L °णायर निय अहियं कह. १९ L एक्किया अहं रन्ने. २० L इय विल.° २१ L पुण. २२ L रन्ने. २३ A B हरिणमाईए. L हरिणिमाईणि. २४ C D कत्थय २५ L °पिच्छंती. २६ L °वज्जियाए. २७ L उयहि°. २८ L य वह°. २९ L सुन्नयं.

'रे रे जीव ! अलक्खण ! मुहाएँ[1] किं खिज्जसे तुमं एवं ।
जं अन्नभवोवत्तं[2] तं को हु पणासिउं[3] सत्तो ॥ १२३
रे जीव ! तया मुणिणा आइट्ठं जं तयं इमं मण्णे[4] ।
ता सम्मभावणाए[5] सहसु[6] तयं किं व रुण्णेणं[7] ? ॥' १२४
इय चिंतिऊण तो सा गंतूण सरोवरम्मि नियदेहं ।
पक्खालिय संठाविय ठवणं तो वंदई देवे[8] ॥ १२५
काऊण पाणवित्तिं फलेहिँ तो गिरिगुहायँ[9] मज्झम्मि ।
मट्टियमयजिणपडिमं काउं वंदेइ[10] भत्तीए ॥ १२६
पूयइ[11] वरकुसुमेहिँ कुणइ बलिं बहुफलेहिँ पक्केहिँ[12] ।
रोमंचंचियदेहा संथुणइ मणोहरगिराए ॥ १२७

अवि य–

'जय संसारमहोयहिनिबुड्डजंतूण तारणतरंड ! ।
जय भयभीय[13]जणाणं सरणय ! जिणनाह ! जगपणय ! ॥ १२८
जय दुहियाणं दुहहर ! रागद्दोसारि[14]विरियनिद्दलण ! ।
जय मोहमल्लमूरण ! जय चिंताचत्त[15] ! जिणनाह ! ॥ १२९
जय निद्दापरिवज्जिय ! छुहापिवासाजराभयविमुक्क ! ।
मयमायखेय[16]वज्जिय ! गयजम्मणमरण[17] ! जय नाह ! ॥ १३०
जय हिय[18]अविम्हय ! अपमाय ! देव ! सासयसुहम्मि संपत्त ! ।
सिवपुरपवेसणेणं कुणसु दयं मज्झ दुहियाए ॥' १३१
इय जिणथुइजुत्ताए[19] मुनिकाइयकम्ममणुहवंतीए ।
जा जाइ कोई[20] कालो ता चिंतइ अन्नया एसा ॥ १३२
'जइ कह वि भरहवासे गमणं मह होइ पुण्ण[21]जोएण ।
तो सव्वसंगचायं काऊण वयं गहिस्सामि ॥' १३३
इय चिंतिऊण रयणायरस्स तीरम्मि उब्भियं[22] तीए ।
चिंधं महामहंतं[23] जं पयडइ भिन्नवहणं ति[24] ॥ १३४

---

१ L मुहाइ. २ L °वोवत्तं. ३ L °सियं. ४ L मज्जे. ५ L सम्मभा°. ६ L सहस्सु. ७ L रुण्णेणं. ८ L तो वंदए देवो. ९ L °गुहाए. १० L मट्टियजिणबिंबं काउं ठवेइ. ११ L पूइय. १२ L कुणइ बहुमसिक्खरनिक्खरेहिं. १३ L भवभीय°. १४ L °दोसारि°. १५ A B चिंतावत्त. १६ L मयसेसखेय°. १७ C D °मरणपरिमुक्क. L °मरणभरमोह. १८ L हियवि°. १९ A B °जुत्ताए. २० L को वि कालो°. २१ L पुन्न°. २२ L उब्भियं. २३ L बिंबं महे महंतं. २४ A B °वहणित्तं.

इत्थंतरम्मि[1] तीसे चुल्लपिया वीरदासनामो जो ।
बब्बरकूलं जंतो पत्तो तम्मि य पएसम्मिं[2] ॥ १३५
दट्ठूण तयं चिंधं लंबाविय पवहणं समुत्तरिउं[3] ।
पयमग्गेणं पत्तो थुणइ जिणं नम्मया जत्थ ॥ १३६
सोऊण तीएँ सद्दं सासंको नम्मया किमेस त्ति ।
जा पत्तो दिट्ठिपहे ता सहसा[4] उट्ठिया बाला ॥ १३७
दट्ठूण चुल्लपियरं कंठम्मि विलग्गिउं घणं रुन्ना[5] ।
सो वि तयं ओलक्खिय[6] मुंचइ नयणेहिँ सलिलोहं ॥ १३८
पुट्ठा य – 'किं गुणोयहि! वच्छे! तं इत्थ एकिया रण्णे[7] ।'
सा वि असेसं वत्तं[8] जं जहवत्तं परिकहेइ ॥ १३९
'पेच्छह[9] विहिणो दुविलसियं' ति भणिऊण नेइ तं वहणे ।
ण्हाणाई[10] काराविय भुंजावइ मोयगाईहिं[11] ॥ १४०
चलिओ य तत्तो[12] कमसो पत्तो अणुकूलवायजोगेण ।
बब्बरकूले[13] तत्तो ताडावइ पडउडिं[14] रम्मं ॥ १४१
उत्तारिय भंडाइं पडउडिमज्झम्मि नम्मयं[15] ठवियं ।
गिण्हिय उवायणाइं[16] गच्छइ नरनाहपासम्मि ॥ १४२
नरवइणा सम्माणे विहिए तो[17] जाइ निययठाणम्मि ।
जावऽच्छइ[18] कइ वि दिणे ता जं जायं तयं सुणह ॥ १४३
अत्थि तहिं वत्थव्वा[19] हरिणी नामेण सुंदरा गणिया ।
नीसेसकलाकुसला गोरवा नरवरिंदस्स ॥ १४४
वेसायणप्पहाणा[20] उब्भडलावण्ण[21]जोव्वणुम्मत्ता ।
सोहग्गवरपडागा[22] सुपसिद्धा रिद्धिपरिकलिया ॥ १४५
सा रण्णा परिभणिया[23] – 'समत्थवेसाण भाडियं[24]विभागं ।
गिण्हह[25] तुमं मज्झं पुण विढविसि जं तं[26] तयं देयं ॥ १४६

१ L इत्थं°. २ A B तम्मि प्पएसम्मि. C D जंतो संपत्तो तप्पएसम्मि. ३ L °त्तरियं. ४ L °प्पहे ता सहस्सा. ५ L विलगियं घणं रुन्नं. ६ L उलखिय. ७ L तं पुत्थ एकिया रन्ने. ८ L वत्तं. ९ L पिच्छह. १० L न्हाणाई. ११ A B मोयगाईयं. १२ L तओ. १३ L °कुले. १४ L पडहउडि. १५ L नम्मया. १६ L गिम्हिय उवाहणाइं. १७ L विहिपत्तो जाइ. १८ L जावत्थइ. १९ L वत्थवा. २० L °पहणा. २१ L °लावन्न°. २२ L °पडाया. २३ L रन्ना पभिभ°. २४ L भाडिपवि°. २५ L गिन्हह. २६ L विढवसि जं जं तयं.

[1]जो य इह पोयसामी आगमिही सो य अट्ठसहस्सं तु ।
दीणाराणं देही तुज्झं[2] मज्झ प्पसाएणं[3] ॥' १४७

एसा तत्थ ववत्था वेसाणं अत्थि राइणो[4] समयं ।
हरिणीएँ तओ चेडी पट्ठविया वीरदासस्स ॥ १४८

पासम्मि तीएँ भणिओ सो जह – 'वाहरइ हरिणी(णि)या[5] तुब्भे ।'
तेण वि सा पडिभणिया – 'जइ वि हु रूवाइगुण[6]कलिया ॥ १४९

अण्णित्थी[7] तह वि अहं भुंजामि न[8] वज्जिउं नियकलत्तं ।'
तीए वि तओ भणियं – 'आगंतव्वं[9] तए तह वि[10]' ॥ १५०

तो जाणिय भावत्थो अप्पइ दीणारसहस्स[11]मट्ठहियं ।
सा वि तयं घेत्तूणं[12] वच्चइ हरिणीएँ[13] पासम्मि ॥ १५१

सा तं दट्ठुं जंपइ – 'किमेइणा एउ वणियपुत्तो त्ति[14]' ।
सा वि पुणो गंतूणं अक्खइ हरिणीएँ[15] जं भणियं ॥ १५२

तं सुणिउं[16] वीरदासो चिंतइ हियएण 'किं मह इमाओ ।
काहिंति[17] जओ सीलं भंजेमि[18] न पलयकाले वि ॥ १५३

गच्छामि ताव तहियं पच्छा काहामि जं जहाजुत्तं[19] ।'
इय चिंतिऊण गच्छइ तीए भवणं अइसुरम्मं ॥ १५४

तो महुरमंजुलाहिं वियड्ढभणिईहिँ[20] साणुरागाहिं ।
सा जंपइ सवियारं तह वि न सो चलइ मेरु व ॥ १५५

[21]एत्थंतरम्मि कण्णे[22] कहियं हरिणीएँ[23] तीएँ चेडीए ।
जह – 'सामिणि ! एयघरे अच्छइ[24] महिला अणण्णसमा[25] ॥ १५६

सा जइ कहिं वि तुब्भं आएसं कुणइ तो हु[26] रयणाणं[27] ।
पूरइ निस्संदेहं तुह गेहं किं च[28] बहुएणं ॥ १५७

जम्हा हु[29] रूवजोव्वणलावण्ण[30]गुणेहिँ तीएँ सारिच्छा ।
दीसइ न मच्चलोए' तं सोउं हरिणिया लुद्धा ॥ १५८

१ L जो इह पोयसामी°. २ L तुब्भं. ३ L पसाएण. ४ L रायणा. ५ A B रिण्णिया. ६ L रूवाइपरिक°. ७ L अन्नत्थी. ८ L °मि सवज्जियं. ९ L भणियं गंतव्वं. १० C D तए कह वि. ११ L °सहस्सम°. १२ L घितूणं. १३ L हरिणीइ. १४ L वणीयपुत्त. १५ L हरिणीय. १६ L सुणिय. १७ L काहंति. १८ L भुंजामि. १९ L जहाजुत्तं. २० L वियड्ढभणिईणि साणु°. २१ L इत्थं°. २२ L कन्ने. २३ L हरिणीहिं तीए. २४ L एसघरे अत्थइ. २५ L अणन्न°. २६ A B तुब्भे आएणं कुणह वो ह रय°. २७ L रयणाइं. २८ A B किं त्थ बहु°. २९ C D जम्हा उ. ३० L °जुव्वणलावन्न°.

चिंतइ 'अवहरिऊणं आणेसु[1] धरेमि कह वि पच्छण्णं[2] ।'
तत्थुप्पण्णमई[3] सा तो भणइ तयं वणियपुत्तं ॥ १५९
'अप्पेहि नाममुद्दं खणमेक्कं जेण ईए[4] सारिच्छं ।
अण्णं[5] नियकरजोग्गं[6] मुद्दं कारेमि' तो एसो ॥ १६०
अप्पइ य निव्वियप्पो[7] सा वि तयं देइ दासचेडीए ।
हत्थम्मि ततो[8] एसा गंतूणं नम्मयं[9] भणइ ॥ १६१
'सो वीरदाससेट्ठी[10] हक्कारइ पच्चयत्थमह[11] तेण ।
एयं मुद्दारयणं पट्ठवियं तुज्झ ता एहि ॥' १६२
दट्ठूण वीरदासस्स संतियं नाममुद्दियारयणं[12] ।
तो सा वि[13] निव्वियप्पा तीए समं जाइ तत्थ गिहे ॥ १६३
अवदारेण पवेसिय छूढा[14] गुत्तम्मि भूमिहरयम्मि[15] ।
मुद्दं पि वीरदासस्स अप्पियं कुणइ पडिवत्तिं ॥ १६४
उट्ठेत्तु ततो[16] एसो सट्ठाणे जाइ तत्थ तमदट्ठुं ।
गविसइ सव्वत्तो च्चिय पुच्छंतो[17] परियणं सव्वं[18] ॥ १६५
जाव न[19] केण वि[20] सिट्ठा तीए वत्ता वि तो गवेसेइ[21] ।
उज्जाणहट्टमाइसु तत्थ वि नो[22] जाव उवलद्धा ॥ १६६
तो दुक्खपीडियंगो इमं उवायं विचिंतए[23] एसो ।
'जेणऽवहरिया बाला किं सो पयडेइ मह पुरओ ॥ १६७
ता वच्चामि इओऽहं[24] बालं पयडेइ जेण सो दुट्ठो[25] ।'
इय भावणाइ[26] भंडं घेत्तूणं[27] चलइ घरहुत्तं ॥ १६८
पत्तो भरुयच्छपुरे संजात्तियवणियसंकुले रम्मे ।
तत्थऽत्थि तस्स मित्तो जिणदेवो नाम वरसड्ढो[28] ॥ १६९
तस्सऽक्खइ सो सव्वं भणिओ – 'तं जाहि तत्थ[29] वरमित्त ।'
कत्थ वि गवेसिऊणं तं बालं एत्थ[30] आणेही ॥ १७०
सो वि तयं पडिवज्जिय सामग्गिं करिय जाइ तत्थेव ।
जाणाविया य वत्ता नम्मयपुरिसव्वसयणाणं[31] ॥ १७१

---

१ L आणिसु. २ L पच्छन्नं. ३ L तत्थुप्पन्न°. ४ L °ण एइ सा°. ५ L अन्नं. ६ L °जुग्गं. ७ L निव्वियप्पा. ८ L तओ. ९ L नम्मणो भ°. १० L °सिट्ठी. ११ L पच्छइत्थ°. १२ L °मुद्दया°. १३ A B सा य नि°. १४ L छुद्धा. १५ L °घरम्मि. १६ L तओ. १७ L च्चिय पुच्छइ. १८ C D °यणं सयलं. १९ A B जा न वि केण. २० L केणइ सि°. २१ L वि सा गवेसइ. २२ L वि तो. २३ L °यं चिंतए. २४ A B तओऽहं. २५ L दुट्ठो. २६ L भावणाए. २७ L गिण्हूणं. २८ L °सड्ढो. २९ L जाहि वर°. ३० L इत्थ. ३१ L °पुरि सोव्व.

सोऊण तयं ताणि[1] वि दुक्खयाइं हवंति अइकलुणं।
एत्तो य नम्मयाए जं वित्तं तं निसामेह ॥ १७२
नाऊण वीरदासं गयं तओ हरिणियाएँ सा वुत्ता।
'भद्दे! कुण वेसत्तं[2] माणसु विविहाइँ सोक्खाइं[3] ॥ १७३
सद्दरसरूवगंधे फासे अणुहवसु मणहरे निच्चं।
मह घरवत्ता एसा सव्वा वि हु तुज्झतणिय[4]' त्ति ॥ १७४
तं[5] सोउं नम्मयसुंदरी वि[6] विहुणित्तु करयले दो वि।
पभणइ – 'मा भणँ भद्दे! कुलसीलविदूसणं वयणं[7] ॥' १७५
तो रुसिऊणं हरिणी ताडावइ तं कसप्पहारेहिं[8]।
फुल्लियकिंसुयसरिसा खणेण जाया तओ एसा ॥ १७६
'अज्ज वि न किंचि नट्ठं पडिवज्जसु मज्झ संतियं वयणं।'
इय मेहरीएँ भणीएँ भणइ इमा[9] – 'कुणसु जं मुणसि ॥' १७७
गाढयरं रुसिऊणं जाव पवत्तेइ[10] तिक्खदुक्खाइं।
सा वेसा ता इयरी[11] सुमरइ परमिट्ठिवरमंतं ॥ १७८
तस्स पभावेण तओ तडे[12] त्ति पाणेहिँ हरिणिया[13] मुक्का।
रण्णो निवेइयम्मी[14] तम्मरणे भणइ तो राया ॥ १७९
'किंचि मरूवं अण्णं[15] तट्ठाणे ठवेह[16] गुणगणसमग्गं।
भो मंति! ममाऽऽणत्ति(त्तिं)[17] सिग्घं संपाडसु इमं'ति ॥ १८०
नरवइणो[18] आणाए मंती जा[19] तत्थ जाइ ता सहसा[20]।
दट्ठूण नम्मयं सो अच्चंतं हरिसिओ [21]चित्ते ॥ १८१
जंपइ – 'मेहरियपयं भद्दे! तुह देमि रायवयणेणं।'
सा[22] वि तयं पडिवज्जइ[23] परिभाविय निग्गमोवायं ॥ १८२
ठविऊण मेहरिं तं मंती वि हु जाइ निययठाणम्मि।
सा वि हु हरिणीदव्वं वेसाणं देइ परितुट्ठा ॥ १८३
तं कहियं केणावि हु रण्णो[24] तेणावि जंपियं एयं।
'आणेह तयं एत्थं' जंपाणं जाइ तो रम्मं ॥ १८४

१ L ताण. २ L भद्देण कुण देसत्तं. ३ C D विविहाणि सोक्खाणि. L विवहाइं सुक्खाइं ४ L °तणय त्ति. ५ L ता सोउं. ६ L °सुंदरी त्ति वि. ७ L भणइ भद्दे. ८ L ताडावइ कसपहारेहिं. ९ L भणइ मा कुण° १० L पयत्तेइ. ११ L वेसा भा महुरी. १२ L तओ झड त्ति. १३ L हरिणीया. १४ L रन्नो निवेवियम्मी. १५ L अन्नं. १६ C D ठवसु. १७ L मंति समाणत्तं. १८ L जक्खइणो. १९ L मंती ता तत्थ. २० L सहस्सा. २१ L °सिओ दित्तो. २२ L भा वि २३ L पडिवजिय. २४ L रन्नो.

आरोविऊण तम्मिं[1] जा पुरिसा निंति नयरमज्झेणं ।
ता चिंतइ 'मह सीलं को खंडइ जीवमाणीए ॥ १८५

को पुण इत्थ उवाओ' चिंतंती नियइ[2] एगठाणम्मि ।
अइकुहियदुब्भिगंधं[3] पवहंतं गेहनिद्धवणं[4] ॥ १८६

तं पेच्छिऊण [5]जंपइ – 'भो भो ! बाढं तिसाइया अहयं[6] ।'
तो मेल्लावइ[7] जाणं जाणवई दरिसिउं[8] विणयं[9] ॥ १८७

जा आणंति जलं ते ताव इमा उत्तरित्तु जाणाओ ।
सव्वंगियमप्पाणं चिक्खिल्लेणं[10] विलिंपेइ ॥ १८८

पियइ तयं दुग्गंधं[11] नीरं अमयं[12] ति भाणिउं बाला ।
लोलए महीइ पंसुं[13] खिवइ सिरे देइ अक्कोसे[14] ॥ १८९

पभणइ य – 'अहो[15] लोया ! अहयं इंदाणिया[16] ममं नियइ[17] ।'
गायइ नच्चइ रोवइ भयभीया सीलभंगस्स ॥ १९०

पुरिसेहिं तयं सिट्ठं निवस्स सो भणिउं[18] गहं लग्गं ।
पेसेइ मंत-तंताइवाइणो[19] तेहिं किरियाए ॥ १९१

आढत्ताए भाले चढाविउं[20] लोयणे फुरुफुरंती[21] ।
अक्कोसिऊणं[22] गाढं अहिययरगहं पदंसेइ ॥ १९२

तो तेहिं परिचत्ता हिंडइ नयरस्स मज्झयारम्मि ।
डिंभेहिं परियरिया हम्मंती कट्ठलिट्ठुहिं[23] ॥ १९३

इय एवमाइ सव्वं कवडग्गहदंसणं[24] पयासेइ ।
सीलस्स रक्खणत्थं धम्मं हियएण सरमाणी ॥ १९४

अह अण्णया कयाई बहुविहलोएणं[25] परिवुडा बाला ।
निम्मल्लमालियं[26]तणू गायइ जिणरासयं रम्मं[27] ॥ १९५

तं दट्ठुं जिणदेवो पुच्छइ[28] – 'को तं गहो सि जिणभत्तो ।'
सा भणइ – 'ससागारं तेण न साहेमि नियनामं ॥' १९६

---

१ L तम्मि. २ L नियय एग°. ३ L अइकुहिए पूइगंधं. ४ L °निध्धवणं. ५ L तं कट्ठिपिण जंपइ सा भो बाढं. ६ L अहियं. ७ L तो मित्तादइ. ८ L जाणावइ हरिसिओ. ९ A B °सिउं वयणं. १० L चिक्खिलेणं. ११ L दुगंधं. १२ L A B °धं अमयं नीरं ति. १३ L लोलइ महीए एसु. १४ L अक्कोसो. १५ L यइहो. १६ L °णिय. १७ L नियहा. १८ L °स्स तो मे अयं गहं. १९ L °मंततंतावेयणो २० L चडाविउं. २१ L फुरफुरंती. २२ A B आकोसि°. २३ L लिट्ठकट्ठेहिं. २४ L सव्वं चडग्ग°. २५ A B °लोएहिं. २६ L °मालिय°. २७ A B गायइ जिणससयं धम्मं. २८ L °देवो पभणइ.

बीयम्मि दिणे उज्जाणसंमुहं जाव चल्लिया एसा।
तो डिंभाईलोगो नियत्तिउं[1] जाइ सट्ठाणे ॥ १९७
सा वि हु एगंतठिया[2] वंदइ देवे विहीए जा ताव[3]।
कत्तो वि हु जिणदेवो समागओ तो तयं दट्ठुं ॥ १९८

वंदामो[4] त्ति भणित्ता पणमइ सीसेण सा वि वरसड्ढं[5]।
नाऊणं नियचरियं अक्खइ सव्वं[6] जहावत्तं ॥ १९९
तो जंपइ जिणदेवो–'वच्छे ! तुह गविसणत्थमायाओ[7]।
भरुयच्छाओ अहयं पट्ठविओ वीरदासेण ॥ २००
जम्हा सो मई मित्तो पाणपिओ पेसिओ अहं तेण।
ता परिचयसु विसायं सव्वं पि हु सुंदरं काहं ॥ २०१
पर किंतु हट्टमग्गे घडगसहस्सं घयस्स मह तणयं[8]।
जं चिट्ठइ तं तुमए लउडपहारेहिं भेत्तव्वं[10] ॥' २०२
इय संकेयं[11] काउं दोन्नि[12] वि पविसंति नयरमज्झम्मि।
विहियं[13] च बीयदिवसे सव्वं जं मंतियं आसि ॥ २०३
तो निवई[14] हक्कारिय जिणदेवं[15] भणइ–'हा कहं तुज्झ।
हाणी महामहंता विहिया एयाए[16] पावाए ॥ २०४
ता रयणायरपारे अम्हं[17]ऽवरोहेण खिवसु एयं ति[18]।
जेणित्थं[19] अच्छंती कुणइ अणत्थंतरे बहुए ॥' २०५
आएसो[20] त्ति भणित्ता नियलाविय नेइ निययठाणम्मि[21]।
छोडित्ता ण्हावेउं[22] परिहाविय भोइयं[23] विहिणा ॥ २०६
वहणे चडाविऊणं पत्तो खेमेण पुण वि भरुयच्छे।
[24]पविसित्तु नियगेहे जाणावइ नम्मयपुरम्मि ॥ २०७
जा ते संवहिऊणं[25] चलंति ता एइ सो तयं घेत्तुं[26]।
जणयाई दट्ठूणं कंठविलग्गा रुवइ तो सा ॥ २०८

तो[27] उसभसेण-सहदेव-वीरदासाइ बंधवा सव्वे[28]।
सरिऊणं बालत्तं तीसे रोवंति[29] अइकलुणं ॥ २०९

---

१ L डिंभाइलोगो नियत्तियं. २ L हु एगंतट्ठिया. ३ L °ए ता जाव. ४ L वंदामु. ५ L °सड्ढं. ६ L सव्वं. ७ L गवेस°. ८ L महु. ९ L °स्स मर्मतणयं. १० L भित्तव्वं. ११ L संकेउं. १२ L दुन्नि. १३ A B विहिउं. १४ L निव्वई. १५ L जिणदेवो. १६ A B एयाइ. १७ L रणायरपारे अम्हु. १८ त्ति 18 not found in L. १९ L जेणत्थं. २० L आएसु. २१ L नियठाणम्मि. २२ L न्हावेउं. २३ C D भोइउं. २४ L भविसित्तु. २५ L संविहिऊणं. २६ L घित्तुं. २७ C D तो. २८ L सव्वे. २९ C D रोयंति.

पुट्ठा य तेहिँ सवं जा सा साहेइ निययवुत्तंतं ।
सुणमाणाणं दुक्खं[1] सवाण वि तक्खणं[2] जायं ॥ २१०
अह तीएँ संगमम्मी विहिया पूया जिणिंदचंदाणं ।
सम्माणिओ य संघो दिण्णाणि[3] महंतदाणाणि ॥ २११
विहियं वद्धावणयं विम्हयजणणं[4] समत्थलोयाणं ।
जिणदेवसावओ वि हु जाइ पुणो नियनयरम्मि ॥ २१२
जा नम्मयसुंदरिसंगमम्मि[5] दिवसा सुहेण वोलिंति ।
कइ वि तहिं[6] ता पत्तो विहरंतो साहुपरियरिओ ॥ २१३
मोरियवंससिरोमणिसंपइनरनाहनमियपयकमलो ।
दसपुवधरो सिरिथूलभद्दसीसो महुरवाणी[7] ॥ २१४
तियसाइवंदणिज्जो अय(इ)सयनाणेण[8] पयडियपयत्थो ।
भवारविंदभाणू सूरी सिरिअज्जहत्थि[9] त्ति ॥ २१५
तो नाऊणं सूरिं समागयं तस्स वंदणट्ठाए[10] ।
भत्तिभरनिब्भराइं सवाणि वि[11] जंति उज्जाणे ॥ २१६
वंदित्तु तओ[12] सूरिं न[13]च्चासन्नम्मि सन्निविट्ठाइं ।
सूरी वि ताण धम्मं कहेइ जिणदेसियं रम्मं[14] ॥ २१७
जह—'एत्थं संसारे सकम्मफलभोइणो[15] इमे जीवा ।
पाविंति[16] सुहं दुक्खं जं विहियं अण्णं[17]जम्मम्मि ॥' २१८
तं सुणिय वीरदासो पुच्छइ करसंपुडं सिरे काउं ।
'भयवं ! किमण्णं[18]जम्मे विहियं मह भाइधूयाए ॥ २१९
जेणं सीलजुया वि हु पत्ता एवंविहं महादुक्खं ।'
सूरी वि भणइ—'सावय ! जं पुट्ठं तं निसामेह[19]' ॥ २२०
अत्थि इह भरहवासे मज्झिमखंडम्मि पवओ विंझो ।
उत्तुंगसिहरसंचयसमाउलो खलियरविपसरो[20] ॥ २२१
तत्तो इमा पसूया महानई नम्मया जइण[21]वेगा ।
तीए य अहिट्ठाइग[22]देवी वि हु नम्मया अत्थि ॥ २२२

---

१ L °माणाणं सव्वाण. २ C D तक्खणे. ३ L दिन्नाणि. ४ L विम्हयहियं. ५ L °संगमेण. ६ L वि यहि तो पत्तो. ७ This verse does not occur in A B C D. ८ A B °ज्जो चउविहमरमाणपयडिय°. C D °ज्जो दसपुव्वपगासपयडिय°. ९ L °अज्जसुहत्थि. १० L °णठाए. ११ A B सव्वाइं जंति. L सव्वाण वि. १२ L तउ. १३ L तचास° १४ L धम्मं. १५ L °भोयणो. १६ L पावंति. १७ L °अन्नज°. १८ L किमन्न°. १९ A B निसामेह. २० L °समायतो मोखलियरविपसरो. २१ L जयण°. २२ L °ट्ठायग°.

सा मिच्छत्तीवहया नम्मयतडसंठियं महासत्तं ।
धम्मरुईअणगारं दट्ठूणं कुणइ उवसग्गे ॥ २२३

नाणाविहे सुघोरे निच्चलचित्तं मुणिं मुणेऊण ।
उवसंता संजाया सम्मत्तधरा ततो[1] चविउं ॥ २२४

एसा हु[2] नम्मयासुंदरि त्ति जाया सुया उ तुम्हाणं ।
पुव्वभवब्भासेण य एईए नम्मया इट्ठा ॥ २२५

जं तइया[3] सो साहू खलीकओ दुट्ठचित्तजुत्ताए[4] ।
तं मुनिकाइयकम्मं भुत्तं एयाएँ[5] दुव्विसहं ॥' २२६

तो[6] सोउं नियचरियं[7] संजायं तीएँ जाइसरणं तु ।
संवेगगयाएँ[8] तओ गहिया दिक्खा गुरुसमीवे ॥ २२७

दुक्करतवनिरयाए ओहिण्णाणं[9] इमीएँ उप्पण्णं[10] ।
तत्तो पवत्तिणित्ते[11] ठविया सूरीहिँ जोग्ग त्ति[12] ॥ २२८

विहरंती य कमेणं[13] संपत्ता कूवचंद्रनगरम्मि[14] ।
रिसिदत्ताए गेहे वसहिं मग्गित्तु उत्तरिया ॥ २२९

बहुसाहुणीहिँ[15] सहिया कहइ य धम्मं जिणिंदपण्णत्तं[16] ।
सुणइ महेसरदत्तो रिसिदत्तासंजुओ निच्चं ॥ २३०

अह अण्णम्मि[17] दिणम्मी संवेगत्थं इमस्स सा गुणइ ।
सरमंडलं असेसं जहा इमेयारिससरेण ॥ २३१

होइ नरो इयवन्नो तहा इमेयारिसेण इयवरिसो[18] ।
एवंविहेणं[19] य पुणो इयंआऊ[20] होइ अवियप्पो ॥ २३२

एवंविहसद्देणं होइ मसो गुज्झदेसभायम्मि ।
एवं विहेण य पुणो रेहा ऊर(रु)म्मि संभवइ ॥ २३३

एमाई अन्नं पि हु सव्वं सरलक्खणं सुणेऊण ।
सो हु महेसरदत्तो चित्तम्मि विभावए एवं ॥ २३४

'नूणं मह दइयाए सरलक्खणजाणियाएँ आइट्ठो[21] ।
गुज्झपएसम्मि मसो रेहा वि य तस्स[22] पुरिसस्स ॥' २३५

१ L °धरी तओ. २ L एसा उ. ३ L तईया. ४ L °कओ पुढचि°. ५ L एयाइ. ६ L तं सोउं. ७ L °चरिउं. ८ L °गयाइ. ९ L ओहिनाणं. १० L उप्पन्नं. ११ L पवित्तणित्ते. १२ L जोग त्ति. १३ L °रंती कम्मेणं. १४ L कूवचंद्रनयरम्मि. १५ A B °साहुणीए. १६ L °पन्नतं. १७ L अन्नम्मि. १८ L इयसरिसो. १९ L °विहे य. २० L इयाआऊ. २१ L आयट्ठो. २२ L तस.

तो विलविउं[1] पयत्तो – 'हा हा अइनिग्घिणो अहं पावो[2] ।
कूरो अणज्जचरिओ अवियारियकज्जकारि त्ति ॥ २३६
जेण मए सा बाला सरलक्खणजाणिया अरण्णम्मि[3] ।
एगागिणी विमुक्का ईसावसविनडियमणेणं[4] ॥ २३७
करपत्तं वररयणं हारवियं निच्छयं अपुण्णेणं[5] ।
मरणेण विणा सुद्धी नत्थि महं किं च[6] बहुएण ॥' २३८
इय विलवंतं सोउं भणइ इमा नम्मया – 'अहं सा उं[7] ।'
कहइ य जं जहवत्तं[8] नीसेसं अप्पणो चरियं ॥ २३९
'तो[9] संपइ मह भाया तुमं अओ कुणसु संजमं विउलं ।'
सो वि तयं सोऊणं खामइ परमेण विणएण ॥ २४०
'खमसु तयं जं तइया अइनिद्दयकूरचित्तजुत्तेण ।
घोरम्मि दुहसमुद्दे पक्खित्ता सुद्धसीला वि ॥' २४१
तो भणइ नम्मयासुंदरी वि – 'संतप्प मा तुमं एवं ।
अणुभवियव्वे कम्मे निमित्तमित्तं तुमं जाओ ॥' २४२
जंपइ तओ महेसरदत्तो – 'गिण्हामि[10] संजमं इण्हि[11] ।
नीसेसकम्मदलणं आगच्छइ को वि जइ सूरी ॥' २४३
एत्थंतरम्मि पत्तो अज्जसुहत्थीगुरू तओ एसो ।
तस्स सयासे गिण्हइ[12] रिसिदत्तासंजुओ दिक्खं ॥ २४४
काऊण तवं दोण्णि वि पवर[13]विमाणम्मि सुरवरा जाया ।
तत्तो वि चुया कमसो मोक्खं[14] जाहिंति गयदुक्खं ॥ २४५
मयहरिया वि हु[15] निययं जाणित्ता आउयस्स[16] पज्जंतं ।
विहियं विहिणाऽणसणं तियसो तियसालये[17] जाया ॥ २४६
तत्तो चविउं होही अवरविदेहे मणोहरो नाम ।
रायसुओ गुणकलिओ मोत्तुं[18] रज्जं तहिं विउलं ॥ २४७
लद्धूण संजमसिरिं उप्पाडित्ता य केवलं नाणं ।
संबोहिऊण भविए गच्छिस्सइ[19] सासयं ठाणं ॥ २४८

१ L सो विलविय. २ A B °णो महापावो. ३ L अरन्नम्मि. ४ L °मणीय°. ५ L निच्छयं अपुन्नेणं. ६ A B किं तु बहु°. C D किं व बहु°. ७ L °या असेसाओ. ८ L य जं जं वत्तं. ९ C D तो. १० L गिन्हामि. ११ L इन्हिं. १२ L गिन्हइ. १३ L सुवि वि वारविमा°. १४ L मुक्खं. १५ L वि हु निवं नियर्य. १६ L आऊयस्स. १७ L °लाऊए. १८ L भुत्तं. १९ L भव्वे गच्छिसइ.

इय पवरसईए नम्मयासुंदरीए
चरियमइपसत्थं कारयं निव्वुईए ।
हरिजणयसुहिंडीमज्झयाराउ किंची
*लिहियमणुगुणाणं देउ सोक्खं[1] जणाणं ॥ २४९

॥ इति[2] नर्मदासुंदरीकथानकं समाप्तमिति[3] ॥ †

---

१ L सुक्खं. २ इति is not found in L. ३ L °नकं सम्मत्तं० * In the margin of L उद्धरितम् is written as a gloss on लिहियम्. † Following words in different handwritting are written in L at the end नर्मदासुंदरीकथा श्रीस्तम्भतीर्थभाण्डागारे मुक्ता मु. मोहनसागरसौभाग्यसागराभ्याम् सं. १७०५ वर्षे ॥



जिणप्पहसूरिरइय

नमयासुंदरिसंधि

अज्ज वि जस्स पहावो वियलियपावो य अखलियं[1]पयावो ।
तं वद्धमाणतित्थं नंदउ भवजलहिबोहित्थं ॥ १

❀ ❀ ❀

पणमिवि पणइंदह वीरजिणिंदह चरणकमलु सिवलच्छिकुलु ।
सिरिनमयासुंदरि गुणजलसुरसरि किंपि थुणिवि लिउँ जम्मफलु ॥ २

[१]

सिरिवद्धमाणु पुरु अत्थि नयरु तहिँ संपइ नरवइ धम्मपवरु । १
तहिँ वसइ सुसावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाहवयणु । २
तब्भज्जवीरमइकुक्खिजाय दो पवरपुत्त तह इक धूअ । ३
सहदेव-वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुणगणपहाण । ४
नहु देइ सिट्ठि मिच्छत्तिआणं[2] रिसिदत्त इब्भपुत्ताइयाण । ५
अह कूवचंदनयरागएण परिणीअ कवडवरसावएण । ६
वणिउत्तरुद्ददत्ताभिहेण तहिँ पत्त चत्तधम्मा कमेण । ७
अम्मापिईहिँ परिवज्जिआइ हुउ पुत्तु महेसरदत्तु ताइ । ८
पुरि वद्धमाणि सहदेवघरिणिं[3] सुंदरि नमयानइन्हाणकरणि । ९
उप्पन्नु[4] मणो[र]हु पिअयमेण गन्तूण तत्थ पूरिउं[5] कमेण । १०
गब्भाणुभावि तहिँ रहिउं[6] चित्तु सहदेविहिँ नमयापुरु सवित्तु । ११
तहिँ कारिउ जिणचेइउँ[7] पवित्तु मिच्छत्तरायजयपत्तु पत्त । १२
अह नमयासुंदरि सुंदरीइ धूआ पसूअ गुणसुंदरीअ(इ) । १३
लावन्नरूवनिरुपमकलाहिँ तहिँ वड्ढइ नमया निम्मलाहिँ । १४
पिअमाइपमुहु सयलु वि कुडुंबु आणाविउ तहिँ पुरि निव्विलम्बु । १५
उच्छाहिउ रिसिदत्ताइ पुत्तु ववसाइ महेसरदत्तु पत्तु । १६
आवज्जिउं[8] गुणिहिँ सुसावयत्तु पडिवज्जिउं[9] रंजिउ ताहँ चित्तु । १७
नमया परिणीअ महेसरेण तउ कूवचंदि पहुतउ महेण । १८
रिसिदत्त तीइ कय पगच्चित्त[10] जिणनाहधम्मि सासुरयजुत्त । १९
आणंदिउ सयलु वि नयरलोगु नम्मयगुणेहिँ तह सयलवग्गु । २०
ओलोअणि अह निअमुहु पमत्त दप्पणि पिक्खवि वक्खित्तचित्त । २१
तंबोलपिक्क तिणि मुक्क जाव अह जंतह मुणिसिरि पडिअं[11] ताव । २२

The original readings of the Ms. are noted here:—१ अक्खलिय. २ मिच्छत्ती-आण. ३ °घरणि. ४ उपन्नु. ५ पूरीउ. ६ रहीउ. ७ °चेईउ. ८ आवज्जीउ. ९ °वज्जीउ. १० °चित्तु. ११ पडीअ.

मुणि अक्खइ "कुणइँ जि मुणिवराण आसायण होइ विओगु ताण"। २३
इअ सुणिवि झत्ति उवरिमखणाउ उत्तरिवि साहु खामइ पमाउ। २४
सा नमिवि भणइ "तुम्हि खमनिहाण पहणंतथुणंतह दयपहाण। २५
सावस्स अणुग्गहु मह करेह अवराहु एकु मुणिवर! खमेह"। २६
मुणि भणइ "भावि पियमविओगु निअनिव(चि)उपुव्वकम्मिण अभग्गु। २७
मइँ जाणिउ नाणिण कहिउ तुज्झ नहु साबु एहु मा वच्छि! मुज्झ"। २८

॥ घत्ता ॥

इअँ मुणिपहुवयणिहिँ अमिअसमाणिहिँ अप्पवुकर्खसंवेगजुयँ।
पिअयमि आसासिअ सीलि पसंसिअ करइ धम्मु निम्मलचरिय॥ २९

[२]

अन्नया रुद्ददत्तङ्गओ चल्लए जवणदीवम्मि बहुदव्वअज्जणकए। १
पोअवणिजेण वच्चंतु मुकलावए सयणवग्गं तहिँ नम्मयं ठावए। २
कह वि नहु ठाइ सह चलइ नमयासई जा चलइ पवहणं कोइ ता गायई। ३
सुणिवि सरलक्खणं कहइ पइअग्गए नम्मया "गाइ जो पुरिसु सो नज्जए। ४
पिङ्गकेसो अ बत्तीसवरिसो इमो पिहुलवच्छत्थलो सामलो सकमो"। ५
इय सुणिवि पियअमो[10] चिन्तए दुट्ठमा जा इमं मुणइ सा नूणमसई इमा। ६
इत्तियं कालमेसा मए जाणिआ साविआ सीलविमल त्ति सम्माणिआ। ७
कुलकलङ्कस्स हेउ त्ति मारेमि वा तिक्खसत्थेण जलहिम्मि घल्लेमि वा। ८
अलिअकुविअप्पपूरिअमणो जा गओ रक्खसद्दीवु सहस त्ति ता आगओ। ९
उत्तरिउ तत्थ पाणीअइंधणकए नम्मयासहिउ सो दीवु अवलोअए। १०
ताहँ परिस्सन्त सरवरह पालिं गया निद्दहेउं पयं पुच्छए नम्मया। ११
सो वि छउमणो भणइ विस्सम पिए[11] तरुतले सुअई[12] जा ता सणियमुट्ठए। १२
सुत्तयं नम्मयं मुत्तु निठुरु मणे झत्ति संपत्तु मायानिही पवहणे। १३
पुट्ठु परिवारि सो कहइ रोअन्तओ "भक्खिआ[13] रक्खसेणं पिआ हा हओ। १४
एअठाणाउ चालेह लहु पवहणं जा कुणइ रक्खसो तुम्ह नहु भक्खणं"। १५
इअ सुणिवि तेहिँ भीएहिँ संचारिअं पवहणं जवणदीवम्मि तं पत्तयं। १६
तत्थ विक्किणिवि पणिअं[14] सलाभो गओ निअपुरं कहइ अम्मापिऊणं तओ। १७
रक्खसोवद्दवं नम्मयाए दुहं पुण वि परिणाविओ भुंजए सो सुहं। १८
जग्गए नम्मया जाव इत्थन्तरे पिच्छए नेव तहिँ पिअयमं परिसरे। १९
विलवए "नाह हा कंत तं कहिँ गओ असरणं मं विमुत्तूण अइनिद्दओ। २०
वीससि[15]अघायमहदावपज्जालणं सुगुरुआसायणादेवघणभक्खणं। २१
पुव्वजम्मे मए किं कयं दुक्कयं अकयअवराह जं जाइ पिउ मिल्हिउं"। २२
पंच उववास काऊण अह चिन्तए सरिवि मुणिवयणु इय अप्पयं बोहए। २३
"चलइ जइ मेरु उग्गमइ पच्छिमरवी टलइ नहु पुव्वकयकम्मु पुण कहमवी"। २४

---

१ इअ. २ पीययमवीओगु. ३ नीअ°. ४ इअ. ५ अमीअ°. ६ दुःख°. ७ °जुय. ८ आसासीअ. ९ पसंसीअ. १० पीयअमो. ११ पीए. १२ सुअइ. १३ भक्खीआ. १४ पणीअं. १५ वीससीअ°.

धीरविअं[1] चित्तमह कुणइ सा पारणं   छट्ठदिणि फलिहिँ कयदेवगुरुसुमरणं । २५
लिप्पमउ बिंबु ठावेवि गुहअन्तरे   थुणइ पूयइ मणु ठवइ झाणन्तरे । २६
"रक्खसुदीवु मिल्हेवि जइ गम्मए   भरहखित्तम्मि जिणदिक्ख गिन्हिज्जए" । २७
इय विचिन्तेवि चिंधं जलहितीरए   भग्गपोअसंसूअगं उब्भए । २८
बब्बरे[2] कूलि पोएण वच्चंतओ   चिंधु पिक्खेवि पिउबन्धु ताहिँ आगओ । २९
नम्मयं पिच्छिउं पुच्छए वइअरं[3]   कहइ रोअन्त सा पिउ जं दुत्तरं । ३०

॥ घत्ता ॥

संबोहिवि जुत्तिहिँ पेमपउत्तिहिँ   वीरदासु तहुहदुहिउ ।
पवहणि आरोविउ सीलि पमोइउं[4]   बब्बरि[5] गउ नम्मयसहिउ ॥ ३१

[३]

वीरदासु ताहिँ कूलि नरेसरि   पूइउं[6] नमया ठावइ मन्द(न्दि)रि । १
हरिणी वेसा ताहिँ निवसेई   वीरपासि दासी पेसेई । २
प्रवहणप्रति दीणारसहस्सु   निवपसाइँ सा लहइ अवस्सु । ३
दासि भणइ "तुम्हि सामिणि वंछइ"   वीरु सीलँनिहि[7] ताहिँ नहि गच्छइ । ४
तत्तिउ धणु पेसइ तसु हरिथहि   हरिणि भणइ "अम्ह काजु न अत्थिहिँ । ५
वीरदासु पती कल(?) आणि"   भणितिभङ्गि तिणि आणिउ प्राणि । ६
खोभिउ हावभावविन्नाणिहिँ   न चलिउ जिम सुरगिरि बहुपवणिहिँ । ७
वीरु सदारतुट्ठु तिणि जाणिउ   कवडिहिँ हरिणी सो वक्खाणिउ । ८
व(वे)सं दासि भणइ एगन्ते   "नारि ज दिट्ठा सिट्ठिगिहन्ते । ९
भयणि सुआ वा निरुवमरूवा   सा जइ वेस तु हुइँ वसि देवा" । १०
इअ मन्तिवि तिणि मुद्दारयणु   मग्गिउ अप्पिउ सिट्ठि पहाणु । ११
पडिछंद[8]दंसणमिसि पेसिअ   मुद्दा नमया(यं) दंसिअ दासिअ । १२
"तेडइ तुम्हि पवडअहिनाणिहिँ   वीरदासु[9] आवउ अम्ह भुवणिहिँ" । १३
नाममुद्द पिक्खिवि चिंतिवि बहु   सह दासिहिँ नमया आविअ लहु । १४
हरिणीगिहपच्छलि भूमीहरि   पुव्वसिक्ख तिणि घल्लिअ निट्ठुरि । १५
मुद्दा दासिहिँ अप्पिअ वीरह   नमया दोसु देइ दुकम्मह । १६
उट्ठिउ सिट्ठि जाइ नियमंदिरि   ता नहु पिच्छइ नमयासुंदरि । १७
घरि बाहिरि पुरि न [ल]हइ सुद्धि   भरुयच्छि गउ कयबुद्धि सरिद्धि । १८
कड्ढिय भूमिगिहाउ महासइ   जाणिउ वीरु गयउ अह दंसइ । १९
सयलरिद्धि "एअह तइँ सामिणि   करउँ होसि जइ वेसा भामिणि । २०
सग्गु पहु ता [मि]ल्हि असग्गहु"   हरिणिवयणु निसुणिवि नमया लहु । २१
वज्जहय व्व भणेइ महासइ   "मह जीवन्तिअँ[10] सीलु न नस्सइ । २२
सीलु सयलदुक्खखयँकारणु[11]   सीलु सिद्धिसुरलच्छिहि कम्मणु । २३
नरयनयरगोपुरु वेसत्तणु   उत्तमनिन्दिअँ[12] तसु किं वन्नणु" । २४

---

१ धीरवीअ. २ बब्बरे. ३ वइअरं. ४ पमोईउ. ५ बब्बरि. ६ पूईउ. ७ सीछु°. ८ पडच्छंदा.° ९ वीरुदासु. १० °जीवन्तीअ. ११ °क्खयकारणु. १२ °निन्दीअ.

तं निसुणिवि तच्छइ निअअच्छइ हरिणी कणइरकम्बिहि कुट्टइ । २५
जइ जलनिहि मज्जाय मिल्हइ तह वि न नम्मय सीलह चल्लइ । २६
जइ धरणितलु जइ चायालइ तुट्टिउ पडइ गयणु जइ मूलह । २७
तिमिरु तरणि जइ ससि विसु वरिसइ तह वि न नम्मयसीलु विणस्सइ । २८
इयं अचलंती बहुहा ताडइ स(ल)ट्ठि मुट्ठि पुण लत्त न पाडइ । २९
कुणइ सई परमिट्ठिहि सरणं तसु पभावि हुइ हरिणीमरणं । ३०
जाणिउ सुद्धि नरिन्दु निवेसइ तसु पदि नमया कारणि मग्गइ । ३१
चिन्तइ "मज्झ सीलु नहु भंजइ इंतु वि" अह निवु तहिँ हक्कारइ । ३२
वेसागिहनिग्गमु सुंदर मणि जाणिवि निवपेसिअसुक्खासणि । ३३
आरोहिवि पहतडि उग्घडियइ जन्ती पडइ मज्झि सा खालइ । ३४
कद्दमि तणु लिम्पणमिसि निअहिअ गहिअ सीलरक्खणि सम्माहिअ । ३५
सहमयणिहिँ पत्तइँ फिर फाडइ वत्थमिसिणं[3] सा पमुइअ[4] हिअडइ । ३६
लंखइ धूलि भूअक्कासणि नच्चइ गायइ सतीसिरोमणि । ३७
सार मुणिवि निवु गुणिआ पेसइ पाहणलंखणि ते वि तासइ । ३८

॥ घत्ता ॥

इय गहिली जाणिय बुद्धि[5]पहाणिअ सीलसकलडिम्भिहिँ कलिअ ।
निवपमुहिहिँ लोइहिँ मुक्क अमोहिहिँ[6] भणइ थुणइ जिणु निक्कलिय ॥ ३९

[४]

सित्तह जिणदेवह कहइ वीरु नम्मयवइअरुँ[7] तसु खिवइ भारु । १
भरुअच्छह गच्छइ नियपुरम्मि जिणदेव पत्तु अह कुलि तम्मि । २
दिट्ठा नच्चन्ती[8] विगलरूव जिणदेवि पुट्ठ "तउ किं सरूव" । ३
सा भणइ "कहिसु वणचेइअम्मि" अन्नोन्न कहिउ वइअरुं[9] वणम्मि । ४
सो बुद्धि देइ सा धरइ चित्ति अह घयघड फोडइ गहिलिअ त्ति । ५
घयवणिअ कुणइ निवपासि राव जिणदेवह कहइ नरिंदु ताव । ६
"ए करइ उवद्दवु वणउ देसि पवहणि आरोहिवि लइ विदेसि" । ७
नरनाहवयणु मन्नेवि नियलि बंधिवि चडावि पवहणि विसालि । ८
भरुयछि वन्दाविवि देव नीअ जिणदेवि नमय पिअहरि विणीअ । ९
रोअन्त कहइ वुत्तन्तु सयलु पियरिहिँ पुरि उच्छवु विहिउ अतुलु । १०
नमयापुरिअ दसपुव्वधारि सिरिअज्जसुहत्थि संपत्तु सूरि । ११
वंदइ सहदेवु कुडुम्बकलिउ निसुणेवि धम्मु नमयाइ सहिउ । १२
अह वीरदासु पुच्छइ मुणिंदु "किं नम्मयाइ किउ कम्मबिन्दुँ[10] । १३
पुव्विल्लजम्मि जं दुक्खजुत्त पइचत्त जिअन्ती कह वि पत्त ।" १४
अह कहइ मुणीसरु "नम्मयाइँ[11] पयाइ विंझगिरिनिग्गयाइ । १५
अहिठायग देवय आसि एह पुव्विल्लजम्मि मिच्छत्तगेह । १६
पडिमापडिवन्नह मुणिवरस्स एगस्स नईतडि निसि ठिअस्स । १७
एए नइन्हाणह निन्दग त्ति पढमं पडिकूलुवसग्ग गत्ति[12] । १८

---

१ नमय°. २ ईय. ४ पमुईअ. ५ बुद्धि°. ६ अमोहिहिं. ७ °वईअर.
८ नच्चन्ति. ९ वईअरु. १० °बिन्दु. ११ नम्मयाई. १२ पति.

पच्छाणुकूल थीकबयमुह कय ओमहेउ देवीइ दुसह । १९
अक्खुहिउ खमावइ सा वि साहु मुणि कहिअ धम्मि तसु बोहिलाहु । २०
सा देवि चविवि सहदेवधूअ हुय नमयासुन्दरि गुणिहिँ गरुय । २१
पडिकूलिहि तसु हुउ पइविओगु अणुकूलि सीलओहणपओगु" । २२
इय निअभवु निसुणि[वि भव]विरत्त चारित्तु लेइ नम्मय पवित्त । २३
इक्कारसङ्गधरगणहरेण सा ठविय महत्तरपदि कमेण । २४
फुडअवहिनाणजुय[1] सह मुणिंदि विहरंत पत्त पुरि कूवचन्दि[2] । २५
कउ तीउ(इ) महेसरु निठ्वियप्पु सरलक्खणेण निदेइ अप्पु । २६
"जाणिज्जइ सत्थपमाणि सव्वु तउ नमया जाणिउ पुरिसरूवु । २७
मइँ तुझि निकिठ्ठि सुसील चत्त कंता तसु पावह दिक्ख जुत्त" । २८
नम्मयसुवलक्खिवि चरणु लेइ रिसिदत्तसहिउ सो तवु तवेइ । २९
आराहिवि अणसणु[3] सग्गि जंति तिन्नि वि अणुवमु सुहु अणुहवंति । ३०

॥ घत्ता ॥

कल्लाणह कुलहर होअउ जयकर नमयासुंदरिसंधि वर ।
अब्भत्थणि सङ्कह रइऔ[4] अणग्घह पढत-सुणन्तह उदयकर ॥ ३१
सरिया वि सीलजुन्हा जीसे सुकयामएण तियलोअं ।
सिंचइ बीइन्दुकल व्व नम्मया जयइ अकलङ्का ॥
तेरसँसय-अडँवीसे वरिसे सिरिजिणपहुप्पसाएणं[5] ।
एसा सन्धी विहिया जिणिन्दवयणाणुसारेणं ॥

॥ श्रीनर्मदासुन्दरीमहासतीसन्धी[ः] समाप्ता ॥

* *
*

१ जुय. २ कूविचन्दि. ३ अणुसणु. ४ रईअ. ५ °पसाएण.

प्राचीन गुजराती गद्यमय

नर्मदासुन्दरी कथा

॥ ६० ॥ हिव नर्मदासुंदरीनी कथा कहइ ॥ एइ जि जंबूद्वीपमाहि वर्धमानपुर नगर । तिहां संप्रति राजा राज करइ । तीणइ नगरि रुषभ सार्थवाह वसइ । तेहनी भार्या वीरमती । तेहनइ बि(बि) पुन(त्र) एक सहदेव १ बीजउ वीरदास २ । अनइं रुषिदत्ता एहवइ नामि पुत्री महारूपवंति यौवनावस्थाइं आवी । तेतलइ घणा महर्द्धिक व्यवहारीया मांगइ । पणि श्रेष्ठि मिथ्यात्वीनइ आपइ नही । इसइ महर्द्धिक रुद्रदत्त नामि वणिगपुत्र वाणिज्यनइ हेति रूपचंद्रपुरहूंतउ तीणइ नगरि आविउ । पणि ते कुवेरदत्त मित्रनइं घरि आवी ऊतरिओ । अनेक व्यवसाय करइ । आपणा घरनी रीतिइं तिहां रहइ । अन्यदा रुषिदत्ता सखीइं परिवरी वारणइ रमती दीठी । हिव रुद्रदत्त मित्र आगलि कहइ "ए कन्या कुमारिका छइ किंवा मांगी छइ" । तिवारइं कुवेरदत्त कहइ "ए कुमारिका छइ । पणि ए श्रेष्ठि जिनधर्म टाली अनेरा कुणहींनइं न आपइ" । तिवारइं रुद्र मिथ्यात्वीइं थकउ रुषिदत्तानइं लोभइं कपटश्राव[क] थई जैनधर्म पडिवजिउं । कांइ माया लगइं गाढाइ विवेकीना चित्त आवर्जियइ । पछइ रुषभसेन सार्थवाहि श्रावक भणी आपणी पुत्री रुषिदत्ता रुद्रदत्तनइं दीधी । तिहां पाणिग्रहण महोत्सव हूओ । केतलाएक मास तिहां अतिक्रम्या । तिसइ रुद्रदत्त ससुरानइं पूछी प्रिया सहित आपणइ नगरि आविउ । तिसइ रुद्रदत्तनउ पिता वधूनइ आगमनि महाहखि(र्खि)ओ । इम घरि रहतां रुद्रदत्ति जिनधर्म छाडिउ । रुषिदत्ताइं पणि भर्तारना संसर्ग लगइ जिनधर्म छाडिउ । क्रमिइं महेश्वरदत्त पुत्र रुषिदत्ताइं जन्मिउ । क्रमिइं सर्व कला अभ्यसी मोटउ हूओ ।

इसइ रुषिदत्तानउ वडउ बांधव सहदेव भार्या सुंदरी सहित सुखिइं रहइ छइ । एहवइ तिणि सुंदरीइं अपूर्व सउंणउं देखिउं । तेहनइ योगि आधान धरिवा लागी । क्रमिइं वृद्धि पामतइं एहवउ डोहलउ ऊपनउ । जाणइ जउ नर्मदानदी मांहि जई स्नान करउं । ए वात भर्तार आगलि कही । पछइं सहदेव संघातनी रचना करी सुंदरीनइं साथि लेई चालिउ । हिव नर्मदानइं कांठइ आवी पूजा अर्चा करी नर्मदामाहि पइसी जलक्रीडा कीधी । पछइं सहदेव व्यवसायनइ सुखिइं तिहां नगरनी स्थापना कीधी । नर्मदापुर नाम दीधउं । तिहां जिनमंदिर कराविउं । सम्यक्त्वपिंड पोषिवा भणी पछइं सघलाई व्यवहारिया आपणा नगर मूंकी तिहां आवी वस्या । इसइ पूरे दिवसे पुत्री जन्मी । पणि पुत्रजन्मनी परिइं उत्सव कीधउ । नर्मदासुंदरी ए नाम दीधउं । क्रमिइं क्रमिइं सघलीइं कला अभ्यसी यौवनवस्थाइं आवी ।

इसइ नर्मदासुंदरीनउं रूप सांभली रुषिदत्ताइं चींतविउ "जउ माहरउ पुत्र महेसरदत्त तेहनइं हेति ए नमयासुंदरी मागीइ । अथवा मुझनइं धिग् धिक्कार हुउ । जे मइ जिनधर्म छांडतइ हूं कुटुंबियइं छाडी । जे हूं पर्वतिथिना नामइं न जाणउ ते माहरा पुत्रनइं

किम देस्यइ ?" इम कहती रोवा लागी। तेतलइ रुद्रदत्त आविउ। तिणि पूछिउं "तूं असमाधि कांइ करइं ?" तिवारइं रुषिदत्ताइं सर्व वृत्तांत कहिउं। एहवइ महेश्वरदत्त पुत्र मा-बापनी वात सांभली कहिवा लागउ "तात मझनइं तिहां मोकलउ। जिम सघलाई आवर्जी माउलानी पुत्री परिणी मानइं हर्ष ऊपजावउं।" पछइं पिताइं महेसरदत्त चलाविउ। थोडे दिहाडे पंथ अवगाही नर्मदापुरि आविउ। तिहां सहदेवनइं मिलिउ। हिव महेसरदत्त तिम बोलइ तिम चालइ जिम सहदेवादिक सहू मनि चमत्कर्या। पछइं उत्संगि बइसारी कहिवा लागा "वत्स तइं अम्हारा चित्त आवर्ज्या जिम जांगली विषाइं करी साप वशि थाइ तिम अम्हे तइं वशि कीधा। तउ वत्स मांगि जि कांई मांगइ ते आपउ।" तिवारइं महेसरदत्ति नर्मदासुंदरी मांगी। पछइं माता-पिताए दीधी। तिहां महेसरदत्ति जिनधर्म पडिवजिउं। शाम-शपथ कीधा जु इणि भवि जिनधर्म टाली अवर-धर्म न करउं। पछइं महाआनंदि महोत्सवि नर्मदासुंदरीनउं पाणिग्रहण कीधउं। केतलाएक दिन तिहां रहिउ। हिव नर्मदासुंदरीइं तिम जिनधर्मना उपदेस दीधा जिम महेसरदत्त जिनधर्मनइं विषइ गाढउ निश्चल हूओ। पछइं केतलेएक दिहाडे ससुरानइं कही भार्या सहित महेश्वरदत्ति आवी मातापितानइं प्रणाम कीधउ। तिसइ रुषिदत्ता नर्मदासुंदरीनइं उत्संगि बइसारी कहइ "वत्सि तइं तिम करिवउं जिम मिथ्यात्वनउं नाम घरमां न रहइ।"

हिव महेसरदत्त नर्मदासुंदरी सुखिइं काल गमाडतां सर्व स्वजननइं मान्य हूआ। अन्यदा नर्मदासुंदरी गउखि बइठी आरीसइ आपणउ मुख जोवती, तंबोल खाती, अनेक चित्रम करती लीलालगी तंबोल वारणइ नांखिउ। इसइ महातमा, एक तलइं जातउ हूंतउ तेहनइं माथइ तंबोल पडिउ। तेतलइ महातमाइं कहिउं "इम जे रुषिनी आशातना करइ ते भर्तारनउ वियोग पामइ।" इसउं ते महातमानउ सकोपवचन साभली विषादपर नमयासुंदरी गउखिहूंती ऊतरी महातमाने पगे लागी, कहिवा लागी "हे महात्मन्! हूं वरासी जे हूं जिनधर्म जाणतीइंहूंती एवडउ अविनय कीधउ। तउ हिव तुम्हे विश्वनइं वत्सल छउ। मझ ऊपरि क्षमा करउ। तुम्हेतउ वइरीइं ऊपरि कोप न करउ। पछइं मझ ऊपरि किम करिस्यउ। तथापि मझ अभागणी ऊपरि शराप परहउ करउ।" तिसइ मुनि बोलिउ "हे वत्सि! साभलि, खेद म धरिजे। जे महातमा हुइं ते शाप अनइं अनुग्रह न करइं। पणि न जाणउं माहरा मुखहूंतउ एहवउ वचन किमहीं नीकलिउ। अथवा वली जे नींबनइं कडुअपणउ हुइ ते कोई करइ छइ सिउं ना; ते तउ स्वभावइं जि हुइ।" इम प्रतिबोधी महातमा आपणइ ठामि गयओ। नमयासुंदरी पाछी घरि आवी। सुखिइं घरि रहइ छइ।

इसइ अनेरइ दिवसि महेसरदत्त व्यवसाय भणी जवनद्वीप भणी चालिवा लागउ। तेतलइ नमयासुंदरी कहइ "स्वामी! हूं पणि साथि आविसु।" पछइं नमयासुंदरी संघाति चाली। हिव समुद्रमांहि प्रवहणि बइसी चालतां अर्धपंथ अवगाहिउ जेतलइ, तेतलइं रात्रिमइ समइ कुणही एकणि गीत गायउं। ते गीत सांभली नमयासुंदरी स्वरना लक्षण जाणती हूंती भर्तारनइं आश्चर्य ऊपजावा भणी कहिवा लागी "स्वामीन्! जे ए गीत गाइ छइ ते सामलइ वर्णि छइ। स्थूल हाथ छइं। कृश देह छइं। गुह्यप्रदेशि मश

छइ । शेष लांछन छइ । आवीस परसमउ छइ । हीयउ पिहुलउ छइ ।" इत्यादि कीना वचन सांभली महेसरदत्त मनमांहि चींतवइ "ए नमयासुंदरी कुसीलिनी संभाविवइ । अन्यथा एतली वात किम जाणइ । तउ हिव परीक्षा करउं ।" पछइं प्रभाति ते पुरुष तेडी सर्व अहिनाण जोई मनि निश्चय कीधउ "तां सही ए कुसीलिनी जि छइ । इहां संदेह कांई नहीं ।" पछइं गूढ कोप धरतउ चींतवइ "एतला दिन हूं इम जाणतउ जु ए महासती छइ । पणि तउ आज पारिखउं दीठउं । तउ हिव एहनइ समुद्रमांहि ठेली दिउं । अथवा खड्गकरी केलिनी परिइं विखंड करउं ।" इम जेतलइ चींतवइ छइ तेतलइ अकस्मात् निर्यामक कूआखंभा ऊपरि चडीनइं कहइ "अरे लोको ! प्रवहण राखउ । सिढ पाडउ । नागर मूंकउ । राक्षसउं द्वीप आविउं । जल-ईंधणनी सामग्री लिउ ।" इम कही आपणउं प्रवहण राखिउ । सर्व संग्रह कीधउं । इसइ महेसरदत्त मायालगइं गूढ कोप धरतउ नर्मदासुंदरीनइ वनमांहि लेई गयउ । अनेक तलाव देखाड्या । वली सर्व वन देखाडी संध्याइं किहां एक वननिकुंजमांहि जई सूता । तेतलइ पूर्वोपार्जित दुःकर्मलगइं नर्मदानइं निद्रा आवी । तेतलइ महेसरदत्त नमया सूती जि मूंकीनइ प्रवहणि आविउ । लोकानइं कहइ "अहो ! लोको नासउ नासउ; कांता तउ राक्षसइं खाधी । हूं नासी आविउ । तुम्हे चालउ, नहींतर राखिस आवी खासीइ ।" तिवारइं बीहता लोक प्रवहणि चडी चाल्या । पछइं महेसरदत्त चींतवइ "मइं बिन्हइ वात कीधी । दुःसीलिनी स्त्री पणि छांडी अनइं लोकनउ ई अपवाद राखिउ ।" हिव क्रमइं क्रमइं जवनद्वीप आविउ । तिहां घणउ धन उपार्जी आपणइ नगरि आविउ । अनइं प्रियानउं स्वरूप कहिउं । जु राक्षिसइं प्रिया भरखी । पछइं असमाधि करी नमियाना प्रेत कार्य कीधा । वली महेसर नवी वार परणाव्यउ ।

हिव नमयासुंदरी वनमांहि जिम सूती हूती तिम जि पुकार करती जागी । पणि आगलि भर्त्तार न देखइ । तिसइ नमया भोलपण लगइं कहइ "स्वामी ! एहवउ हासउं न कीजइ ।" तउ ही पति नावइ । तेतलइ ऊठी वनमांहि जोवा लागी । पणि भर्त्ता न देखइ । तिवारइ नमया रोवा लागी । तिणि रोवतां जे वनमांहि स्वापद छइ ते ही रोवा लागा । पछइं लताना घरमांहि रात्रिइं रही । पणि रात्र सउ वर्ष समान हुई । वली प्रभाति रुदन करती, वन जोवती, पांच दिन अतिक्रमावी, छट्ठइ दिनि जिहां प्रवहण हूंता तिहा आवी । देखइ तउ आगलि प्रवहण नहीं । तिवारइं गाढेरी निरासथकी रुदन करती ते मुनिनउ वचन चीति आविउ । पछइं थोडेरी असमाधि करिवा लागी । इम आपणउ पूर्वोपार्जित कर्म भोगवती, आत्मानइं प्रतिबोध देती, महासतीइं सरोवरि स्नान करी, वनमांहि देव वांदी, फलाहार करीनइं तापसी हुई । पछइं गुफामांहि माटीनी प्रतिमा करी, मननइं स्थिरता भणी फल-फूले पूजी, आगलि बइठी सिझाय करइ । एकाग्रचित्त दीक्षाना ध्याननइं तत्पर हूंती रहइ ।

इसइ ते नमयानउ पीतरियउ वीरदास बब्बरकूल भणी जातउ हूंतउ तीणइ प्रदेशि जिहां गुफामांहि स्वामीनी स्तुति करइ छइ तिहां आविउ । पछइं ते स्तुति सांभली वीरदास गुफामांहि पइठउ । तिसइ साश्चर्यरूपि वीरदासइं भत्रीजी देखी कंठि आलिंगी शोक

अनइं हर्ष धरतउ पूछिवा लागउ "हे वत्सि ! तूं एकाकिनी इहां कांई अथवा तूं किम आवी ?" इम पूछिइ हूंतइ नमयाइं आपणउ सर्व वृत्तांत कहिउं। पछइं वीरदास देवनइं उलंभा देतउ हूंतउ नर्मदासुंदरीनइं सैघाति लेई बब्बरकूल आविउ। तिसइ नमयासुंदरी ऊतारइं मूंकी पछइं वीरदास भेटि लेई राजानइं मिलिवा गयउ। राजाइं बहुमान देई अर्थदाण मूंकिउं। पछइं वीरदास क्रियाणा वेचिवा लागउ।

हिव तिहां हरिणी नामि पणांगना वसइ। पणि ते प्रवहणी लोककन्हलि सहस्र दीनार लिइ। ते लेवा भणी दासी एक वीरदासनइं उतारइ मोकली। तिणि दासीइं नमयासुंदरी दीठी रूपवंति। तिणि जई हरिणीनइ कहिउं "जु एहवउं रूप पृथ्वीमांहि नथी। ए जउ ताहरइ घरि आवइ तउ जाणे कल्पवेलि आवी। तीणइं द्रव्यनी कोडि ऊपार्जिइ।" पछइं हरिणिइं धन मांगिवानइ मिसि तेह वीरदासनउ चरित्र जोवा भणी वली तेह जि मोकली। तिसइ वीरदासि सहस दीनार दीधा। तिसइ दासी पाछी आवी हरिणिनइं कहइ "न जाणियइ वीरदासनी बहिन छइ, अथवा सगी छइ, किंवा दासी छइ। ते जाणियइ नहीं।" तिवारइं हरणी तेहनइ घरि आवी। पछइं वीरदासनइं बलात्कारि आपणइ घरि लेई गई। मिषांतर करी वीरदास भोलवी हाथनी वींटी नामांकित लीधी। ते लेई वली हरिणीइं दासी हाथि नमयासुंदरीकन्हइं मोकली। नामांकित मुद्रा देखाडी नमयानइं घरि आणी भउंहरइ लेई घाली। मुद्रिका वलि पाछी आपी। पछइं अखंडव्रत वीरदास पाछउ घरि आविउ। जइ ऊतारइ जोवइ तउ नमयानइं न देखइ। पछइं सर्व नगर जोतउ जोतउ सासंक हरिणीनइं घरि आविउ; पूछइ जु "नमिया किहां ?" तिवारइं ते कपटपंडिता न मानइ; कहइ "हूं स्यउं जाणउ।" तिसइ वीरदास चींतवइ "एक कारेली अनइं नींबि चडी। तिम एक वेश्या अनइं राजानउ बहुमान। तउ ए साथि न पहुचियइ। एक परदेस; बीजउं जीणइ गोपवी ते किम आपिस्यइ।" इम घणी असमाधि कीधी। पछइं आपणी वस्तु लेई घणउ लाभ ऊपार्जी पाछउ चालिउ। भरूअचि नगरि आविउ। तिहा आव्या पछइं परममित्र परमश्रावक जिणदास ते आगलि सर्व वात कही। नर्मदासुंदरीनी सुद्धिनइं हेति बब्बरकूल भणी आपणइ ठामि मित्र मोकलिओ।

हिव हिरणीइं वीरदास चाल्या पछइं नमयासुंदरीनइं कहिउं "हे सुभगि ! सौभाग्यनउ निधान वेश्यापणउ आदरि। यौवननउं फल लिइ।" ए वचन जेतलइ हरिणी कहिवा लागी तेतलइ नमयाइं कान ढांकी नइं कहिउं "ए वात आज पछइ म कहिसि। हूं आजन्म शीलनी खंडना नहीं करउं।" तिवारइं वेश्या कहइ "अम्हारउ जन्म सफल, जे आपणी इच्छाइं विलसउं, भोग भोगवउं।" तेतलइ नर्मदा कहइ "इणइं सुखिइं संसारना सुख कउण हारवइ। जां मझनइं जीवितव्य तां माहरउ शीलरत्न कुण हरी सकइ। कदापि मेरु पर्वतनी चूलिका चालइ अनइं कदापि पश्चिमइं सूर्य ऊगइ; पणि माहरउ शीलभंग न करउं।" पछइं हरिणीइं अनेक दीन बोल बोल्या लोभ देखाडिउ। पणि तउ ही न मानइ। तिवारइं हरणीइं पांचसइ नाडी नमयानइं देवरावी। पणि लगारइ ते सतीनउं [मन ?] शीलनइं प्रमाणि खुभिउ नहीं। अनइ शील पणि राखिउं।

तिसइ नमयानइं मारतां शीलनइं प्रमाणिइ हरिणी वेश्या मुई। पछइं बीजी वेश्या भयभीत हूंती पगे लागी। नमयानइं मनावइं "तूं अम्हारइ स्वामिनी था। प्रभुत्वपणइं आपणी इच्छाइं शील पालि।" पछइं नमयासुंदरीइं ते वचन मानिउं। इम करतां प्रधानि नमया-सुंदरीनउं रूप देखी प्रार्थना कीधी। पणि मानइ नहीं। तिवारइं प्रधानि राजा आगलि जई नमयाना रूपनी वर्णना कीधी। तेतलइ राजाइं नमयासुंदरी भणी पालखी मोकली। तिसइ राजाने सेवके जई महाविस्तारि नर्मदासुदरी सुखासनि बइसारी, माथइ छत्र धरी चलावी। एहवइ नमयासुदरी शीलनी रक्षा भणी गहिली हुई। मोटउ एक नगरनउ खाल तेहमांहि ऊलली पडी। लोकानइ कहइ "अहो लोको! माहरइ शरीरि यक्षकर्दम कहतां सूकडि कपूर केसर कस्तूरी लागी छइ।" इम कहती सघलाई लोकानइं कादमसिउं छांटइ अनइ आपणा वस्त्र फाडइ। वली लोक साम्ही धूलि नांखइ। इसइ प्रधानि राजानइं कहिउं "स्वामी! न जाणियइ छलभेद हूओ किंवा दृष्टि लागी; तिम ते गहिली थई।" तेतलइ राजाइं मंत्रवादी तेड्या। जेतलइ मंत्र गुणी गुणी सरिसव नांखइ तेतलइ नमयासुंदरी ते साम्हा पाषाण नाखइ। तिम ते मंत्रवादी सर्व नासी गया। हिव नगरमांहि गहिलीनी परिइं फिरइ। वीतरागना गीत गावइ।

इसइ ते जिनदास श्रावक भरूवछहूंतउ आविउ। तीणइ ते नमियासुंदरीनइं मुखि वीतरागना गीत सांभल्या। तिवारइं जिनदास आगलि आवी दयापरहूंतउ कहिवा लागउ "हे सुभगि! तुझनइं ए स्यउं थयउं? तूं परम श्राविका जैन भक्ति दीसइ छइ।" तिवारइं नमिया कहइ "तूं जउ जैन श्रावक छइ तउ माहरउ स्वरूप एकांति पूछे; पणि लोक देखतां म पूछे।" हिव अन्यदा गीत गावती वनमांहि जई नमिया देव वांदी गीत गावइ छइ। तिसइ जिनदास पणि केडइ लागउ वनमांहि गयउ। तिहां तेहनइ 'वांदू' इम कही जिनदास पूछिवा लागउ "तूं कउणि?" तिवारइं नमयाइ आपणउं सर्व वृत्तात श्रावक आगलि कहिउं। तिवारइं जिनदास कहइ "वत्सि! ताहरी मोटी वात। जिम तइं शील राखिउ तिम बीजउं कोई न राखइ। हिव हूं ताहरइ कीधइ भरूवछहूंतउ आविउ छउं। वीरदास मित्रइं हूं मोकलिउ। तउ हिव तूं खेद म धरिसि। जिम रूडउ हुस्यइ तिम हूं करिसु। पणि आज पछइं राजमार्गि जेतला पाणीना घडा आवइ तेतला तूं भांजे।" इम संकेत करी बेऊं नगरमांहि आव्या। पछइं नमया पाषाण नाखइ, हाडला फोडइ, लोकनइं संतावइ। इसइ नगरनउ राजा नीकलिउ। तिणि ते गहिली दीठी। तिसइ जिनदास आगलि ऊभओ हूंतउ तेहनइं कहिउं "जउ इणि इ स्त्रीइं नगर सघलउ वानरानी परिइं संताविउ। हिव तिम करि जिम प्रवहणि बइसारी एहनइं परद्वीपि लेई जा; जिम व्याधि टूटइ।" तिसइ जिनदासि वचन पडिवजिउं। मनमांहि हर्खिउ। पछइं लोहार तेडी नमयानइं पगि अठीलि घाती प्रवहणि बइसारी, सर्व वाखर प्रवहण भरी, अनेक वस्त्र वाना घाती, पछइं आप प्रवहणि बइसी चालिउ। मार्गि जातां अठीलि भांजी। वस्त्र आभरण पहिरावी नर्मदापुरि आणी। तिसइ पिताइं पुत्री आवी जाणी पिता सामुहउ आविउ। पछइं नमयासुंदरी माता-पितानइं पगि लागी। तारस्वरि रुदन करिवा लागी। तिसइ ऋषभसेनादिक कहिवा लागा "भलउ हुउं जे अम्हे बेटी

जीवती दीठी। तउ आज पुत्रीनइं नवउ जन्म हूओ।" तेह भणी महामहोत्सव करिवा लाग्या। जैनप्रासादि पूजापूर्वक साधर्मिक वात्सल्यादिक कीधा। केतलाएक दिन साधर्मि जिनदास तिहां रही वीरदासनइं पूछी भरूयछ आविउ।

इसइ एकदा आर्य सुहस्तिसूरि दशपूर्वधर विहार करता नर्मदापुरि आव्या। तिवारइं नमयासुंदरी मा-बाप पीतरिआ सहित आचार्य समीपि आवी प्रणाम करी आगलि बइठी। तेतल[इ] श्री सुहस्तिसूरी धर्मलाभ कही धर्मोपदेश दीधउ। तिवार पछइं देशनानइं अंति वीरदास गुरुनइं प्रणमीनइं पूछिवा लागउ "स्वामिन्! नर्मदासुंदरीइं भवांतरि कउण कर्म उपार्जिउं जे निर्दोषइ सुसीलथकी एवडां कष्ट पाम्या?" तिवारइं भगवंत श्रुतनउ उपयोग देई पूर्वभव कहिवा लागा—"इणइं पृथ्वीपीठि वंध्यगिरि। तेहमांहि थकी नर्मदा नींकली छइ। तेहनी अधिष्ठायिका मिथ्यात्वनी देवताइं एकदा महातमा एक धर्मरुचि प्रतिमाइं रहिउ देखी घणा उपसर्ग कीधा। तउ ही धर्मरुचि महातमा ध्यान हूंतउ न चूकइ। तिसइ देवताए महातमानी क्षमा देखी प्रतिबूझीहूंती सम्यक्त्ववंति हुई। हिव ते मरी तुम्हारी पुत्री नर्मदा हुइ। अनइं पूर्विला अभ्यासलगी नर्मदाना[न]नउ डोहलउ ऊपनउ। वली जे महातमानइं उपसर्ग कीधा तेह भणी दुक्खिणी हुई।" ए वात सांभली नर्मदाइं दीक्षा लीधी। तिसइ जातीस्मरण ऊपनउं। पछइं चारित्र पालतां वली अवधिज्ञान ऊपनउं।

पछइ पवतिणिपद पामी रूपचंदपुरि आवी। पणि तप लगी कालक्रमइं कृशदेह हुई छइ। पणि तिहां कुणहीं ऊलखी नहीं। पछइं ते नर्मदासुदरी पर्व(व)तिणि महासतीने वृंदे परिवरी रुपिदत्तानइं घरि आवी धर्मलाभ कहिउ। तिसइ रुषिदत्ताइं उपाश्रय दीधउं। तिहां महासती रही। हिव धर्मनउ उपदेस महासती सदा दिइं अनइं महेसरदत्त रुषिदत्तातउ उपदेस सांभलइ। पणि कोई महासतीनइं ऊलखइ नहीं। इम अन्यदा संवेगरंग ऊपाइवा भणी महेसरदत्तनइं खरलक्षण जणाविउ। ते खरलक्षणोपदेस सांभली ते नर्मदासुंदरी चीति आवी। पछइं पश्चात्ताप करिवा लागउ "धिग् धिक्कार मझनइ, जे मइं एहवीइ सती वनमांहि मूंकी; तउ ते नमयाना कुण हाल होस्यइ।" इम आपहणी शोक करतउ देखी दया लगइं महासती कहइ "ते हूं नमयासुंदरी जे तुझ आगलि बइठी छउं।" तिवारइं महेसरदत्त चींतवइ "ए किसउं आश्चर्य। जोउ सघलइ कर्म जि प्रधान सबल जिम नचावइ तिम नाचीयइ। इहां किहनउ दोस नहीं।" पछइं ऊठी महासतीने पगे लागी, आपणउ अपराध खमावी करी, वैराग्यरंगपूरित हूंतउ श्री सुहस्तिन् आचार्य समीपि जई व्रत लीधउं। अनइं रुषिदत्ताइं पणि चारित्र लीधउं। पछइं बेहूं तप तपी चारित्र पाली स्वर्गनइं भाजन हुआ। अनइं नमयासुंदरी पणि प्रांतसमउ जाणी संलेखनापूर्वक अणसण पाली देवलोकि पुहुती। पछइं वली महाविदेहि क्षेत्रि ऊपजी दीक्षा लेई मोक्षि पहुचिस्यइ ॥ श्री ॥

॥ इति श्री शीलोपदेशमाला बालावबोधस्य वा० श्री० मेरुसुंदर०
शीलोपरि नमयासुंदरीकथा ॥ श्री ॥